



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 329]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 11, 2017/अग्रहायण 20, 1939

No. 329]

NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 11, 2017/AGRAHAYANA 20, 1939

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटन-रोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 दिसम्बर, 2017

अंतिम जांच परिणाम

विषय: कोरिया जनवादी गणराज्य, रूस, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर और ईरान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पॉलीबुटाडीन रबड़ के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच।

फा. सं. 14/40/2016-डीजीएडी.—समय-समय पर यथा-संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम भी कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथा-संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटन-रोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे एतदपश्चात नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए।

2. यतः रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. (जिसे आगे याचिकादाता, अथवा आवेदक अथवा घरेलू उद्योग भी कहा गया है) ने अधिनियम और नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) के समक्ष कोरिया जनवादी गणराज्य, रूस, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर और ईरान (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथा वहां से निर्यातित "पॉलीबुटाडीन रबड़" (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच की शुरूआत करने और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों से पाटन होने तथा संबद्ध वस्तुओं के आरोपित पाटन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होने का आरोप लगाया है तथा संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।

3. और यतः प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर जांच की शुरूआत को यथोचित सिद्ध करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित दिनांक 16 सितंबर, 2016 की अधिसूचना संख्या 14/40/2016-डीजीएडी द्वारा एक सार्वजनिक सूचना जारी करके पाटन-रोधी नियमावली के उप नियम 5 के अनुसार संबद्ध जांच की

शुरूआत की थी, ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटन-रोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

क. प्रक्रिया

4. वर्तमान जांच में अपनाई गई प्रक्रिया नीचे बताए अनुसार है:
 - (क) निर्दिष्ट प्राधिकारी को (जिसे इसके बाद में प्राधिकारी कहा गया है), नियमावली के तहत संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उद्योग के रूप में रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. (रिलायंस इंडस्ट्रीज) (जिसे इसके बाद में याचिकादाता कहा गया है) से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें कोरिया जनवादी गणराज्य, रूस, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर और ईरान (जिन्हें इसके बाद में संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पॉलीबुटाडीन रबड़ (जिसे इसके बाद में संबद्ध वस्तु अथवा पीबीआर भी कहा गया है) के कथित पाटन और परिणामतः घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में आरोप लगाया गया है।
 - (ख) दायर किए गए आवेदन की प्रारंभिक जांच से कुछ कमियों के बारे में पता चला है जिन्हें याचिकादाता के द्वारा बाद में दूर कर दिया गया था। याचिकादाता ने याचिका को ठीक कर दिया था जिस पर जांच की शुरूआत करने हेतु प्राधिकारी के द्वारा विचार किया गया था। अतः आवेदन को विधिवत लिखित प्रमाण के रूप में माना गया था।
 - (ग) जांच की शुरूआत का औचित्य सिद्ध करने के लिए याचिकादाता के द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के प्रति जांच की शुरूआत करने के लिए निर्णय लिया।
 - (घ) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के उप नियम 5 (5) के अनुसार जांच की शुरूआत करने से पूर्व आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित कोरिया गणराज्य, रूस, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर और ईरान के दूतावासों को अधिसूचित किया।
 - (इ) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के बारे में पाटन-रोधी जांच की शुरूआत करने हेतु भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित 16 सितंबर, 2016 का एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।
 - (झ) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के सभी ज्ञात आयातकों (जिनके बारे में याचिकादाता के द्वारा ब्यौरे उपलब्ध कराए गए थे) और उद्योग संघों को सार्वजनिक नोटिस की प्रति भेजी थी और उनसे अनुरोध किया गया था कि वे पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार लिखित में अपने विचारों से अवगत कराएं।
 - (झ) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के सभी ज्ञात आयातकों को सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति भी भेजी थी और उन्हें पत्र प्राप्त होने के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचार देने की सलाह दी गई।
 - (ज) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार कोरिया गणराज्य, रूस दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर के भारत में स्थित दूतावासों और ज्ञात निर्यातकों को आवेदन पत्र की अगोपनीय वृत्तांत की एक प्रति उपलब्ध कराई गई थी। आवेदन पत्र की प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी उनके अनुरोध पर उपलब्ध कराई गई थी।
 - (झ) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में निम्नलिखित निर्यातकों को संगत सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:
 - i. मिकेलिन
 - ii. लान्सैस ए. जी.
 - iii. वर्सालिस
 - iv. सिंथस करालुपी
 - v. ट्रिंसियो/स्टाइरन
 - vi. लान्सैस एलेस्टॉमर्स
 - vii. कुम्हो पैट्रोकेमिकल्स

- viii. एलजी केम
- ix. निक्षनेकामक्षनेफटाखिम
- x. सिबुर
- xi. इफ्रेमोव सिथेटिक रबड़
- xii. फायस्टोन पॉलीमर्स
- xiii. अमेरिकन सिथेटिक रबड़ कं.
- xiv. लान्सैस कारपोरेशन
- xv. गुडईयर टायर एंड रबड़ कं.
- xvi. डायनासोल एलेस्टार्मर्स
- xvii. कारबोकेम
- xviii. अराक पैट्रोकेमिकल्स कंपनी
- xix. लान्सैस पीटीई लि.

(ज) जांच की शुरूआत की अधिसूचना के प्रत्युत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने उत्तर दिया:

- क. पीजेएससी "सिबुर होलिंग" रूस
- ख. सिबुर इंटरनेशनल जीएमबीएच, ऑस्ट्रिया
- ग. एलजी केम लि., कोरिया जन गण
- घ. वोनकेम लि., कोरिया जन गण
- ड. हंसुक केमिकल्स कं. लि., कोरिया जन गण
- च. कुम्हो पैट्रोकेमिलकल कं. लि., कोरिया जन गण
- छ. पोसको देवू, सिंगापुर
- ज. पोसको देवू, कोरिया जन गण

(ट) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं से आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:

- क. जे के टायर्स इंडस्ट्रीज लि.
- ख. अपोलो टायर्स लि.
- ग. एमआरएफ लि.
- घ. सिएट लिमिटेड
- ड. बिरला टायर्स
- च. बालकृष्ण इंडस्ट्रीज लि.
- छ. गुडईयर इंडिया लिमिटेड
- ज. कांठीनेटल इंडिया लि.
- झ. योकोहामा
- ञ. मैट्रो टायर्स

- ट. रालसन टायर्स
- ठ. ट्रेडस डायरेक्ट लिमिटेड
- ड. इंडग लिमिटेड
- (ज) जांच की शुरुआत की अधिसूचना के प्रत्युत्तर में निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं (ग्राहकों) से उत्तर प्राप्त हुए हैं:
- क. सीएट लिमिटेड
 - ख. जे के टायर्स एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 - ग. एमआरएफ लिमिटेड
 - घ. अपोलो टायर्स लिमिटेड
- (ज) भारत में विचाराधीन उत्पाद के उपभोक्ताओं के निम्नलिखित ज्ञात संघों को भी जांच की शुरुआत की अधिसूचना की प्रति भेजी गई थी:
- क. ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन
 - ख. ऑल इंडिया रबर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन
- (ज) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाणों के अगोपनीय वृत्तांत को सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध करा दिया है जो हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए खुली रखी हुई है। सभी हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदनों को वर्तमान प्रकटन के दौरान ध्यान में रखा गया है।
- (ज) गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना की गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई थी। संतुष्टि होने पर, जहां अपेक्षित था, प्राधिकारी ने गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं की गई है। जहां कहीं संभव है, वहां पर गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर की गई सूचना के पर्याप्त अगोपनीय वृत्तांत सिद्ध करने का निर्देश दिया गया था।
- (त) याचिकादाता एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों से यथा आवश्यक और सूचना मांगी गई थी।
- (थ) वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग का सत्यापन किया गया था।
- (द) सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और निर्माण एवं बिक्री की लागत के आधार पर उसकी क्षति रहित कीमत (जिसे बाद में "एनआईपी" कहा गया है) का आकलन किया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम पाटन-रोधी शुल्क लगाया जाता है, तो क्या वह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (ध) निम्नलिखित निर्यातकों के परिसरों में स्थल पर जांच की गई थी:
- (न) पीजेएससी "सिबुर होल्डिंग" रूस
 - (प) सिबुर इंटरनेशनल जीएमबीएच, ऑस्ट्रिया
 - (फ) एलजी केम लि., कोरिया जन गण
 - (ब) वोनकेम लि., कोरिया जन गण
 - (भ) हंसुक केमिकल्स कं. लि., कोरिया जन गण
 - (म) कुम्हो पैट्रोकेमिलकल कं. लि., कोरिया जन गण
 - (य) पोसको देवू, कोरिया जन गण

- (कक) 1 अप्रैल, 2015 से 31 मार्च, 2016 (12 महीने) तक जांच की गई थी (जिसे इसके बाद में "जांच की अवधि" अथवा "जांच अवधि" कहा गया है)। क्षति का विश्लेषण करने के प्रयोजनार्थ 2012-13, 2013-14, 2014-15 और जांच अवधि को शामिल किया गया है।
- (खख) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार, प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को 13 जून, 2017 और 17 अक्टूबर, 2017 को की गई मौखिक सुनवाई के दौरान अपने मौखिक विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया और जो पक्षकार मौखिक सुनवाई के दौरान उपस्थित थे, बाद में उन सभी पक्षकारों को सलाह दी गई थी कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करें। पक्षकारों को यह सलाह दी गई थी कि वे प्रतिबद्ध पक्षकारों के द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां ले लें और उनका खंडन करने के लिए अपने विचार दें। कई हितबद्ध पक्षकार सुनवाई में शामिल हुए थे।
- (गग) जांच की अवधि सहित विगत 3 वर्षों के संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यारे उपलब्ध कराने के लिए वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकीय महानिदेशक (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था, जो प्राधिकारी के द्वारा प्राप्त किया गया था। प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण करने तथा आयातों की मात्रा एवं मूल्य की तुलना करने के लिए डीजीसीआईएंडएस से आयात आंकड़ों के बारे में लिया है।
- (घघ) चूंकि, याचिकादाताओं के द्वारा प्रस्तुत किए गए यूएई से संबद्ध वस्तुओं का वाहनान्तरण के संबंध में प्रमाणों से यह सुनिश्चित नहीं किया जा सका कि यूएई से आ रही वस्तुओं का ईरान में उत्पादन किया जा रहा है। इसलिए, प्राधिकारी ने कुल आयातों में ईरान के हिस्से की गणना करते समय यूएई के आयातों की मात्रा को बाहर कर दिया गया है। यूएई के वाहनान्तरण को बाहर रखते हुए ईरान का हिस्सा 3 प्रतिशत से कम है, इसलिए प्राधिकारी ईरान के विरुद्ध जांच को समाप्त करते हैं। इसको ध्यान में रखते हुए ईरान और यूएई से आयातों की मात्रा को पाटन एवं क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ नहीं लिया गया है।
- (ङङ) उपरोक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा 28 नवंबर, 2017 को संबंधित हितबद्ध पक्षकारों को अत्यावश्यक तथ्यों का प्रकटन कर दिया था। उनसे अपनी टिप्पणियां 6 दिसंबर, 2017 तक प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। प्रकटन विवरण पर प्रस्तुत टिप्पणियों को प्राधिकारी द्वारा जितना प्रासंगिक पाया गया है, इस अंतिम जांच परिणाम में उन पर विचार किया गया है।
- (चच) प्रकटन विवरण पर कोरिया के निर्यातिक, कुमहो द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियों के आधार पर यह पाया गया है कि पाटन मार्जिन 2% से कम है। न्यूनत पाटन मार्जिन को ध्यान में रखते हुए उनके खिलाफ पाटन-जांच को समाप्त कर दिया गया है और यह पाया गया है कि कोरिया से समस्त आयात गैर-पाटित हैं, इसलिए कोरिया जनवादी गणराज्य के खिलाफ भी पाटन-जांच को समाप्त कर दिया गया है। इस प्रकार इस जांच में संबद्ध देशों में केवल दक्षिणी अफ्रीका, रूस और सिंगापुर शामिल हैं।
- (छछ) अमेरिकी डॉलर को रुपए में बदलने के लिए विनिमय दर जांच अवधि के लिए प्रति सीमा शुल्क आंकड़ों के लिए 65.91 रुपए मानी गई है।
- (जज) *** इस प्रकटन में हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना गोपनीय आधार के रूप में प्रस्तुत की गई है और नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी के द्वारा उस पर विचार किया गया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

5. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद कोरिया जन गण, रूस, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पॉलीबुटाडीन रबड़ है।

घरेलू उद्योग के विचार

6. घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मुद्दे पर निम्नलिखित निवेदन किया है:

- (क) दायर की गई वर्तमान जांच में विचाराधीन "पॉलीबुटाडीन रबड़", "पीबीआर" अथवा "बुटाडीन रबड़" के रूप में परिभाषित है। पॉलीबुटाडीन रबड़ सिथ्रेटिक रबड़ होती है जो मोनोमर 1, 3-बुटाडीन के पॉलीमराइजेशन से निर्मित पॉलीमर है। पॉलीबुटाडीन में टिकाउपन की अधिक क्षमता होती है और इसका उपयोग टायरों के विनिर्माण करने में किया जाता है जो भारत में उत्पादित लगभग 70 प्रतिशत से 80

प्रतिशत पीबीआर खाती है। लगभग 20 प्रतिशत का पॉलीस्टिरेन और एक्रीलोनीट्रिल बुटाडीन स्टिरेन (एबीएस) जैसी प्लास्टिकों की मैकेनिकल क्षमता को बढ़ाने के लिए एक योजक के रूप में उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग गोल्फ बॉल, विभिन्न प्लास्टिक की वस्तुओं का विनिर्माण करने के लिए अथवा अधिक विद्युत रोधी क्षमता प्रदान करते हुए इलैक्ट्रॉनिक एसेम्बलीज के कोट (मुलम्म) अथवा एनकेपसुलेट के लिए उपयोग किया जाता है।

- (ख) "बी. आर." अथवा "पीबीआर" को ग्रेडों तथा गुणवत्ता के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। ग्रेड 5 किस्म के होते हैं। पीबीआर ग्रेड पॉलीमराइजेशन प्रक्रिया के दौरान प्रयुक्त प्रेरक के किस्म पर आधारित होते हैं। प्रक्रिया में प्रयुक्त प्रेरक के आधार पर चैन की स्टीरियो रेगुलरिटी (सिस्कन्टेट के द्वारा मापी गई) अथवा चैन की लीनियरिटी में पॉलीमराइजेशन होता है। सामान्य तौर पर सिस-कन्टेन्ट के आधार पर पीबीआर के ग्रेडों को अलग-अलग किया जाता है। इस दृष्टि से घटिया गुणों की वजह से पीबीआर का टिटानियम ग्रेड अप्रचलित है, जबकि पीबीआर के लीथियम ग्रेड का प्लास्टिक के सुधार करने में उपयोग किया जाता है। याचिकादाता ने टिटेनियम और लीथियम ग्रेडों का न तो उत्पादन किया है और न ही इन ग्रेडों सहित याचिका में आंकड़ों को स्वीकार किया है। पीबीआर के अन्य सभी ग्रेड (कोबाल्ट, निकल और नियोडिमियम) तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टि से प्रतिस्थापनीय हैं। विचाराधीन उत्पाद के आयातों में ये सभी तीनों ग्रेड शामिल हैं।
- (ग) 1,3-बुटाडीन एक आर्गेनिक मिश्रण है जो एक साधारण संबद्ध डाउन हाइड्रोकार्बन है (डाइक्स की दो कार्बन-कार्बन-डबल बांड होते हैं)। एक काफी लम्बे पॉलीमर चैन मोलेकूल बनाने के लिए बहुत से 1, 3-बुटाडीन मोनोमर्स को लिंक करके पॉलीबुटाडीन बनता है। पॉलीमर चैन की कनेक्टिविटी के संदर्भ में बुटाडीन को तीन अलग-अलग तरीकों जैसे सीआईएस, ट्रांस और विनाइल में पॉलीमराइज किया जा सकता है। सीआईएस और ट्रांस बुटाडीन मोलेकूल्स, एंड-टू-एंड तथाकथित 1, 4-पॉलीमराइजेशन को जोड़ करके उत्पन्न होती है।
- (घ) पॉलीबुटाडीन का अधिकांश उपयोग ऑटोमोबाइल टायरों के विभिन्न हिस्सों में किया जाता है, टायरों के विनिर्माण में पॉलीबुटाडीन के विश्व उत्पादन का लगभग 70 प्रतिशत का उपयोग किया जाता है। इसमें उच्च सीआईएस शामिल है। पॉलीबुटाडीन रबड़ के अन्य प्रयोग ग्रेड रबड़, कन्वेयर बैल्टों, फुटवीयर, खेल-कूद सामानों, ऑटोमोटिव उपकरणों, रोलरों, मैकेनिकल सामानों और डॉक एंव फैडरों में होता है।
- (ङ) संबद्ध वस्तुओं को उप शीर्षक 40022000 के तहत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 40 के अधीन वर्गीकृत किया जाता है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह प्रस्तावित जांच के कार्य क्षेत्र में किसी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।
- (च) प्राधिकारी ने ऑफ स्पेक्स सामग्रियों को शुल्क के कार्य क्षेत्र से इस आधार पर कभी अलग नहीं किया है कि घरेलू उद्योग इसका उत्पादन एवं बिक्री नहीं कर रहा है।
- (छ) यह सुनिश्चित किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद भाग बनाने वाले पीबीआर के सभी तीनों ग्रेड अर्थात कोबाल्ट ग्रेड, निकल ग्रेड और नियोडिमियम ग्रेड सभी तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से प्रतिस्थापनीय होते हैं। इसलिए वे समान वस्तुएं बनाते हैं। अतः इन तीनों में से कोई भी ग्रेड निष्कासन के अध्यधीन नहीं हो सकता है। ऐसे निष्कासन से निष्कासित ऐसी वस्तुओं के उत्पादक भारत में उनमुक्त रूप से पारित वस्तुओं के लाने दिया जाएगा जिसका उन सभी उपभोक्ताओं के द्वारा उपयोग किया जाएगा जो पीबीआर के अन्य ग्रेडों का उपयोग कर रहे हैं और इससे याचिकादाता को हुई क्षति और ज्यादा हो जाएगी। याचिकादाता के द्वारा नियोडिमियम ग्रेड का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन किया गया है और बिक्री की है।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

7. निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार निम्नानुसार हैं:

- (क) रूस से अधिकांश बिक्री एनडीपीबीआर की ऑफ स्पेक गुणवत्ता की थी और ऐसे ग्रेडों की तुलना याचिकादाता के द्वारा विनिर्मित उन्हीं ग्रेडों के साथ करनी चाहिए। यदि घरेलू उद्योग ऐसे ग्रेडों का विनिर्माण नहीं करता है

तो इन ऑफ स्पेक ग्रेडों को निकाल देना चाहिए अथवा सिवुर की निर्यात कीमत को सिवुर के पाटन मार्जिन अथा क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए लेना चाहिए।

- (ख) याचिकादाता द्वारा यह दावा किया गया है कि बुटाडीन रबड़ का नियोडिमियम ग्रेड का "रिफ्लैक्स सिसामर पीबीआर 51" नामक ट्रेड के तहत याचिकादाता के द्वारा उत्पादन करता है और "रिफ्लैक्स सिसामर पीबीआर 700" उपलब्ध बाजार सूचना के अनुसार सही नहीं है। बुटाडीन रबड़ का नियोडिमियम ग्रेड का केवल एक परीक्षण बैच के रूप में उत्पादन किया गया है और घरेलू उद्योग के द्वारा वाणिज्यिक दृष्टि से कभी उत्पादन नहीं किया है और इसलिए इसको वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद के कार्य क्षेत्र से बाहर कर देना चाहिए।
- (ग) यदि विचाराधीन उत्पाद का ग्रेड वार विश्लेषण करना होगा, तो याचिकादाता के द्वारा मांग, उत्पादन, क्षमता उपयोग, विक्रय मूल्य, लाभप्रदता आदि को ग्रेड वार आधार पर अलग-थलग करना चाहिए। इसके बाद में याचिकादाता के द्वारा उस प्रत्येक ग्रेड के बारे में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह याचिकादाता द्वारा निर्मित ग्रेडों की विपणन की स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय बाजार में उपभोक्ताओं के लिए स्वीकार्य गुणवत्ता का विनिर्माण करता है।
- (घ) बाजार की सूचना के अनुसार, आरआईएल की योजना प्रेरक नियोडिमियम का उपयोग करते हुए बीयूएनए सीबी24 के समकक्ष उत्पादन करने की है, लेकिन इस उत्पाद का भी प्रतिवादियों के द्वारा खरीदे गए एनडीबीआर की तुलना में एक अलग मोलेकुलर वितरण होगा।

प्राधिकारी द्वारा जांच:

8. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद पॉलीबुटाडीन रबड़ है, जिसे "बुटाडीन रबड़" के रूप में जाना जाता है (जिसे आगे "संबद्ध वस्तुएं" अथवा "विचाराधीन उत्पाद" अथवा "बीआर" अथवा "पीबीआर" के रूप में कहा गया है)। पॉलीबुटाडीन रबड़ सिंथेटिक रबड़ होती है जो मोनोमर 1, 3-बुटाडीन के पॉलीमराइजेशन से निर्मित पॉलीमर है। याचिकादाता ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा निर्मित उत्पादों और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। याचिकादाता ने यह भी दावा किया था कि उनके द्वारा और विदेशी उत्पादकों के द्वारा नियोजित प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रिया भी तुलनीय हैं।

9. एनडीबीआर को इस जांच से निकाल देना चाहिए, इस दावे के संबंध में प्राधिकारी को हितबद्ध पक्षकारों के ऐसे दावों में कोई विशेषता नहीं मिलती है क्योंकि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान एनडीबीआर का उत्पादन और विक्री की है। यह भी नोट किया जाता है कि यह विचाराधीन उत्पाद का एक ग्रेड है और इसे घरेलू उद्योग के द्वारा उत्पादित वस्तुओं के लिए आयातित वस्तुओं की समान वस्तु के रूप में माना गया है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि एनडीबीआर की उत्पादित मात्रा कुल उत्पादन के 2 प्रतिशत से कम है। प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद के अन्य ग्रेडों की सत्यापित सूचना के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के लिए भारित औसत एनआईपी की गणना करने के लिए उपयुक्त पाया गया था।

10. रूस से आयातित ऑफ स्पेक ग्रेडों के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऑफ स्पेक पीबीआर और सामान्य ग्रेड पीबीआर अलग-अलग उत्पादों को नहीं बनाते हैं। ऑफ स्पेक और सामान्य ग्रेड पीबीआर की वही सामान्य तकनीकी और वाणिज्यिक विशेषताएं होती हैं। चूंकि, ऑफ स्पेक ग्रेड उत्पाद का घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के प्रतिस्थापन में उपयोग किया जाता है, इसलिए प्राधिकारी ने ऑफ स्पेक ग्रेड पीबीआर को निकालना उपयुक्त नहीं पाया गया था।

11. हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग के द्वारा एनडीबीआर के उत्पादन और विक्री के बारे में चिन्ता की है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी दावा किया है कि आरआईएल के द्वारा उत्पादित और बेचा गया एनडीबीआर वस्तुतः उत्पाद एनडीबीआर नहीं है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कंपनी का उत्पादन संबंधी रिकार्ड यह दर्शाता है कि जांच अवधि के दौरान उत्पादन और विक्री दोनों कार्य हुए हैं।

12. घरेलू उद्योग के द्वारा उत्पादित पीबीआर और आयातित पीबीआर की जांच करने पर प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं के बीच में कोई वस्तुगत अंतर नहीं पाया था। यह भी नोट किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकार घरेलू उद्योग के द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं के बीच में कोई वस्तुगत अंतर सुनिश्चित नहीं कर सके थे। निर्मित प्रक्रिया और प्रतिस्थापनीयता में समानता होने की दृष्टि से प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग के द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं की समान वस्तुएं हैं।

ग. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र और स्थिति:

13. घरेलू उद्योग का नियम 2 (ख) में निम्नानुसार उल्लेख किया गया है:

"ख "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से हैं जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाठित वस्तु के निर्यातिकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।

14. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. (आरआईएल) के द्वारा आवेदन दायर किया था जो देश में संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र उत्पादक है।

घरेलू उद्योग के विचार:

15. घरेलू उद्योग ने स्थिति के संबंध में निम्नलिखित निवेदन किए हैं:

- (क) रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. के द्वारा विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादक के रूप में याचिका दायर की गई है।
- (ख) याचिकादाता देश में संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र उत्पादक है। याचिकादाता संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के किसी आयातक अथवा निर्यातिक से संबंधित नहीं है।

निर्यातिकों, आयातकों, उपभोक्ताओं एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

16. हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग और उसके कार्य क्षेत्र संबंधी किसी विषय को नहीं उठाया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

17. विचाराधीन उत्पाद के एकमात्र घरेलू उत्पादक के रूप में रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. के द्वारा आवेदन दायर किया गया है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने याचिकादाता के दावे और घरेलू उद्योग की स्थिति पर कोई विवाद नहीं उठाया है।

18. उपर्युक्त के मद्देनजर और रिकार्ड सूचना की उचित जांच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकादाता पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) की अपेक्षाओं को पूरा करता है। याचिकादाता नियमावली के तहत स्थिति संबंधी अपेक्षा को पूरा करता है। याचिकादाता नियम 2(ख) के अर्थ में घरेलू उद्योग बनता है।

घ. अन्य/विविध मुद्दे:

घरेलू उद्योग के विचार:

19. घरेलू उद्योग ने विविध मुद्दों पर निम्नलिखित निवेदन किए हैं:

- (क) मांग-आपूर्ति अंतर के होने से निर्यातिक पाटन का सहारा लेने के लिए पात्र नहीं होते हैं। मांग-आपूर्ति अंतर के बारे में सावधानी बरतने के लिए पाटन-रोधी शुल्क लगाने के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में आयातों का आना जारी रह सकता है।
- (ख) पाटन-रोधी शुल्क लगाने से प्रदान की गई सुरक्षा उत्पादकों, उपभोक्ताओं, सामान्य रूप से जनता और देश के दीर्घकालीन हित में होगी। किसी मामले में उपभोक्ताओं पर प्रस्तावित शुल्क के प्रभाव को असहनीय बोझ के रूप में नहीं कहा जा सकता है।
- (ग) अधिक सुरक्षा का कोई मामला नहीं है। घरेलू उद्योग को जांच की अवधि के दौरान वित्तीय हानियां हुई हैं और पाटन-रोधी शुल्क पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन से कम होगा।
- (घ) सभी अगोपनीय आंकड़ों के बारे में याचिकादाता द्वारा प्रकटन किया गया है तथा ऐसी सूचना संवेदनशील प्रकृति की होने की वजह से याचिकादाता के द्वारा केवल गोपनीय आंकड़ों को प्रकट करने से रोक दिया गया है। यह सुनिश्चित कानून और गोपनीयता संबंधी प्रथा के अनुसार है। स्वयं विरोधी पक्षकारों ने अपने निर्यातिक प्रश्नावली प्रत्युत्तरों के दौरान कोई सूचना मुश्किल से प्रकट की है।

- (ङ) याचिकादाता ने संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र उत्पादक होने के बावजूद अपनी स्थिति (हैसियत) का दुरुपयोग नहीं किया है। उपभोक्ता याचिकादाता से अथवा निर्यातकों से संबद्ध वस्तुएं प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। दूसरी ओर निर्यातकों ने अनुचित व्यापार कार्यों का सहारा लेकर भारतीय बाजार में बिक्री करने के अपने अधिकारों का दुरुपयोग किया है जिसका याचिकादाता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- (च) पाटन-रोधी शुल्क लगाने का व्यापार संतुलन पर कोई प्रभाव नहीं होगा और इसके विपरीत यह विदेशी मुद्रे को अनचाहे ढंग से बाहर जाने से सीमित करने में सहायक होगा।
- (छ) गुप्त रूप से उत्पादन किए गए कच्चे माल के बारे में लेखा पुस्तकों में बाजार मूल्य पर विचार किया गया है जो सही मायने में अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में मौजूद रुझान को दर्शाता है जो जांच की अवधि के दौरान अस्थिर थे।
- (ज) याचिकादाता ने संबद्ध वस्तुओं के मांग और आपूर्ति के अंतर को ध्यान में रखते हुए संयंत्र की क्षमता का विस्तार किया था। जबकि यह सही हो सकता है कि नए संयंत्र की स्थिर लागत प्रारंभिक अवधि के दौरान अधिक हो सकती है, परन्तु विस्तार करने की वजह से याचिकादाता को हुई हानियां बढ़ाई गई स्थिर लागत से काफी अधिक थीं। याचिकादाता ने पुराने संयंत्र की स्थिर लागत के आधार पर नए संयंत्र की लाभप्रदता का विवरण तैयार किया है और इसे प्राधिकारी को प्रस्तुत कर दिया था। विवरण में साफ-साफ यह दर्शाया गया था कि याचिकादाता को वर्ष 2014-15 और 2015-16 के दौरान हानियां हुई थीं।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

20. हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार दावा किया है:

- (क) याचिकादाता उस तथ्य को स्वयं स्वीकार करता है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए भारतीय मांग उससे अधिक है जिसका याचिकादाता उत्पादन एवं आपूर्ति कर सकता है।
- (ख) पाटन-रोधी शुल्क लगाने का अर्थ यह होता है कि भारतीय प्रयोक्ताओं पर अतिरिक्त टैरिफ बोझ उनकी लगभग आधी जरूरतों के लिए होगा।
- (ग) पाटन-रोधी शुल्क लगाने से याचिकादाता की अधिक सुरक्षा होगी जिसका केवल ऐसे आपूर्तिकर्ताओं को ही बाजारों के बंद होने से लाभ होगा जो विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग-आपूर्ति अंतर का प्रभावी ढंग से समाधान कर सकते हैं।
- (घ) दायर की गई याचिका में जांच की शुरूआत नोटिस की तुलना में दो और देश (यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका) शामिल हैं। इसलिए विश्वेषण भ्रामक है एवं परिचालन करने से पूर्व इसको अद्यतन किया जाना चाहिए क्योंकि यह प्रतिवादी के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- (ङ) प्रथम दृष्टया जांच और प्राधिकारी के द्वारा जांच की शुरूआत पाटन-रोधी नियमावली के नियम 5(3) के साथ पठित एडीए के अनुच्छेद 5.3 में निर्धारित मानकों को पूरा नहीं करते हैं।
- (च) प्राधिकारी के द्वारा जारी की गई जांच की शुरूआत अधिसूचना यह स्पष्ट करती है कि जांच की शुरूआत बिना किसी जांच और विचार विमर्श न करने के बाद की गई थी।
- (छ) निर्यातक देशों की कीमतों, सामान्य मूल्य अनुमानों एवं निर्यात कीमतों में कटौती संबंधी प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए याचिकादाता के द्वारा कोई प्रयास नहीं किए गए हैं।
- (ज) प्रोफार्मा-IVक, लागत संबंधी सूचना, बुटाडीन की अंतर्राष्ट्रीय कीमतें, आईबीआईएस सौदे-वार आयात आंकड़ों, वार्षिक रिपोर्ट, याचिकादाता का तुलन पत्र और वित्तीय विवरण, क्षति रहित मूल्य और निर्मित सामान्य मूल्य के बारे में याचिकादाता के द्वारा अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया गया है।
- (झ) याचिकादाता एकाधिकार, प्रतिस्पर्द्धा विरोधी बाजार बनाने का प्रयास कर रहा है। निर्यातक को यह यकीन नहीं हो रहा कि याचिकादाता के द्वारा सम्पूर्ण मूल्य प्रक्रिया (शृंखला) को नियंत्रित करने के बावजूद क्षति हो रही है।
- (झ) विचाराधीन उत्पाद पर शुल्क लगाने से नाजुक व्यापार संतुलन गड़बड़ा जाएगा और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तेजी लगाएगा।

- (ट) भारत में रबड़ उद्योग पर पहले ही अधिक आयात शुल्क का बोझ है और जटिल कञ्चे माल पर पहले ही पाटन-रोधी शुल्क लगा हुआ है तथा वर्तमान मामले में पाटन-रोधी शुल्क लगाने से उद्योग की स्थिति और अधिक खराब हो जाएगी।
- (ठ) जांच अवधि के दौरान कीमतों में गिरावट का कारण बाजार में मंदी आना था।
- (ड) भारत के लिए अरलैंक्सो की कीमतें अधिक थीं अथवा पड़ोसी देशों, एशिया क्षेत्र की निर्यात कीमतों के अनुसार थीं।
- (ढ) जांच अवधि के दौरान भारत में विक्री की वजह अरलैंक्सो एनडी-पीबीआर की घटिया गुणवत्ता होना था।
- (ण) एनडी-पीबीआर जैसे निष्पादन उत्पादों के लिए तेजी से बढ़ती हुई स्थानीय मांग को घेरेलू उद्योग पूरा नहीं कर सकता है।
- (त) एनडी-पीबीआर पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने से अच्छे निष्पादन के लिए अच्छे उत्पादों के घेरेलू उपभोक्ता वंचित हो जाएंगे।
- (थ) कञ्चे माल, क्रृषि सेवाओं और नई क्षमताओं में निवेश करने से क्षति हुई थी। मात्रा और कीमत संबंधी प्रभावों से क्षति नहीं हुई है।
- (द) वर्तमान जांच प्रदान की जा रही राजसहायता का अनुमान लगाने के लिए नहीं है और इस जांच के संबंध में इसमें किसी निष्कर्ष का निर्धारण करना संभव नहीं है।
- (ध) एलजी पैट्रोकेमिकल प्रा. लि. संबंधित उत्पाद की विक्री करने में शामिल नहीं है और इसलिए विचाराधीन उत्पाद में शामिल सहायक कंपनी के रूप में इसका उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
- (न) घेरेलू उद्योग ने लागत संबंधी सूचना के भाग-VI में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है जिसमें समस्त सूचना के गोपनीय होने का दावा किया गया है। जब घेरेलू उद्योग ने स्वयं ऐसी किसी सूचना को प्रकट नहीं किया है तो निर्यातकों से अधिक सूचना प्रकट करने की उम्मीद रखना अवास्तविक है।
- (ञ) याचिकादाता के द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात संबंधी आंकड़े भ्रामक हैं क्योंकि इसमें विचाराधीन उत्पादन के रूप में कुछ कम कीमत की आयात संबंधी प्रविष्टियां शामिल हैं और ऊंची कीमतों को एनपीयूसी के रूप में माना गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच:

21. विविध विषयों के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा किए गए निवेदनों और प्राधिकारी के द्वारा प्रासंगिक समझे गए विषयों के बारे में जांच की गई है और उनके बारे में जांच की गई है और उनके बारे में निम्नानुसार समाधान किया गया है:

- (क) भारत में मांग-आपूर्ति अंतर होने संबंधी मुद्रे के संबंध में यह नोट किया है कि ऐसे अंतर के होने से पाटन संबंधी प्रथाओं के बारे में औचित्य सिद्ध नहीं होता है। आपूर्ति संबंधी अंतर को उस कीमत पर दूर किया जा सकता है जिससे क्षति न हो। उपभोक्ता पर अधिक बोझ होने तथा याचिकादाता को अधिक सुरक्षा देने के संबंध में यह नोट किया है कि पाटित आयातों की वजह से घेरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाते हैं।
- (ख) गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना की गोपनीयता संबंधी दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई थी। संतुष्टि होने पर जहां अपेक्षित था, प्राधिकारी ने गोपनीयता के दावों को स्वीकार कर लिया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं की गई है। जहां कहीं संभव है, गोपनीय आधार पर सूचना उपलब्ध करा रहे पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय वृत्तांत उपलब्ध कराएं। विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाणों का अगोपनीय वृत्तांत सार्वजनिक फाइल के रूप में प्राधिकारी को उपलब्ध कराया गया था।

- (ग) आरलैंक्सको के द्वारा किए गए निवेदन को इस जांच में स्वीकार नहीं किया गया है क्योंकि वे निर्यातक की प्रश्नावली प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे हैं और परिणामस्वरूप उन्होंने मौखिक सुनवाई के बाद अपना प्रथम निवेदन प्रस्तुत किया था। तदनुसार, उनको इस जांच के प्रयोजनार्थ असहयोगी होने के रूप में माना है। तथापि, उनके द्वारा उठाए गए विषय के बारे में प्रासंगिक मौके पर कार्रवाई गई है।
- (घ) सीमित रूप से उत्पादित कच्चे माल बुटाडीन के मूल्य निर्धारण के बारे में यह नोट किया है कि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के द्वारा बनाई गई लेखा पुस्तकों के अनुसार बुटाडीन की सत्यापित सूचना के बारे में विचार किया है।
- (ङ) घरेलू उद्योग को हुई हानियों की वजह से एक नए संयंत्र की स्थापना की गई थी, विरोधी पक्षकारों के द्वारा उठाए गए इस मुद्दे के बारे में यह नोट किया है कि नए संयंत्र का क्षमता उपयोग 115 प्रतिशत है जो तर्कसंगत रूप से अच्छा है और इसलिए घरेलू उद्योग को हुई हानियों की वजह घरेलू उद्योग के द्वारा नए संयंत्र की स्थापना करना नहीं है।
- (च) आयात संबंधी आंकड़ों में समनुरूपता नहीं है, इस आरोप के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस पाटन-रोधी जांच के प्रयोजनार्थ डीजीसीआईएंडएस के आयात संबंधी आंकड़ों पर भरोसा किया गया है और जिनको विधिवत रूप से प्रकट किया गया है।

ड. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण

ड.1 घरेलू उद्योग के विचार:-

22. घरेलू उद्योग ने अन्य मुद्दों के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- (क) उत्पादों की विक्री से संबंधित वास्तविक लेन-देन कीमतों का कोई प्रमाण नहीं है। निर्यातक देशों के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की कीमत की सूचना/प्रमाण प्राप्त करने के साथ-साथ संबद्ध देशों ने संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों की कीमत सूची अथवा मूल्य सूची प्राप्त करने के प्रयास किए थे। संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों और उपभोक्ताओं की बहुत ही सीमित संख्या है। इसलिए कारोबार उत्पादकों और निर्यातकों के बीच सीधे होता है।
- (ख) संबद्ध वस्तुओं के विनिर्माण में प्रयुक्त कच्ची सामग्री उत्पाद की कुल लागत की 65-75% है और ब्यूटाडाइन की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्थापित हैं। वास्तव में, ब्यूटाडाइन की कीमतें कई व्यापार पत्रिकाओं द्वारा आवधिक रूप से घोषित की जाती हैं और इसलिए सभी उत्पादकों और उपभोक्ताओं को उनकी अच्छी जानकारी है और इसके फलस्वरूप व्यापार पत्रिकाओं में घोषित कीमतों पर कारोबार होता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान जांच में संबद्ध देशों में उत्पादक इन अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर ब्यूटाडाइन खरीद रहे हैं।
- (ग) अन्य अंतरण लागत, जो उत्पादन की पूरी लागत का लगभग 25-35% है, के संबंध में याचिकादाता ने अपनी स्वयं की अंतरण लागतें मानी है और अनुरोध किया है कि निर्यातक की अंतरण लागत इस अंतरण लागत से कम से कम तुलनीय अथवा अधिक होगी।
- (घ) वर्तमान जांच में पाटन मार्जिन कम कीमत तथा क्षति मार्जिन दोनों पक्षकारों उस समय जबकि पक्षकारों ने संविदा हस्ताक्षरित की है, की कीमतों पर विचार करके अनिवार्यतः निर्धारित की जानी चाहिए और वह आंकड़ा बिक्री की तारीख पर विचार किया जाना चाहिए।
- (ङ) वर्तमान जांच में कम कीमत और क्षति मार्जिन उन विदेशी निर्यातकों, जो पर्याप्त स्तरी कीमत पर आयात कर रहे हैं, द्वारा पेशकश किए जा रहे दीर्घकालीन क्रेडिट के लिए उपयुक्त समायोजन करने के पश्चात् निर्धारित की जानी चाहिए।
- (च) विदेशी उत्पादक अधिक कीमतों पर बीजक द्वारा तथा बाद में छूट देकर संबद्ध वस्तुओं के लिए पश्च बीजक दस्तावेज दे रहे हैं।

- (छ) घरेलू उद्योग को औचित्यपूर्ण प्रतिफल आवंटित करने और सिद्ध करने के लिए पुराने निवेशों का वर्तमान निवल मूल्य इस प्रयोजन के लिए विचार किया जाना चाहिए।
- (ज) संबद्ध उत्पाद के बिना विशेष निर्देश वाले ग्रेडों के लिए उत्पादन की लागत विचाराधीन उत्पाद के अन्य ग्रेडों से काफी भिन्न नहीं हो सकती। एनडी-पीबीआर के लिए एनआईपी के निर्धारण के संबंध में पृथक रूप से विचार किया जा सकता है और उसकी तुलना आयात की उत्तराई लागत से की जा सकती है।
- (झ) संबद्ध उत्पाद से संबंधित सूचना विभिन्न विशेष निर्देशों की दृष्टि से उसका पृथक्करण किए बिना उपलब्ध कराई है। संबद्ध उत्पादन के विनिर्माण में प्रयुक्त कैटालिस्ट पर निर्भर करते हुए उत्पादन की पृथक लागत का निर्धारण किया जा सकता है।
- (ञ) यह दर्शाने के लिए कि संबद्ध उत्पाद का उत्पादन करने के लिए यूएई की अपनी कोई क्षमता नहीं है, संगत साक्ष्य उपलब्ध कराया गया है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यूएई से भेजी गई संबद्ध वस्तुएं यूएई के जरिए भारत को अन्य देश से ट्रांसशिप की गई संबद्ध वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है।
- (ट) सूचना, जो दीर्घकालीन क्रेडिट का आधार बनती है और याचिकादाता द्वारा दावा किया गया पश्च बीजक छूट बाजार में स्रोतों से प्राप्त सूचना के जरिए याचिकादाता की जानकारी में आया है।
- (ठ) याचिकादाता ने अपनी अपेक्षाओं का पूर्णतः पालन किया है और सामान्य मूल्य संरचित किया है।
- (ड) अंतर्राष्ट्रीय बाजार कीमतों में रूख को सही रूप से प्रदर्शित करते हुए खाताबहियों में उपलब्ध बाजार कीमत पर याचिकादाता द्वारा निजी रूप से उत्पादित कद्दी सामग्री को माना गया है जो जांच अवधि में अस्थिर थी।
- (ढ) पीबीआर की उत्पादन की लागत क्षति अवधि के दौरान 16% तक घट गई है जबकि आयात की उत्तराई कीमत उसी अवधि के दौरान 49% घट गई है जो दर्शाता है कि इसका कोई सीधा संबंध नहीं है। घरेलू उद्योग ने आयात कीमतों के साथ अपनी विक्रय कीमतें निर्धारित की थी और तदनुसार विक्रय कीमतें 51% तक घट गई थीं।

ड.2 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्धपक्षकारों के विचार

23. अन्य हितबद्धपक्षकारों ने निम्नलिखित मुख्य दावे किए हैं:-

- क. एसआईबीयूआर के लिए क्षति मार्जिन की गणना इसी प्रकार के उत्पादों और ग्रेडों से तुलना की जानी चाहिए और यह बिना विशेष निर्देश वाले ग्रेडों के लिए क्षति मार्जिन की गणना के लिए इसे लागू किया जाना चाहिए।
- ख. बिना विशेष निर्देश वाले ग्रेड का सामान्य मूल्य समायोजित किया जाना चाहिए। उत्कृष्ट ग्रेड वी के लिए केवल पीबीआर के उत्पादन की लागत रिकॉर्ड की जानी चाहिए और बिना विशेष निर्देश वाले ए, सी और डी ग्रेडों के लिए कोई पृथक लागत रिकॉर्ड नहीं की गई है जो निर्यात से पूर्व निर्धारित की गई थी। निष्पक्ष तुलना सुनिश्चित करने के लिए ए, सी और डी ग्रेडों के लिए सीएनवी 5-15% तक कम समायोजित की जानी चाहिए जो बिना विशेष निर्देश वाले ग्रेडों और उत्कृष्ट ग्रेड वी की घरेलू बाजार विक्री के बीच का अंतर है।
- ग. न तो संबद्ध देशों में कीमतों के बारे में डाटा उपलब्ध कराने के लिए कोई प्रयास किए गए थे और न ही इस प्रकार की सूचना एकत्र करने के लिए कोई प्रयास किया गया है।
- घ. सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए याचिकादाता अपनी पद्धति तैयार नहीं कर सकता। सभी संबद्ध देश बाजार अर्थव्यवस्था देश हैं जिनके लिए सामान्य मूल्य सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9क(1) के स्पष्टीकरण (ग) पर अनिवार्यतः आधारित होना चाहिए।
- ङ. याचिकादाता सामान्य मूल्य की गणना में इसके द्वारा प्रयोग किए सभी डाटा के संबंध में कोई साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए कभी भी इंकार नहीं कर सकता।
- च. याचिकादाता द्वारा ब्यूटाडाइन कीमतों से संबंधित कुछ डाटा दिए गए हैं परंतु पिछले वर्षों के लिए सामान्य मूल्य और कीमतों की संरचना के लिए कीमतें प्रयोग की गई हैं जो अंतर्राष्ट्रीय रूख प्रदर्शित करती हैं, याचिकादाता द्वारा उपलब्ध नहीं कराई गई हैं।

- छ. अंतर्राष्ट्रीय केमिकल उद्योग चुनौतियों का सामना कर रहा है जिससे केमिकल उत्पादों और उनके कच्चे माल के मूल्यहास का रूख हुआ है। इस प्रभाव की सार्वभौमिकता का तथ्य इस आधार पर है कि पीबीआर के सभी निर्यातकों ने अपनी कीमतें घटाई हैं और न केवल पाटन-रोधी कार्यवाही की शर्त पर।
- ज. याचिकादाता की पद्धति की स्वीकार्यता की परिकल्पना करते हुए ब्यूटाडाइन की कीमतें, अन्य कच्ची सामग्री की कीमतें, अंतरण लागतें और सामान्य रूप से 5% पर लाभ मानने का औचित्य नहीं दिया गया है।
- झ. याचिकादाता द्वारा किए गए बिक्री दावे की तारीख के संबंध में यह साक्ष्य नहीं है कि बाजार स्थिति की गैर-उपलब्धता के कारण जांच अवधि के दौरान कीमतों में काफी परिवर्तन हुआ है। एक दस्तावेज के रूप में बीजक का उद्देश्य, जो की गई बिक्री की पुष्टि करता है और न केवल बिक्री के लिए करार की। यह गलत अवधारणा बनाई जा रही है कि संविदा के समय सहमत कीमतें भावी तारीख पर कीमत का अनुमान नहीं है।
- ज. दीर्घकालीन क्रेडिट के प्रभाव के बारे में याचिकादाता के दावे के संबंध में उत्तराई मूल्य में ऋण की लागत तथा एनआईपी पर 22% प्रतिफल वृद्धि शामिल नहीं है और उत्तराई मूल्य के लिए, यदि इस प्रकार का समायोजन किया जाता है तो यह निर्यातकों द्वारा सामना किए जा रहे दोहरे जोखिम का मामला है।
- ट. घरेलू उद्योग द्वारा दी गई पश्च बीजक छूट के दावे के आधार का कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है।
- ठ. कोरियाई सरकार ने कोरिया आरपी से निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सही आंकड़ों के आधार पर पाटन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी को सुदृढ़ ढंग से अनुरोध किया है।
- ड. रूस के लिए 10% पाटन मार्जिन की गणना प्रतिनिधित्व स्वरूप की नहीं हैं इसलिए प्राधिकारी को इस प्रकार की गणना के प्रयोजन के लिए सहयोगी रूसी उत्पादकों द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों का प्रयोग करना चाहिए।
- ढ. पाटन मार्जिन पद्धति भारतीय विधिक मानकों को पूरा करने में विफल रही है और पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 के अनुलग्नक 1 के अनुरूप नहीं हैं। विधि द्वारा निर्धारित अन्य पद्धतियों का सहारा लिए बिना सामान्य मूल्य की संरचना पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 2.2 की अपेक्षाओं का उल्लंघन करता है।
- ण. याचिकादाता ने पाटन मार्जिन की गणना करने के लिए गलत कारकों का प्रयोग किया है। भारतीय बाजार से अपनाए गए कारकों सहित कोरिया से आयातित ब्यूटाडाइन की कीमतों का उपयोग किया गया है। निर्यात कीमत समुद्री बीमा, कमीशन, बैंक प्रभार, पत्तन व्यय, माल-भाड़ा फीस जैसे कारकों में अंतरों को ध्यान में रखे बगैर समायोजन के अध्यधीन हैं।
- त. प्राधिकारी को ब्यूटाडाइन की वास्तविक लागत पर विचार करना चाहिए न कि बाजार कीमत पर क्योंकि वास्तविक लागतें रिकॉर्ड में सूचित की गई हैं और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच की गई है और बिना औचित्य के अस्वीकृत नहीं की जा सकती। यह डब्ल्यूटीओ पैनल और ईयू-बॉयोडीजल में अपीलीय निकाय रिपोर्टों के अनुरूप हैं।
- थ. पीएओ एसआईबीयूआर होल्डिंग ने ब्यूटाडाइन के उत्पादन की मासिक लागत से संबंधित विस्तृत आंकड़े और पीबीआर के उत्पादन और बिक्री में लगी संबंधित कंपनियों का संबंधित व्यौरा उपलब्ध कराया है जिसकी जांच प्राधिकारी द्वारा की गई है।
- द. एसआईबीयूआर के लिए क्षति मार्जिन एनडी-पीबीआर की बिक्री याचिकादाता के संदर्भ में अनिवार्यतः परिगणित की जाए। यदि याचिकादाता ने एनडी-पीबीआर के बिना विशेष निर्देश वाले ग्रेडों की बिक्री नहीं की है तो केवल उत्कृष्ट पीबीआर ग्रेड एसकेडी-एनडी बी (एलपी) एमके की एसआईबीयूआर की बिक्री पर विचार अनिवार्यतः किया जाए और अन्य सभी ग्रेडों जो बिना विशेष निर्देश वाले ग्रेडों की बिक्री को नहीं माना जाए।
- ध. प्राधिकारी कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के स्थान पर कच्ची सामग्रियों की उपलब्ध वास्तविक लागतों की उपेक्षा नहीं कर सकता।
- न. कुम्हो के ब्यूटाडाइन की मांग काफी बढ़ाकर बताई गई है क्योंकि विभिन्न उत्पादों का उत्पादन करने के लिए कुम्हो के संयंत्रों के लिए याचिकादाता ने 100% क्षमता उपयोग की परिकल्पना की गई प्रतीत होती है।
- प. याचिकादाता ने परिकल्पना की है कि कोरियाई कस्टम प्राधिकारी – केआईटीए डाटा जोकि सही नहीं हैं, द्वारा परिकलित भारित औसत आयात कीमतों के आधार पर कुम्हो ने यूएसडी 1028/एमटी पर आयात के जरिए अथवा

स्थानीय रूप से ब्यूटाडाइन प्राप्त किया है क्योंकि आंकड़ों का अवलोकन दर्शाता है कि कीमतों में 791/एमटी से 1831/एमटी यूएसडी का काफी अंतर है। भारित औसत कीमत विभिन्न महीनों के लिए कीमतों के भारित औसत के आधार पर निर्धारित की गई है और किसी माह अथवा माह दर माह आधार पर कीमत अंतर को पर्याप्त ढंग से नहीं दर्शाती हैं।

- फ. सहयोगी निर्यातिकों के लिए सामान्य मूल्य की संरचना का कोई आधार नहीं है।
- ब. याचिकादाता की चिंता है कि निर्यातिकों ने कच्चे माल की लागत से संबंधित सूचना रोक रखी है। यदि प्राधिकारी किसी ईक्युआर के विरुद्ध त्रुटि पत्र जारी करते तो हितवद्ध पक्षकार विधिवत् रूप से सूचना उपलब्ध कराते।
- भ. सहयोगी निर्यातिकों द्वारा निर्यात कीमत को अस्वीकृत करने के लिए कोई आधार नहीं दिया गया है। निर्यातिक द्वारा प्रस्तावित निर्यात कीमत के लिए समायोजन का आधार नहीं है और अस्वीकृत किया जाना चाहिए। इन समायोजनों के संबंध में एनसीवी याचिका में कोई साक्ष्य नहीं है। उत्पाद की कीमत का अंतर्देशीय भाड़ा और पत्तन संभाल प्रभारों से कोई संबंध नहीं है। समुद्री बीमा और बैंक प्रभार अधिक बताए गए हैं।
- म. निर्यात कीमत की गणना करने के लिए आयात सांख्यिकी पर पूर्णतः निर्भरता स्वीकार्य नहीं है क्योंकि आयात सांख्यिकी विभिन्न त्रुटियों जैसे लेन-देन के एकत्रीकरण, मापन की विभिन्न इकाइयों की रिकॉर्डिंग, नाम से उत्पादक की पूरी तरह से पहचान में विफलता, प्रयोग किया गया ब्रांड आदि के कारण सही नहीं है। निर्यातिकों के अपने आंकड़ों पर निर्भर करना सुनिश्चित करता है कि इस प्रकार की गलतियाँ निर्यात कीमत गणना में नहीं हैं।
- य. इस तथ्य के कारण कि यह दूसरों की तुलना में कम है कच्ची सामग्री की खरीद कीमत को अविश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। कीमतों में अंतर स्थानीय लाभ के कारण है। यदि समायोजन परिवहन लागत के आधार पर किया जाता है तो लोट्टे केमिकल से ब्यूटाडाइन की कीमतें कोरिया आरपी में अन्य कंपनियों में लगभग समान होंगी।
- कक. प्राधिकारी को ब्यूटाडाइन की वास्तविक कीमत पर विचार करना चाहिए न कि बाजार कीमत पर क्योंकि वास्तविक कीमतें रिकॉर्ड में सूचित की गई हैं और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच की गई है और बिना औचित्य के उन्हें अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। जब उत्पादक के रिकॉर्ड में वास्तविक लागतें सही और विश्वसनीय पाई जाती हैं तो औचित्य की जांच करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह डब्ल्यूटीओ पैनल और ईयू-बैंयोडीजल में अपीलीय निकाय रिपोर्टों के अनुरूप हैं।
- ख. ख. एलजी केम और इसके ट्रेडरों ने इस बात से इंकार किया है कि उन्होंने अपने किसी भी ग्राहक को किसी भी तरह का आउट-ऑफ-ऑर्डिनरी डिस्काउंट दिया है। कीमतें प्रतिस्पर्द्धी हैं और ग्राहक तथा एलजी केम/ट्रेडरों के बीच बातचीत के आधार पर निर्धारित हुई है।
- गग. सामान्य मूल्य की गणना करते समय ब्याज, विक्री तथा ब्याज की कटौती करने के पश्चात् लागत के एक मद के रूप में अनुमेय है, प्रतिफल की शेष राशि गैर-क्षति कीमत प्राप्त करने के लिए कर पूर्व लाभ के रूप में अनुमेय है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ब्याज के कारण कोई असाधारण व्यय नहीं किया गया है, ब्याज लागत के औचित्य की जांच की जा सकती है। नियोजित पूंजी पर 22% प्रतिफल अपनाना परिकल्पित है और औचित्यपूर्ण नहीं है।
- घ. घ. ब्यूटाडाइन की कीमतें कच्चे तेल की कीमतों के अनुसार होती है जो अक्टूबर, 2014 में 86.13 यूएस\$ से घटकर सितंबर, 2015 में 46.29 यूएस\$ हो गई। यह कमी लगभग 50% है जबकि उसी अवधि के दौरान आयात की उत्तराई कीमत में 24% तक और घरेलू विक्रय कीमत में 18% तक गिरावट आई है।
- ड. ड. विक्री तर्क की तारीख बिना किसी साक्ष्य अथवा आधार के प्रमाणित नहीं हुआ अनुरोध मात्र है। याचिकादाता ने दूसरी जांचों में इस प्रकार का तर्क दिया है और उन्हें विधिवत् रूप से एसबीआर जांच में अभी हाल ही में अस्वीकृत कर दिया गया है। पाटन-रोधी करार का अनुच्छेद 2.4 'की गई विक्री' के संबंध में है न कि विक्री के लिए करार के संबंध में।
- च. च. याचिकादाताओं ने विदेशी निर्यातिकों द्वारा पेशकश किए जा रहे दीर्घकालीन ऋण के दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया है। उत्तराई मूल्य की गणना निर्धारणयोग्य मूल्य के लिए सीमा-शुल्क और शिक्षा उप-कर जोड़कर की गई है। ऋण लागत समायोजित करके उत्तराई मूल्य निर्धारित करने के लिए याचिकादाता के प्रस्ताव का कोई विधिक आधार नहीं है।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

1. सामान्य मूल्य

24. धारा 9 क (1) (ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है:

- i. व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातिक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- ii. जब निर्यातिक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई विक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातिक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम विक्री मात्रा के कारण ऐसी विक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातिक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो ; अथवा

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, विक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उदगम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत ;

परंतु यह कि उदगम वाले देश से इतर किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में अथवा जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश के जरिए मात्र यानांतरित किया गया है अथवा जहां ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यातिक के देश में नहीं किया जाता है, निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उदगम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

सामान्य मूल्य का निर्धारण

25. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी थी और उन्हें निर्धारित प्रपत्र और तरीके से सूचना उपलब्ध कराने की सलाह दी थी। निम्नलिखित पक्षकारों ने निर्यातकों की प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं:

- क. पीजेएससी “एसआईबीयूआर होलिंडग” रूस
- ख. एसआईबीयूआर इंटरनेशनल जीएमबीएच, आस्ट्रिया
- ग. एलजी केम लि., कोरिया आरपी
- घ. वॉनकेम लि., कोरिया आरपी
- ङ. हानसुक केमिकल्स कं.लि., कोरिया आरपी
- च. कुम्हो पेट्रोकेमिकल कं.लि., कोरिया आरपी
- छ. पोसको डैवू, कोरिया आरपी
- ज. पोसको डैवू, सिंगापुर

26. दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर में संबद्ध वस्तुओं के किसी भी उत्पादक ने सहयोग नहीं किया और निर्यातकों की प्रश्नावली के उत्तर नहीं दिए।

मैसर्स कुम्हो पेट्रोकेमिकल कं.लि., कोरिया के लिए सामान्य मूल्य

27. जांच अवधि के दौरान कुम्हो पेट्रोकेमिकल ने घरेलू बाजार में 54467.04 एमटी संबद्ध वस्तुओं की विक्री की जिसका बीजक मूल्य *** केआरडब्ल्यू है। घरेलू बाजार में की गई सभी विक्री जांच अवधि के दौरान असंबद्ध पक्षकारों को की गई थी। सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत के संबंध में घरेलू विक्री लेन-देन करके लाभ निर्धारित करने हेतु साधारण व्यापार जांच की है। यदि लाभपूर्ण लेन-देन 80% से अधिक है तो प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए घरेलू बाजार में सभी लेन-देन पर विचार किया है और उन मामलों में जहाँ लाभपूर्ण लेन-देन 80% से कम है तो सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विचार करने हेतु केवल लाभपूर्ण घरेलू विक्री पर विचार किया है।

28. कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स द्वारा अपनाई गई ब्यूटाडाइन की खपत कीमतों के संबंध में प्राधिकारी ने जांच किए गए अंकड़ों पर विचार किया है और अपने बही खातों में कुम्हो पेट्रोकेमिकल द्वारा रिकॉर्ड पीबीआर के मूल्य को अपनाया है।

29. केकेपीसी ने अंतर्देशीय भाड़ा, पैकिंग, विभिन्न विक्रय व्यय व घरेलू बिक्री कीमत से क्रेडिट व्यय के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने अंतर्देशीय भाड़े और पैकिंग व्यय के लिए समायोजनों की अनुमति दी है। तथापि, विभिन्न विक्रय व्यय और क्रेडिट व्यय के कारण समायोजनों के संबंध में प्राधिकारी द्वारा अनुमति नहीं दी गई है क्योंकि वह तथ्य प्रमाणित नहीं कर सकी। प्रकटन विवरण में क्रेडिट के समायोजन पर उनके दावे पर की गई टिप्पणियों की जांच करने पर प्राधिकारी ने दावा की गई घरेलू और निर्यात बिक्रियों के लिए विभिन्न दरों के बजाए घरेलू और निर्यात विक्रियों दोनों के लिए ब्याज की कम दर पर विचार किया गया है तथा सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों में क्रेडिट व्यय का समायोजन करने की अनुमति दी है। तदनुसार, कुम्हो पेट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य *** यूएस\$/एमटी निर्धारित किया गया है।

मैसर्स एलजी केम.लि., कोरिया के लिए सामान्य मूल्य

30. जांच अवधि के दौरान मैसर्स एलजी केम ने घरेलू बाजार में 26,160.42 एमटी संबद्ध वस्तुओं की बिक्री की जिसका बीजक मूल्य *** केआरडब्ल्यू है। घरेलू बाजार में की गई सभी बिक्री जांच अवधि के दौरान असंबद्ध पक्षकारों को की गई थी। सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत के संबंध में घरेलू बिक्री लेन-देन करके लाभ निर्धारित करने हेतु साधारण व्यापार जांच की है। यदि लाभपूर्ण लेन-देन 80% से अधिक है तो प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए घरेलू बाजार में सभी लेन-देन पर विचार किया है और उन मामलों में जहाँ लाभपूर्ण लेन-देन 80% से कम है तो सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विचार करने हेतु केवल लाभपूर्ण घरेलू बिक्री पर विचार किया है। इस मामले में साधारण ट्रेड टेस्ट के आधार पर केवल लाभपूर्ण बिक्री को सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए लिया गया है।

31. एलजी केम ने पैकिंग व्यय, क्रेडिट व्यय तथा अंतर्देशीय भाड़ा, जिसकी विधिवत् रूप से जांच की गई है और प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है, के कारण समायोजना का दावा किया है। तदनुसार, मैसर्स एलजी केम.लि. के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य *** यूएस\$/एमटी निर्धारित किया गया है।

कोरिया आरपी के गैर-सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया आरपी के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। कोरिया आरपी के सभी गैर-सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक के लिए *** यूएस\$/एमटी सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।

पीजेएससी 'एसआईबीयूआर होलिंडग', रूस के लिए सामान्य मूल्य

33. जांच अवधि के दौरान पीजेएससी 'एसआईबीयूआर होलिंडग' ने घरेलू बाजार में 2226.96 एमटी संबद्ध वस्तुओं की बिक्री की जिसका बीजक मूल्य *** आरयूबी हैं। जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में सभी बिक्री असंबद्ध पक्षकारों को की गई थी। सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए निर्यातकों की घरेलू बिक्री पर विचार नहीं किया गया था क्योंकि बिना विशेष निर्देश वाली घरेलू बिक्री उपलब्ध नहीं थी इसलिए उत्पादन की लागत तथा उत्पादक के औचित्यपूर्ण लाभ के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया था। तदनुसार, पीजेएससी 'एसआईबीयूआर होलिंडग' के लिए सामान्य मूल्य *** यूएस\$/एमटी निर्धारित किया गया है।

रूस के असहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रूस के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। रूस के सभी गैर-सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक के लिए निर्धारित *** यूएस\$/एमटी सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।

दक्षिण अफ्रीका में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि दक्षिण अफ्रीका के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। दक्षिण अफ्रीका के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत घरेलू उद्योग की अंतरण लागत तथा औचित्यपूर्ण लाभ के आधार पर *** यूएस\$/एमटी सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।

सिंगापुर में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

36. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सिंगापुर के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। सिंगापुर के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत घरेलू उद्योग की अंतरण लागत तथा औचित्यपूर्ण लाभ के आधार पर *** यूएस\$/एमटी सामान्य मूल्य निर्धारित की है।

2. निर्यात कीमत

मैसर्स पोसको डैवू, सिंगापुर और मैसर्स पोसको डैवू, कोरिया आरपी सहित मैसर्स कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स के लिए निर्यात कीमत

37. मैसर्स कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स ने अपनी असंबद्ध व्यापार कंपनियों नामतः मैसर्स पोसको डैवू, सिंगापुर और मैसर्स पोसको डैवू, कोरिया आरपी सहित प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं। मैसर्स कुम्हो ने भारत में असंबद्ध पक्षकारों को 8398 एमटी संबद्ध वस्तुओं का सीधे निर्यात किया है और पोसको डैवू इंटरनेशनल कारपोरेशन, कोरिया एवं मैसर्स पोसको डैवू इंटरनेशनल, सिंगापुर के जरिए भारत को 1375 एमटी संबद्ध वस्तुओं का निर्यात भी किया है। मैसर्स कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स ने अंतर्राष्ट्रीय भाड़े, समुद्री भाड़े, विदेशी बीमा, बैंक प्रभार, पैकिंग व्यय, पतन व्यय तथा बिक्री कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है और विधिवत् रूप से जांच के पश्चात् उसकी अनुमति दे दी गई है। तथापि, क्रेडिट व्यय की अनुमति नहीं दी गई है। प्रकटन विवरण में क्रेडिट के समायोजन पर उनके दावे पर की गई टिप्पणियों की जांच करने पर प्राधिकारी ने दावा की गई घरेलू और निर्यात बिक्रियों के लिए विभिन्न दरों के बजाए घरेलू और निर्यात बिक्रियों दोनों के लिए व्याज की कम दर पर विचार किया गया है तथा सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों में क्रेडिट व्यय का समायोजन करने की अनुमति दी है। कारखाना बाह्य निर्यात कीमत का पता लगाने के लिए पोसको डैवू के व्यय पर भी विचार किया गया है। तदनुसार, मैसर्स कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स-पोसको डैवू के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य *** यूएस\$/एमटी निर्धारित किया गया है।

मैसर्स वॉनकेम लि. तथा मैसर्स हानसुक केमिकल्स कंपनी लिमिटेड सहित मैसर्स एलजी केम.लि. के लिए निर्यात कीमत

38. मैसर्स एलजी केम.लि. ने अपनी असंबद्ध व्यापार कंपनियों नामतः मैसर्स वॉनकेम लि. और मैसर्स हानसुक केमिकल्स कंपनी लिमिटेडसहित प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं। इन कंपनियों ने उन संबद्ध वस्तुओं जिनका जांच अवधि के दौरान मैसर्स एलजी केम द्वारा निर्माण किया गया था, का निर्यात किया। मैसर्स एलजी केम ने 13,650.84 एमटी पीयूसी का सीधे निर्यात किया तथा मैसर्स वॉनकेम लि. के जरिए 133.30 एमटी तथा मैसर्स हानसुक केमिकल्स कं. के जरिए 133.30 एमटी का निर्यात किया। चूंकि, चीन, पीआर में स्थित मैसर्स हानसुक के ट्रेडर ने ईक्यूआर फाइल नहीं की जिससे प्राधिकारी निवल निर्यात कीमत और हानसुक के जरिए की गई बिक्री के संबंध में पाठन मार्जिन निर्धारित करने को उपयुक्त नहीं पाते।

39. मैसर्स एलजी केम ने अंतर्राष्ट्रीय भाड़े, समुद्री भाड़े, क्रेडिट व्यय, बैंक प्रभार, विदेशी बीमा, सीमा शुल्क, एजेंट फीस और पैकिंग व्यय के कारण समायोजन का दावा किया है और जांच तथा जहाँ आवश्यक है, आवश्यक संशोधन करने के पश्चात् उसकी अनुमति दे दी गई है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने एलजी केमिकल इंडिया प्रा.लि. द्वारा दी गई सेवाओं के कारण उपयुक्त समायोजन किया है। कारखाना बाह्य निर्यात कीमत का पता लगाने के लिए वॉनकेम के व्यय पर भी विचार किया गया है। तदनुसार, एलजी केम-वॉनकेम के लिए भारित औसत निर्यात कीमत *** यूएस\$/एमटी निर्धारित की गई है।

कोरिया, आरपी के गैर-सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया, आरपी के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। कोरिया के सभी गैर-सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक के उत्तर के आधार पर *** यूएस\$/एमटी भारित औसत निर्यात कीमत निर्धारित की है।

मैसर्स एसआईबीयूआर इंटरनेशनल जीएमबीएच सहित मैसर्स पीजेएससी 'एसआईबीयूआर होल्डिंग' के लिए निर्यात कीमत

41. रूस में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक मैसर्स पीजेएससी 'एसआईबीयूआर होल्डिंग' ने अपनी संबद्ध व्यापार कंपनी अर्थात् मैसर्स एसआईबीयूआर इंटरनेशनल जीएमबीएच सहित प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं। मैसर्स एसआईबीयूआर इंटरनेशनल ने जांच अवधि के दौरान निर्यात किया है, भारत ने जांच अवधि के दौरान 184.68 एमटी संबद्ध वस्तुओं (बिना विशेष निर्देश वाली सामग्री), जिसका बीजक मूल्य *** आरयूआर है, की बिक्री की है। उन्होंने अंतर्देशीय तथा विदेशी भाड़ा, समुद्री बीमा के कारण समायोजन का दावा किया है और उसकी अनुमति दे दी गई है। तदनुसार, भारित औसत निर्यात कीमत *** यूएस\$/एमटी निर्धारित की गई है।

रूस के गैर-सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रूस के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। रूस के सभी गैर-सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक के उत्तर के आधार पर *** यूएस\$/एमटी भारित औसत निर्यात कीमत निर्धारित की है।

दक्षिण अफ्रीका में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

43. प्राधिकारी नोट करते हैं कि दक्षिण अफ्रीका के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। दक्षिण अफ्रीका में सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस इनपुट आंकड़ों तथा याचिकादाता द्वारा दावा किए गए अन्य व्यय के आधार पर *** यूएस\$/एमटी भारित औसत निर्यात कीमत निर्धारित की है।

सिंगापुर में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

44. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सिंगापुर के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। सिंगापुर में सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस इनपुट आंकड़ों तथा याचिकादाता द्वारा दावा किए गए अन्य व्यय के आधार पर *** यूएस\$/एमटी भारित औसत निर्यात कीमत निर्धारित की है।

3. पाटन मार्जिन

45. पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए भारत के लिए निर्यात कीमतों की तुलना सामान्य मूल्य से की गई है। संबद्ध देशों से सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन नीचे दी गई पाटन मार्जिन तालिका में दर्शाए अनुसार निर्धारित किया गया है:-

क्र. सं.	देश	उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य (अमरीकी डालर/एमटी)	शुद्ध निर्यात मूल्य (अमरीकी डालर / एमटी)	पाटन मार्जिन (अमरीकी डालर/एमटी)	पाटन मार्जिन%	रेज
1	कोरिया जनवादी गणराज्य	कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड	कुम्हो पेट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	0-5
			मेसर्स पॉस्को देवू कोरिया जनवादी गणराज्य					
			मैसर्स पॉस्को देवू सिंगापुर					
2	कोरिया जनवादी गणराज्य	एलजी केम लि.	एलजी केम लिमिटेड	***	***	***	***	0-5
			वोकेम लिमिटेड					
3	कोरिया जनवादी गणराज्य	अन्य निर्माता / निर्यातक	अन्य निर्माता / निर्यातक	***	***	***	***	15-20
4	रूस	जेएससी "सिवूर हॉलिंग"	एसआईबीआर इंटरनेशनल जीएमबीएच	***	***	***	***	30-35
5	रूस	अन्य निर्माता/निर्यातक	अन्य निर्माता / निर्यातक	***	***	***	***	45-50
6	दक्षिण अफ्रीका	सब	सब	***	***	***	***	0-10
7	सिंगापुर	सब	सब	***	***	***	***	30-40

च. क्षति निर्धारण

घरेलू उद्योग के विचार

46. घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि :-

- क. सम्बद्ध देशों से आयातों के मात्रा वर्ष 2013-24 में बढ़ी, वर्ष 2014-15 में घटी और फिर जांच अवधि में गिरावट आई। याचिकादाता द्वारा नये संयंत्र में उत्पादन आरम्भ कर्ने के कारण वर्ष 2014-15 में गिरावट आई जिसके परिणामस्वरूप उक्त अवधि में आयात मात्रा में कमी आई।
- ख. याचिकादाता को उसकी कीमतों आयात की कीमतों में को पुनर्निर्मित करने के लिए बाध्य किया गया है और ये आयात घरेलू उद्योग की कीमतों को गंभीर रूप से मंदी कर रहे हैं।
- ग. लाभ निवेश पर प्राप्ति और नकद प्रवाह के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन अत्यंत रूप से खराब रहा है।
- घ. घरेलू उद्योग बाजार में याचिकादाता द्वारा जिनकी भी मात्रा बेचने की इच्छा रखता हो, इतनी मात्रा की बिक्री उन कारणों से कर सकता है कि (क) देश में विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग याचिकादाता द्वारा उत्पादित और बिक्री की जा सकने वाले उत्पादों से अधिक है, (ख) घरेलू उद्योग द्वारा पालन की जा रही मूल्य निर्धारण नीति को आयात कीमतों के लिए अपने स्वयं के उत्पादों की कीमतों से जोड़ना है। घरेलू उद्योग, उत्पादों की बिक्री आयात कीमतों की तुलनीय कीमतों में करता है। चूंकि याचिकादाता अपनी कीमतों को आयातित उत्पाद की कीमतों से बेंचमार्क कर रहा है, इसलिए उपभोक्ता घरेलू उद्योग से उत्पाद खरीद रहे हैं। अतः घरेलू उद्योग पर निर्यात का प्रतिकूल प्रभाव नहीं है। तथापि, घरेलू उद्योग की क्षति उस कीमत में है जिस कीमत में देश में उत्पाद की बिक्री के लिए बाध्य किया गया है।
- इ. प्रत्येक देश से निर्यात का तरीका पूरी तरह से उस देश, जहां घरेलू उद्योग की क्षति का संचयी मूल्यांकन स्थापित किया गया है, अमूर्त है। संबंधित देशों के बाजार की हिस्सेदारी के संबंध में, जहां घरेलू उद्योग द्वारा वाणिज्यिकृत नई क्षमताओं दृष्टि से कमी आई वही घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, निवेश पर प्राप्ति और नकद प्रवाह में अत्यंत गिरावट आई और घरेलू उद्योग को वित्तीय हानियां तथा निवेश में नकारात्मक प्राप्ति हुई।
- ज. जबकि घरेलू उद्योग द्वारा कभी दावा नहीं किया गया कि ऐसी स्थिति जहां वह भारतीय आवश्यकता के 58.36% को पूरा कर सकता है, वह घरेलू बाजार की समूची आवश्यकता को पूरा कर सकता है, तब क्षति अवधि के बाद कीमतों को 63% से अधिक कम करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। जबकि कच्चे माल की कीमतों में कमी आई, आपूर्तिकारों को इस गिरावट से अधिक कीमतों को कम करने की कोई अनिवार्यता नहीं है।
- झ. वर्ष 2013-14 तक उत्पाद के निर्यात में वृद्धि हुई और घरेलू उद्योग के नए संयंत्र में व्यवसायिक उत्पादन आरंभ करने के बाद गिरावट आई है। तत्पश्चात् जांच अवधि में पुनः आयातों में वृद्धि हुई।
- ज. याचिकादाता ने पाटन-रोधी नियम के अनुलग्नक-III में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार गैर हानिकारक कीमत की गणना की है और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि ब्यूटाडीन की कीमतें अस्थिर हैं, इस जांच के उद्देश्य के लिए माहवार गैर हानिकारक कीमत की गणना की गई है।
- झ. प्राधिकारी द्वारा आयात माल की उत्तराई मूल्य की गणना पालन की गयी स्थापित प्रक्रिया के अनुसार सीमा शुल्क आंकड़ों में रिपोर्ट किए गए आकलन किए जा सकने वाले मूल्य पर किया गया है।
- ज. याचिकादाता द्वारा की गई गणना उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक क्षति मार्जिन की उपस्थिति को दर्शाती है।
- ट. विश्व बाजार की तुलना में भारत में संबद्ध वस्तुओं के लिए मांग की वृद्धि जांच अवधि में हुई थी। अतः याचिकादाता द्वारा उठाई गई हानि केवल पाठित आयातों के कारण हुई और उसके लिए कोई अन्य कारण नहीं हो सकता।
- ठ. घरेलू उद्योग ने ईयू और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से संबद्ध वस्तुओं के निर्यात के संबंध में जांच और पाटन-रोधी शुल्कों के अधिरोपण के लिए पृथक आवेदन दर्ज किया है।
- ड. घरेलू उद्योग का उत्पादन जांच की अवधि में सबसे अधिक था। अतः संयंत्र के बंद होने का कोई आरोप और परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तुओं की आपूर्ति में कमी किसी योग्यता से रहित है।

- ठ. घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट, लागत में गिरावट से अधिक है और कीमतों में गिरावट बीड़ी कीमतों से गिरावट की प्रकृति का पालन नहीं कर रही है जिससे कि कीमतों में कमी हुई।
- त. क्षमता में 40,000 मी.ट की वृद्धि करने के लिए याचिकादाता के नियोजित पूँजी में 700% से अधिक वृद्धि हुई। याचिकादाता के पास तीन संयंत्र हैं और उसने दावा किया है कि निवेश पर प्राप्ति, दो पुराने संयंत्रों में निवेश के वर्तमान निवल मूल्य पर दिया जाना चाहिए।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

47. इच्छुक पक्षों द्वारा की किए गए निवदेनों को नीचे संक्षेप में दिया गया है:-
- क. रूस से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा स्थिर रही जिसमें वर्ष 2013-14 और 2014-15 के बीच कमी हुई जबकि संबद्ध देशों से कुल निर्यातों में वास्तविक रूप से कमी हो रही है।
- ख. भारत में पीबीआर का घरेलू उत्पादन और खपत की तुलना में रूस से आयातों की मात्रा, घरेलू उद्योग में नकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम नहीं है।
- ग. विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों की मात्रा की उत्पत्ति याचिकादाता के पूरे घरेलू बाजार की मांग को पूरा करने की सक्षमता से संबंधित है।
- घ. याचिकादाता ने अपनी क्षमताओं का विस्तार किया है, जबकि उसके उत्पादन और घरेलू बिक्री में भी वृद्धि हुई है और याचिकादाता अभी भी क्षति दावा कर रहा है।
- ड. संबद्ध देशों ने वर्तमान जांच में किसी भी समय याचिकादाता पर कोई अधिक दबाव नहीं डाला है। याचिकादाता की बाजार की हिस्सेदारी वर्ष 2013-14 के आरंभ से ही निरंतर बढ़ रही है।
- च. पाटित आयातों में संपूर्ण पक्षों अथवा परस्पर उत्पादन के संबंध में अथवा भारत में खपत, में महत्वपूर्ण रूप से कोई वृद्धि नहीं हुई है।
- छ. जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की आयत कीमतों को आधा कर दिया है। पीबीआर कीमतें मुख्यतः उसके मुख्य कच्चा माल, ब्यूटाडीन की कीमतों से प्रभावित होते हैं।
- ज. दक्षिण पूर्वी एशिया क्षेत्र में ब्यूटाडीन की कीमतें भारतीय आयात कीमतों से अधिक महत्वपूर्ण रूप से कम हुआ है।
- झ. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की कीमत की उत्पत्ति हानिकारक पाठन प्रक्रियाओं को नहीं दर्शाता बल्कि केवल बच्चा माल की लागतों की उत्पत्ति को दर्शाता है। यह विश्वव्यापी बाजार में प्रचलित कीमतों के क्रम में है।
- अ. याचिकादाता दावे करता है कि आयातों द्वारा घरेलू कीमतों को कम करना महत्वपूर्ण माना गया है किंतु याचिका में संलग्न गणनाएं दर्शाती हैं कि सभी संबद्ध देशों के लिए कीमतों को 0-10% तक कम करना है।
- ट. तुलना के उद्देश्य के लिए याचिकादाता की लक्ष्य कीमत की पुर्नगणना, याचिकादाता द्वारा निर्मित सामान्य मूल्य को निर्धारित करने के लिए प्रयोग किए गए कार्यप्रणाली के आधार पर किया गया। याचिकादाता की गैर हानिकारक कीमत प्रति टन 1315-1380 यूएसडी होना चाहिए।
- ठ. रूस के आयात की पहुंच कीमत की गणना सीमा शुल्क, शिक्षा शुल्क और आयात पश्चात् लागतों के साथ रूस के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के एम्जिम डाटा बैंक से प्राप्त रूस के पीबीआर कीमतों के आधार पर किया गया। यह 1,358 यूएसडी प्रति टन था। इस आधार पर, कुल कीमत पर बिक्री की मार्जिन न केवल कम हो जाएगा किंतु यह दर्शाया जाएगा कि रूस की आयात कीमतें याचिकादाता के कीमतों को कम कर देगा।
- ड. याचिकादाता के उत्पादन लागत अत्यधिक उच्च है और गैर बाजार कीमतों पर ब्यूटाडीन की कैप्टिव सोर्सिंग उसे विश्व बाजार कीमतों के साथ प्रतिस्पर्धा की अनुमति नहीं देगा जिसके लिए पीबीआर सुसंगत है। याचिकादाता की उत्पादन लागत की ब्यूटाडीन की अंतराष्ट्रीय लागत से तुलना दर्शाता है कि सुविचारित अवधि के दौरान ब्यूटाडीन लागत महत्वपूर्ण रूप से कम हो गयी जबकि उत्पादन लागत स्थिर तथा उच्च स्तर पर भी रही।

- इ. याचिकादाता के अपने उत्पादों की कीमतें रूस अथवा अन्य संबद्ध देशों की कीमतों से काफी अधिक है किंतु ऐसे कीमत की कमी ब्यूटाडीन की बाजार कीमतों से अब तक कम है। यह प्रमाण है कि वास्तव में याचिकादाता ने ब्यूटाडीन की बाजार कीमत के क्रम में पीबीआर की कीमत निर्धारित की है।
- ए. यह आरोप कि याचिकादाता के समक्ष मूल्य निर्धारण नीति है जो कि आयात कीमतों के लिए उसके उत्पादों की कीमतों के साथ जोड़ना है, जांच में सही नहीं पाया जाता क्योंकि भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के एग्जिम डाटा बैंक के माध्यम से उपलब्ध पीबीआर निर्यात संछिकी का विश्लेषण दर्शाता है कि निर्यात बाजार पर याचिकादाता द्वारा दी गई कीमतें, घरेलू बाजार को दी गई कीमतों से काफी कम है।
- त. याचिकादाता की लाभदायिता क्षमता में आगामी निवेश का पालन करते हुए समाप्त हो गई।
- थ. याचिकादाता की लाभदायिता, क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उनके द्वारा किए गए आगामी निवेशों के बाद समाप्त होना आरंभ हो गए।
- द. याचिकादाता इस बात से अवगत होगों कि कच्चे माल की अपर्याप्त कैप्टिव सोर्सिंग से जुड़े उच्च लागत संरचनाओं, इसकी क्षमता पर अहितकर प्रभाव हो सकता है जिससे कि प्रतिस्पर्धा करने के लिए बाजार के ब्यूटाडीन कीमतों के साथ इसकी कीमतों को संरेखित कर सके।
- ध. वर्ष 2013-14 के लिए याचिका के अनुसार याचिकादाता का क्षमता उपयोग 104% है जबकि याचिकादाता की वार्षिक रिपोर्ट दर्शाता है कि ऐसी क्षमता उपयोग 72% थी।
- न. वस्तु क्षति दावा पूर्णतः कम विक्री आँकड़े कीमत, पर आधारित है जो कि न कभी स्थापित हुई है न ही उससे संबंधित प्रदान किए गए व्यौरे में है।
- प. कोरिया ज.गण. और सिंगापुर से आयातित वस्तुओं के मूल्य में कमी पूर्णतः मूल्य व्यापार करार रियायतों के लिए बाध्यकारी है किंतु पाटन के लिए बाध्यकारी नहीं है।
- फ. जब आंकड़े जांच की अवधि में अपनाए गए कैप्टिव इनपुट की हस्तांतरण मूल्य पर आधारित थीं, उत्पादन लागत में अत्यंत तेजी से गिरावट आई, तदनुसार विक्री कीमत में गिरावट आई और हानियां 273 इंडेक्स पाईट हुई जबकि उसे और अधिक स्थिर होना चाहिए था और; जब आंकड़े वित्तीय रिकॉर्ड पर आधारित है, उत्पादन लागत मार्जिन रूप से कम हुआ, विक्री कीमत में अत्यधिक गिरावट हुई और हानियां 138 इंडेक्स पाईट अधिक हो गई। इस प्रक्रिया को समझाया जाना चाहिए क्योंकि यह असत्य और भ्रामक है।
- ब. यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका सहित अन्य देशों से आयातकों के कारण क्षति हुई क्योंकि यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से आयात, समान कीमतों पर भारत में प्रवेश कर रहा है। सिंगापुर और दक्षिण अफ्रिका से उत्पाद की प्रतियूनिटकीमत इन आरोपित पाटन-रोधी स्रोतों की कीमत से बहुत अधिक है।
- भ. घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति याचिकादाता के संयंत्र बंद होने से याचिकादाता के साथ संबद्ध वस्तुओं की कम आपूर्ति के कारण हुई जो कि यह प्रक्रिया समय-समय पर संपर्क के आधार पर 8 बार हुआ है।
- म. बाजार में उपलब्ध ब्यूटाडीन की अधिक आपूर्ति शमन हुए लाभ मार्जिन को बढ़ा रहा है जो कि घरेलू उद्योग के मामले में है।
- य. याचिकादाता द्वारा नई क्षमता में वृद्धि और अनुभव किए गए विश्वव्यापी आर्थिक मंदी विशेषतः चीन में, याचिकादाता द्वारा भिन्न निष्पादन का कारण है, जैसा कि याचिकादाता के वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2015-16 में दर्शाया गया है।
- कक. विचाराधीन उत्पाद के लिए आटोमोबाइल उद्योग से कम मांग, याचिकादाता के कम निष्पादन का दूसरा कारण है, जैसा कि याचिकादाता के वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2015-16 में दर्शाया गया है।
- खख. आयातों की कीमतों में कमी, जो कि प्रचलित है, पीबीआर के सभी निर्यातकों की कीमतों द्वारा प्रमाणित रासायनिक उत्पादों के अवमूल्यन की प्रकृति के कारण है और संबद्ध देशों जो जांच के भाग है, के उत्पादकों और निर्यातकों तक सीमित नहीं है।

- गग. आयातों की उत्तराई मूल्य डीआई की विक्री कीमत से कुछ अधिक रही है। अतः आयातों के लिए कीमतों को जोड़ने के लिए याचिकादाता का तर्क निरर्थक है।
- घघ. कीमत में कटौती करना नकारात्मक है।
- डड. भारतीय खपत के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों में क्षति अवधि के दौरान 10% की वृद्धि हुई।
- चच. यह अस्पष्ट है कि कीमतों का औसत, कीमत को कम करने में नकारात्मक होगी जबकि ग्रेडवार तुलना से यह कीमत समग्र रूप से नकारात्मक कमी होगी। जब याचिकादाता का प्रमुख दावा आयात क्षमता मूल्य निर्धारण है, तो यह स्पष्ट है कि किस प्रकार ग्रेडवार तुलना भी आयात मूल्य संभवतः किस प्रकार याचिका कर्ता की कीमतों को कम कर देगा।
- छछ. याचिकादाता का दावा कि ऐसे क्षमताओं का विस्तार करने के लिए बड़े पैमाने पर ऐसे निवेश की लागत शून्य होती है, स्वीकार करना कठिन है।
- जज. याचिकादाता का दावा कि क्षमता उपयोग में कमी को संदर्भित किया जाना चाहिए क्योंकि क्षमता 95% से अधिक ही रही है और तुलनात्मक प्रवृत्ति वर्ष दर वर्ष क्षमता में वृद्धि के बाबजूद उत्पादन में वृद्धि को दर्शाता है।
- झझ. उत्पादन और घरेलू विक्री एक साथ वृद्धि हुई। उत्पादन क्षमताओं में वृद्धि के अनुरूप रही।
- जज. जब वर्ष 2014-15 में आयात में गिरावट आरंभ हुई तब याचिकादाता ने हानियां उठाना आरंभ किया तत्पश्चात् आगे भी कमी होने के बाबजूद याचिकादाता की हानियों में वृद्धि हुई। इन दोनों के बीच सम्बंध का कोई कारण नहीं है।
- टट. याचिकादाता के लाभ/हानि संबंधी आंकड़ों ने अत्यधिक परिवर्तन दर्शाए हैं तथापि ऐसे परिवर्तनों को याचिकादाता द्वारा दावा किए गए कोई अन्य पैरामीटर से परिलक्षित नहीं किया गया है और याचिकादाता के पूरे आंकड़े अत्यधिक संदेहास्पद हैं।
- ठठ. याचिकादाता जब केवल 30% की मामूली मांग को नियंत्रित करता है तो वह आयात को क्षति पहुंचाने का आरोप नहीं लगा सकता जबकि डीआई स्वयं 60% को नियंत्रित करता है।
- डड. आरओआई -399% से -5% घट गया है और इसी प्रकार की प्रवृत्ति वसूल की गई हानियों से ध्यान देने योग्य है जो स्पष्ट करता है कि वर्ष 2014-15 में याचिकादाता द्वारा आरंभ किए गए नए संयंत्र से उसकी अर्थिक और वृद्धि पैरामीटर में सुधार हुआ है।
- ढढ. याचिकादाता का निष्कर्ष कि अधिकांश आयात संबद्ध देशों से है, क्षति विश्लेषण के लिए संगत है और कानूनी तौर पर असमर्थनीय है।
- णण. याचिकादाता का विक्री की कम कीमत संबंधी निष्कर्ष भ्रामक है क्योंकि उसने एनआईपी पर यह कहने के लिए पुनः भरोसा किया कि आयातों की उत्तराई कीमत समतुल्य रही है। तथापि क्षति मार्जिन, क्षति आकलन करने का कारक नहीं है।
- तत. यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के कारण होने वाली कोई भी क्षति वर्तमान जांच में निर्धारित क्षति को अलग करने की आवश्यकता है।
- थथ. आरआईएल पिछड़ा एकीकृत यूनिट है और कई पेट्रोकेमिकल उत्पादों का उत्पादन करती है और यह कच्चे तेल के स्तर से ही इन उत्पादों में शामिल है। यह देखना प्रासंगिक है कि सभी मध्यवर्ती उत्पाद लाभप्रद हैं या नहीं। संभव है कि रिलायंस इंडस्ट्रीज मध्यवर्ती क्षेत्रों में उच्च लाभ का प्रतिनिधित्व करता है और परियोजनाओं को डाउनस्ट्रीम यूनिटों में नुकसान का अनुमान है। रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा अपनी विनिर्माण इकाइयों को बेचने वाले बटाडियन फाइस्टॉक का स्थानांतरण मूल्य इस शीर्ष के तहत एक कारक और गुणों का मूल्यांकन करता है।
- दद. आयात की मात्रा 2013-14 में ही बढ़ी और क्षति अवधि में गिरावट आई। घरेलू मांग को पूरा करने के लिए निर्माता की अक्षमता की वजह से वृद्धि हुई है, जो 104% क्षमता उपयोग करने और 9.0% से ज्यादा उत्पादन की विक्री के बाबजूद उस वर्ष में लगभग याचिकादाता के उत्पादन को दोगुना कर रहा था। इसके बाद याचिकादाता ने क्षमता का विस्तार किया, आयात में कमी आई और मांग आपूर्ति के अंतर में कमी हुई। हालांकि, मांग काफी अधिक रही है कि जांच अवधि में भी याचिकादाता की क्षमता से अधिक मांग रही है।

- धध. रिलायंस इंडस्ट्रीज के उत्पादन की कीमत के रूप में कोई कीमत मंदी में केवल 16% की गिरावट आई जबकि कच्चे माल की लागत में 50-60% की गिरावट आई और याचिकादाता की बिक्री मूल्य कच्चे माल की कीमत में परिवर्तन को दर्शाता है।
- नन. कच्चे माल की कीमते जैसे वैश्विक कारकों के साथ कीमत मंदी का विश्लेषण किया जाना चाहिए। इससे पता चलता है कि कच्चे माल की लागत में गिरावट और कीमतों में वैश्विक कमी के कारण डीआई में गिरावट आई है। इसलिए आयात से कीमत मंदी नहीं हो रहा है।
- फफ. आधारभूत वर्ष के दौरान कोरिया से आयात 3,1080 मीट्रिक टन से घटकर 25424 मीट्रिक टन हो गया है।
- बब. याचिकादाता की नियोजित पूँजी 700 प्रतिशत से अधिक जो अपरिमेय है और घरेलू उद्योग की क्षति के साथ संबंधित नहीं है और इसकी जांच की जानी चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

48. प्राधिकारी ने हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों को नोट किया है। प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमों के अनुसार और हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई आर्थिक क्षति की जांच की है।

49. पाटन-रोधी नियमावली में प्राधिकारी को मात्रा और कीमत के प्रभाव दोनों की जांच करते हुए क्षति की जांच करने की आवश्यकता होती है। क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और (ख) घरेलू उद्योग पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होती है। पाटित आयातों की प्रमात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना चाहिए कि क्या पाटित आयातों में भारत में उत्पादन अथवा खपत के संपूर्ण पक्षों अथवा पारस्परिक संबंध में महत्वपूर्ण वद्धि हुई है। पाटित आयातों पर कीमतों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना चाहिए कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत के साथ तुलना किए गए पाटित आयातों द्वारा कीमत में महत्वपूर्ण कमी हुई अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों को महत्वपूर्ण स्तर तक कम करना अथवा कीमत की वृद्धि को रोकना जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक हो गया होता।

50. ईयू और यूएसए से आयातों के संबंध में आरंभ में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निष्कर्ष निकाला कि ईयू और यूएसए से आयातों के मामले में पाटन मार्जिन नकारात्मक है। अतः ईयू और यूएसए दोनों को इस पाटन-रोधी जांच में संबद्ध देशों की सूची से हटा दिया गया। तथापि, घरेलू उद्योग ने जांच की विभिन्न अविधि के लिए ईयू और यूएसए से आयातों के संबंध में अलग याचिका दायर की है, जो जांच के अधीन है। प्रकटन विवरण पर कोरिया के निर्यातक, कुमहो द्वारा प्रसूत टिप्पणियों के आधार पर यह पाया गया है कि पाटन मार्जिन 2% से कम है। न्यूनत पाटन मार्जिन को ध्यान में रखते हुए उनके खिलाफ पाटन-जांच को समाप्त कर दिया गया है और यह पाया गया है कि कोरिया से समसूत आयात गैर-पाटित हैं, इसलिए कोरिया जनवादी गणराज्य के खिलाफ भी पाटन-जांच को समाप्त कर दिया गया है। इस प्रकार इस जांच में संबद्ध देशों में केवल दक्षिणी अफ्रीका, रूस और सिंगापुर शामिल हैं।

छ. संचयी आकलन

51. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध- II के पैरा (iii) में यह उपबंध है कि यदि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के हुए आयात के साथ-साथ पाटन-रोधी जांच की जा रही है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी उस स्थिति में ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण करेंगे जब वह यह निर्धारित करें कि:-

- (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयात की मात्रा समान वस्तु के आयात की मात्रा की 3 प्रतिशत से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयात के साथ सबसे अधिक बनता है; तथा
- (ख) आयातित वस्तु एवं समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के मद्देनजर आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।

52. वर्तमान मामले में, प्रत्येक संबद्ध देशों से पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है: प्रत्येक संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है; और संबद्ध देशों से निर्यात प्रत्यक्ष रूप से भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए समान वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा करती है। आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन आयातित

उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों और आयातित उत्पादों तथा समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के प्रकाश में उपयुक्त है। अतः प्राधिकारी ने पाटित आयातों के प्रभाव को संचयी आकलन किया है।

क्षति की जांच और कारणात्मक संबंध

53. पाटन-रोधी नियमों के अनुबंध || के संगत भाग में यह दिया गया है कि संबंधित घरेलू उद्योग में पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों का मूल्यांकन, उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सूचकांक, विक्री लाभ, आउटपुट, बाजार की हिस्सेदारी, उत्पादकता, निवेश पर प्रतिलाभ अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक और संभावित कमी; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की प्रमात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, माल सूचियां, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश बढ़ाने की क्षमता शामिल है।

54. नियमों के अनुसार, घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सभी आर्थिक मापदंड जैसा कि उल्लिखित है, की निम्नानुसार जांच की गई है:-

ज. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

मांग का निर्धारण/ प्रत्यक्ष खपत

55. भारत में उत्पाद की मांग अथवा प्रत्यक्ष खपत घरेलू विक्री और सभी न्योतों से आयातों का योग है। भारतीय उत्पादकों द्वारा किए गए निर्यातों को प्रत्यक्ष खपत सुनिश्चित करने के लिए परिकलन से निकाल दिया गया है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की विक्री	मीट्रिक टन	77,354	77,403	1,00,901	1,09,646
सम्बद्ध देशों से आयात	मीट्रिक टन	6,324	12,224	7,874	15,996
अन्य देशों से आयात	मीट्रिक टन	54,387	65,080	53,192	47,580
कुल मांग / खपत	मीट्रिक टन	1,38,065	1,54,736	1,61,966	1,73,224

56. यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान मांग में लगातार वृद्धि हुई है।

संबद्ध देशों से आयात की मात्रा

57. नीचे दी गई तालिका संबद्ध देशों से आयातों को दर्शाती है।

विवरण	इकाई	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
सम्बद्ध देशों से आयात मात्रा					
रूस	मीट्रिक टन	6,017	12,152	6,069	9,105
दक्षिण अफ्रीका	मीट्रिक टन	307	101	1,536	3,472
सिंगापुर	मीट्रिक टन	-	-	269	3,420
सम्बद्ध देशों का योग	मीट्रिक टन	6,324	12,225	7,874	15,998

58. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयातों की मात्रा अत्यधिक नहीं हैं और ये गैर-पाटित आयातों की मात्रा से अत्यधिक कम है। रूस, सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका से आयातों का हिस्सा, कुल आयातों का 25.16% बनता है। इस प्रकार पाटित आयात घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं हो सकते हैं।

कुल आयातों के संबंध में आयात

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि गैर-पाटित आयातों की मात्रा की तुलना में पाटित आयात अत्यधिक कम हैं। रूस, सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका से आयातों का हिस्सा, कुल आयातों का 25.16% बनता है। चूंकि पाटित आयात शेयर के मांग में 9.24% और उत्पादन में 14.29% मात्र ही बनते हैं, इसलिए ऐसी छोटी मात्रा घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं हो सकती है।

विवरण	इकाई	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
सम्बद्ध देशों से आयात					
रूस	मीट्रिक टन	6,017	12,152	6,069	9,105
दक्षिण अफ्रीका	मीट्रिक टन	307	101	1,536	3,472
सिंगापुर	मीट्रिक टन	-	-	269	3,420
कुल आयात	मीट्रिक टन	6,324	12,225	7,874	15,998
कुल आयात में सम्बद्ध देशों से पाठित आयात का भाग	%	10.42%	15.85%	12.89%	25.16%
अन्य देशों से आयात	मीट्रिक टन	54,387	65,080	53,192	47,580
कुल आयात	मीट्रिक टन	60,711	77,333	61,066	63,578

भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में आयात

विवरण	इकाई	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
संबंधित देशों से आयात के संबंध में:					
भारतीय उत्पादन	मीट्रिक टन	77,070	80,756	1,01,399	1,11,985
भारतीय खपत	मीट्रिक टन	1,38,065	1,54,736	1,61,966	1,73,224
संबद्ध देशों से आयात	मीट्रिक टन	6,324	12,225	7,874	15,998
कुल आयात	मीट्रिक टन	60,711	77,333	61,066	63,578
खपत में आयात का हिस्सा	%	4.58%	7.92%	4.86%	9.24%
उत्पादन में आयात का हिस्सा	%	8.21%	15.17%	7.76%	14.29%

60. उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी में वर्ष 2013-14 में वृद्धि हुई और तत्पश्चात् याचिकादाता द्वारा नए संयंत्र में उत्पादन आरंभ करने से गिरावट आई तथा जांच अवधि में उसमें दुबारा वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू बाजार में कीमत को प्रभावित करने के लिए यह तुच्छ है।

झ. पाठित आयातों की कीमत का प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

61. कीमतों पर पाठित आयातों के प्रभाव के संबंध में, निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाठित आयातों द्वारा कीमतों को कम करके कीमत महत्वपूर्ण रही है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों को महत्वपूर्ण अंश तक कम करने अथवा कीमतों में वृद्धि को रोकने, जो एक महत्वपूर्ण अंश तक बढ़ सकती थी, के लिए है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण घरेलू उद्योगों की कीमतों के प्रभाव की जांच, कीमतों कटौती होने, कम कीमतों पर बिक्री होने, कीमत ह्लास और कीमत न्यूनीकरण होने के संदर्भ में की गई है।

पाठित आयातों के कीमतों को कम करने का प्रभाव

62. कीमतों में कटौती का विश्लेषण करने के उद्देश्य से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत से की गई है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का परिकलन करते समय सभी करों, रियायतों, छूटों और कमीशनों की कटौती की गई है तथा पूर्व कार्यस्तर पर बिक्री वसूली का निर्धारण, पाठित आयातों के पहुंच मूल्य के साथ तुलना करने के लिए किया गया है। इसके अतिरिक्त, पीबीआर के विभिन्न ग्रेड की लागतों और कीमतों में महत्वपूर्ण अंतर को ध्यान में रखते हुए, कीमत कटौती का निर्धारण, पीबीआर के तुलनीय ग्रेड पर विचार करते हुए किया गया है। तदनुसार, संबद्ध देशों से पाठित आयातों के कीमत कटौती के प्रभाव निम्नलिखित रूप से बनते हैं।

63. यह देखा गया है कि दक्षिण अफ्रीका और रूस के मामले में कीमत कटौती नकारात्मक है।

विवरण	यूनिट	कोबाल्ट	एनडीबीआर	निकल	औसत
निवल बिक्री प्राप्ति	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***

सम्बद्ध देश						
पहुंच कीमत	रूपये/मीट्रिक टन	84,307	87,722			87,712
कीमत कटौती	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***	***
कीमत कटौती %	%	0-10	0-10	(0-10)	(0-10)	(0-10)
रूस						
पहुंच कीमत	रूपये/मीट्रिक टन	-	86,104	-		86,104
कीमत कटौती	रूपये/मीट्रिक टन		***			***
कीमत कटौती %	%		(0-10)			(0-10)
दक्षिण अफ्रीका						
पहुंच कीमत	रूपये/मीट्रिक टन	-	96,363	-		96,363
कीमत कटौती	रूपये/मीट्रिक टन		***			***
कीमत कटौती %	%		(0-10)			(0-10)
सिंगापुर						
पहुंच कीमत	रूपये/मीट्रिक टन	84,307	83,196			83,211
कीमत कटौती	रूपये/मीट्रिक टन	***	***			***
कीमत कटौती %	%	0-10	5-15			0-10

कम कीमत पर विक्री

64. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर विक्री क्षति के आकलन का महत्वपूर्ण सूचक है। क्षतिरहित कीमत (एमआईपी) तय की गई है और उसकी तुलना, संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य के साथ की गई, ताकि कम कीमत पर विक्री होने की सीमा तय की जा सके। विचाराधीन उत्पाद की क्षति रहित कीमत का निर्धारण, जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत के संबंध में सत्यापित जानकारी/ आंकड़े को अपना कर किया गया है, जैसा कि पाठन-रोधी नियम के अनुबंध ||| में निर्धारित किया गया है। घरेलू उद्योग की सत्यापित सूचना के आधार पर भारित औसत क्षति रहित कीमत तय की गई है और क्षति का परिकलन करने के लिए प्रत्येक संबद्ध देश से पहुंच मूल्य के साथ तुलना करने के लिए उस पर विचार किया गया है। विश्लेषण दर्शाता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध आयातों का पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमतों से कम है, जिसे नीचे तालिका में देखा जा सकता है, जिसमें कम कीमत पर विक्री के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाया गया है।

क्रमांक	निर्माता/निर्यातक	क्षति रहित कीमत	पहुंच मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन
		अमरीकी डालर/ मीट्रिक टन	अमरीकी डालर/ मीट्रिक टन	अमरीकी डालर/ मीट्रिक टन	%	% सीमा
कोरिया जनवादी गणराज्य						
1	मैसर्स कुम्हे पेट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड	कुम्हे पेट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	15-25
		मैसर्स पॉस्को देवू, कोरिया जनवादी गणराज्य				
		मैसर्स पॉस्को देवू, सिंगापुर				
2	एलजी केम लिमिटेड	मैसर्स एलजी केम लिमिटेड	***	***	***	20-30
		मैसर्स वॉनचेम लिमिटेड				
3	सभी उत्पादक	सभी निर्यातक	***	***	***	25-35

रूस							
4	पीजेएससी "सिबू हॉलिंग"	सिबू इंटरनेशनल जीएमबीएच	***	***	***	***	55-65
5.	सभी उत्पादक	सभी नियांतक	***	***	***	***	145-155
दक्षिणाफ्रीका							
6	सभी उत्पादक	सभी नियांतक	***	***	***	***	10-20
सिंगापुर							
7	सभी उत्पादक	सभी नियांतक	***	***	***	***	30-40

कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

65. पाटित आयातों की कीमत ह्रास/न्यूनीकरण के प्रभाव की जांच भी घरेलू उद्योग की निवल विक्री प्राप्ति तथा उत्पादन लागत की प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर की गई है तथा उसकी तुलना पाटित आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
विक्री लागत	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	99	84
विक्री कीमत	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	76	61	49
पहुंच मूल्य	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	78	69	51

66. यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान आयातों की पहुंच कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है। कीमतों में गिरावट के परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग की विक्री कीमत में भी क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आई है। यहां तक कि उत्पादन लागत में भी उक्त अवधि के दौरान गिरावट आई है और कीमतों में गिरावट, लागत में गिरावट से अधिक है। इसको ध्यान में रखते हुए पहुंच मूल्य ऐसी स्थिति में नहीं हो सकता है कि उसके काधर उद्योग की घरेलू विक्री कीमत प्रभावित हो सके।

अ. घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक प्राचल

67. नियम के अनुबंध II में यह दिया गया है कि क्षति का निर्धारण करने के लिए प्राधिकरी को संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के वस्तुपरक जांच को शामिल करना चाहिए। नियम के अनुबंध II (iv) के संगत भाग को निम्नलिखित रूप में दिया गया है:

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में विक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाठन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूँजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा।"

(1) उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और विक्रियां

68. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और विक्रियां निम्नलिखित तालिका में दी गई है:-

विवरण	इकाई	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
क्षमता	मीट्रिक टन	78,000	78,000	1,08,000	1,18,000

उत्पादन	मीट्रिक टन	77,070	80,756	1,01,399	1,11,985
क्षमता उपयोग	%	99%	104%	94%	95%
घरेलू विक्री	मीट्रिक टन	77,354	77,403	1,00,901	1,09,646
निर्यात विक्री	मीट्रिक टन	89	159	1,555	6,024

69. यह देखा गया है कि :-

- (क) घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षमता में वृद्धि की है। उत्पाद की मांग बढ़ गई है और घरेलू उद्योग की क्षमता मौजूदा मांग से कम थी।
- (ख) क्षति की अवधि में घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है।
- (ग) जांच अवधि में घरेलू उद्योग 95% प्रचालन कर रहा था।
- (घ) उत्पादन और विक्रियों दोनों क्षेत्रों में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है।

(2) लाभप्रदता निवेश पर प्रतिलाभ और नकद लाभ

70. क्षति की अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, निवेश पर प्रतिलाभ और नकदी प्रवाह निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
विक्री लागत	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	99	84
विक्रय मूल्य	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	76	61	49
लाभप्रदता	रूपये/मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	27	(33)	(38)
घरेलू विक्री पर पीबीटी	लाख रूपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	27	(43)	(54)
पीबीआईटी	लाख रूपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	27	(43)	(53)
नकद लाभ	लाख रूपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	29	(26)	(34)
लागत पर लाभ	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	400-500	50-60	(25-35)	(30-40)

71. यह देखा गया है कि:

- (क) क्षति अवधि में घरेलू विक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है।
- (ख) निवेश पर प्रतिलाभ और नकदी प्रवाह की लगभग वही प्रवृत्ति रही है, जो कि लाभ की प्रवृत्ति है। क्षति अवधि में निवेश पर प्रतिलाभ और लाभ में गिरावट आई है।

(3) मांग में बाजार का हिस्सा

72. विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग में घरेलू उद्योग के बाजार का हिस्सा नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है -

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की विक्री	मीट्रिक टन	77,354	77,403	1,00,901	1,09,646
सम्बद्ध देशों से आयात	मीट्रिक टन	6,324	12,224	7,874	15,996

अन्य देशों से आयात	मीट्रिक टन	54,387	65,080	53,192	47,580
कुल मांग / खपत	मीट्रिक टन	1,38,065	1,54,736	1,61,966	1,73,224
मांग में हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	56.03%	50.02%	62.30%	63.30%
सम्बद्ध देश	%	4.58%	7.92%	4.86%	9.24%
अन्य देश	%	39.39%	42.06%	32.84%	27.47%
कुल	%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

73. यह देखा गया है कि मांग में घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से में सुधार हुआ है और यह 63.30% के प्रभावी स्तर पर है, जो कि बाजार पर नियंत्रण रखने के लिए पर्याप्त है। तथापि, पाटित आयातों का हिस्सा मात्र 9.24% बनता है, जो कि घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं हो सकता है।

(4) रोजगार, उत्पादकता और वेतन

74. क्षति की अवधि में रोजगार, उत्पादकता और वेतन को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	97	97	97
वेतन	लाख रुपए में	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	92	107	114
उत्पादकता					
प्रति दिन	मीट्रिक टन/दिन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	105	132	145
प्रति कर्मचारी	मीट्रिक टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	108	135	150

(5) मालसूचियां

75. क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की मालसूची संबंधी स्थिति नीचे तालिका में दी गई है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
औसत सूची	मीट्रिक टन	***	***	***	***
ट्रेंड	सूचीबद्ध	100	190	375	340

76. यह देखा गया है कि जांच अवधि में मालसूचियों में वृद्धि हुई है। इसी अवधि में उत्पादन की मात्रा के कारण मालसूचियों के स्तर में वृद्धि हुई है।

(6) संवृद्धि

77. मात्रा के प्राचलों के संबंध में घरेलू उद्योग की संवृद्धि सकारात्मक थी। तथापि, मुख्यतया लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिलाभ के संबंध में कीमत प्राचलों में संवृद्धि प्रतिकूल रही है।

(7) पूँजी निवेश को बढ़ाने की क्षमता

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में उत्पाद की बढ़ती मांग को देखते हुए, घरेलू उद्योग ने क्षमता संवर्धन किया है। तदनुसार, उत्पादन और विक्रियों दोनों की मात्रा में वृद्धि है, लेकिन लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिलाभ में गिरावट आई है।

(8) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

79. संबद्ध देशों और अन्य देशों से आयात कीमतों, पर विचार, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा ऐसे कारक जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं, यह दर्शाते हैं।

कि घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, बुनियादी कच्चा माल अर्थात् व्यूटाडीन की कीमत और संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य हैं। आयातों के कारण कीमत में कटौती नहीं हो रही है, बल्कि भारतीय बाजार में पाइट आयातों के कारण कीमत में कटौती हो रही है। संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से अत्यधिक कम है। क्षति अवधि के दौरान उत्पाद की मांग ने महत्वपूर्ण वृद्धि दर्शाई है। मात्रा में क्षति का पता नहीं चलता है क्योंकि लगभग 95% क्षमता उपयोग के साथ उत्पादन और विक्रियों दोनों में वृद्धि हुई है।

(9) पाटन और पाटन मार्जिन का स्तर

80. यह देखा गया है कि पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से अधिक है, किंतु महत्वपूर्ण भी है।

कारणात्मक संबंध

81. प्राधिकारी ने इसकी जांच की है कि क्या पाटन-रोधी नियमों के तहत सूचीबद्ध अन्य कारक भी घरेलू उद्योग के क्षति के कारण हो सकते हैं। पाटन और घरेलू उद्योग की आर्थिक क्षति के बीच कारणात्मक संबंध होने की जांच निम्नानुसार है:

(क) पाइट कीमतों पर बिक्री नहीं किए गए आयातों की मात्रा और मूल्यः

82. संबद्ध देशों से आयातों के संबंध में, यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से न्यूनतम सीमाओं से अधिक आयातों की रिपोर्ट की गई है। घरेलू उद्योग ने इन आयातों के संबंध में प्राधिकारी के समक्ष एक अलग याचिका दायर की है जो कि जांच के अधीन है। अन्य सभी स्रोतों से आयात, न्यूनतम सीमाओं से अलग गैर पाइट कीमत से कम है। चूंकि याचिकादाताओं द्वारा प्रस्तुति में संयुक्त अरब अमीरात से संबद्ध वस्तुओं के पोतांतरण के संबंध में ऐसे प्रमाण यह स्थापित नहीं किया जा सका कि संयुक्त अरब अमीरात से आने वाली वस्तुएं ईरान में उत्पादित की जा रही हैं। इसलिए कुल आयातों में ईरान के भाग की गणना करते समय प्राधिकारी ने संयुक्त अरब अमीरात से आयातों की मात्रा को अलग कर दिया है। संयुक्त अरब अमीरात पोतांतरण को छोड़कर ईरान का भाग 3 प्रतिशत से कम है अतः प्राधिकारी ने ईरान के विरुद्ध को जांच को समाप्त कर दिया। तथापि कुल आयातों में ईरान का भाग 3 प्रतिशत से अधिक और पाइट कीमतों पर है, प्राधिकारी यूएई के विरुद्ध जांच नहीं कर सकता क्योंकि जांच कभी संयुक्त अरब अमीरात के विरुद्ध आरंभ नहीं की गई थी।

83. प्रकटन विवरण पर कोरिया के नियांतक, कुम्हो द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियों के आधार पर यह पाया गया है कि पाटन मार्जिन 2% से कम है। न्यूनत पाटन मार्जिन को ध्यान में रखते हुए उनके खिलाफ पाटन-जांच को समाप्त कर दिया गया है और यह पाया गया है कि कोरिया से समस्त आयात गैर-पाइट हैं, इसलिए कोरिया जनवादी गणराज्य के खिलाफ भी पाटन-जांच को समाप्त कर दिया गया है। इस प्रकार इस जांच में संबद्ध देशों में केवल दक्षिणी अफ्रीका, रूस और सिंगापुर शामिल हैं।

84. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाइट आयातों की मात्रा अत्यधिक नहीं है और यह केवल अपाइट आयातों से अत्यधिक कम है। रूस, सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका से आयात में हिस्सेदारी का मतलब है कि कुल आयात का 25.16% चोट का कारण नहीं हो सकता है। इन देशों से कीमत में कटौती नकारात्मक है, जिससे पता चलता है कि यह कीमत ह्वास का कारण नहीं है, जैसा कि याचिकादाता ने दावा किया है। प्रकटन विवरण पर हितवद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई टिप्पणियों की जांच करने पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, लेकिन प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि इन पाइट आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है। साथ ही प्राधिकारी का यह भी निष्कर्ष है कि वर्तमान जांच में कारणात्मक संबंध दिखाई नहीं देता है क्योंकि पाइट आयात, पर्याप्त रूप से गैर-पाइट आयातोंसे कम हैं।

(ख) मांग में संकुचन

85. विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग ने क्षति अवधि के दौरान लगातार वृद्धि दर्शाई है। इसलिए मांग में संभावित संकुचन, घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाली कारक नहीं हो सकती है।

(ग) खपत के पेटर्न में परिवर्तन

86. खपत के पेटर्न में परिवर्तन का कोई आरोप नहीं है। उत्पाद के संबंध में खपत के पेटर्न में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। खपत के पेटर्न में संभावित परिवर्तन, घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं हो सकता है।

(घ) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंधित प्रक्रियाएं और समाप्त

87. व्यापार प्रतिबंधित प्रक्रियाओं पर कोई आरोप नहीं है। यह देखा गया है कि कोई ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधित पद्धति

नहीं है, जो कि घरेलू उद्योग की क्षति का कारण हो सकती है।

(ङ) प्रौद्योगिकी विकास

88. उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में सामग्री परिवर्तन का कोई प्रमाण नहीं है। अतः प्रौद्योगिकी में संभावित विकास, क्षति का कारक नहीं है।

(च) निर्यात निष्पादन

89. यह देखा गया है कि याचिकादाता ने क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। तथापि, क्षति अवधि के दौरान निर्यात की मात्राओं में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई गए क्षति को घरेलू प्रचालनों के लिए अलग कर दिया गया है। दावा की गई घरेलू बिक्रियों की क्षति के लिए निर्यातों पर आरोप नहीं लगाया जा सकता है।

(छ) उद्योग द्वारा उत्पादन तथा बिक्री किए जा रहे अन्य उत्पादों का निष्पादन

90. यह देखा गया है कि याचिकादाता द्वारा दावा की गई क्षति विचाराधीन उत्पाद के कारण है। यह घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित किसी अन्य उत्पाद के कारण नहीं है। केवल विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच की गई है। जिसे संबंधित पैरा में पेश किया गया है।

कारणात्मक संबंध स्थापित करने वाले कारक

91. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन का विश्लेषण दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है पर कुछ मानदंडों लेकिन विषय देशों से पाटित के आयात के कारण ऐसा नहीं है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच आकस्मिक संबंध को निम्नलिखित आधार पर सिद्ध किया गया है।

- (क) संबद्ध देशों से कीमतें, घरेलू बिक्री कीमतों से अधिक हैं और ये घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती नहीं कर रही हैं।
- (ख) लाभ, नियोजित पूँजी पर प्रतिलाभ और नकद लाभ में गिरावट, पाटित आयातों के कारण नहीं हो सकती है।
- (ग) घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों को निर्धारित करने का कारक ब्यूटाडीन की कीमत और आयात कीमत है। जबकि ब्यूटाडीन की कीमतों में कमी के कारण उत्पादन लागत में भी कमी आई, किंतु बिक्री कीमत में कमी, ब्यूटाडीन की कीमत में कमी से अधिक है। पाटित आयातों में छोटा हिस्सा, घरेलू उद्योग की कीमत निर्धारित नहीं कर सकता है।
- (घ) घरेलू उद्योग की कीमत में हास, संबद्ध देशों से पाटन के कारण नहीं हुआ है और क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आने का कारण नहीं है।

ट. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

92. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादिक संबद्ध वस्तुओं की निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना, जांच अवधि के दौरान क्षति निर्धारण के लिए संबद्ध देश से निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	उत्पादक/निर्यातक	क्षति रहित कीमत	पहुंच कीमत	क्षति मर्जिन	क्षति मर्जिन	क्षति मर्जिन
		अमरीकी डालर/मीट्रिक टन	अमरीकी डालर/मीट्रिक टन	अमरीकी डालर/मीट्रिक टन	%	% सीमा
कोरिया जनवादी गणराज्य						
1	कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड	कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड एम / एस पोस्को देवू, कोरिया जनवादी गणराज्य	***	***	***	*** 15-25

		एम / एस पोस्को देवू, सिंगापुर					
2	एलजी रसायन लिमिटेड	एम / एस एलजी रसायन। लिमिटेड	***	***	***	***	20-30
		एम / एस वानकेम लिमिटेड					
3	सभी उत्पाद	सभी निर्यातिक	***	***	***	***	25-35
रूस							
4	पीजे एसी "सीबुर होल्डिंग"	सिबूर अंतर्राष्ट्रीय गीएमबीएच	***	***	***	***	55-65
5.	सभी उत्पादक	सभी निर्यातिकों	***	***	***	***	145-155
दक्षिण अफ्रीका							
6	सभी उत्पादक	सभी निर्यातिक	***	***	***	***	10-20
सिंगापुर							
7	सभी उत्पादक	सभी निर्यातिक	***	***	***	***	30-40

ठ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण पश्चात् निवेदन

93. प्राधिकारी ने इस परिणाम में संबद्ध पैराओं में प्रकटन पश्चात् टिप्पणियों की उपयुक्त जांच की है, जो परवर्ती जांच में दोहराई नहीं गई है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों का समाधान निम्नानुसार किया गया है:

ठ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

- (क) याचिकादाता ने अनुरोध किया है कि सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत, वास्तविक पाटन मार्जिन और निर्यातों को जारी की गई सत्यापन रिपोर्टों और क्षति रिहत कीमत का प्रकटन किया जाए, जिनका प्रकटन, प्रकटन विवरण में नहीं किया गया है। पाटन शुल्क पर शुल्क के रूप में वास्तविक पाटन मार्जिन का प्रकटन किया जाना चाहिए। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के निर्धारण करने से संबंधित अपनाए गए आधार का उल्लेख नहीं किया गया है।
- (ख) निर्यातकों की सत्यापन रिपोर्ट ऐसे दस्तावेज हैं, जिन्हें प्राधिकारी द्वारा सूचित किया गया है और ये प्रकटन विवरण के समान हैं। इसलिए इनका प्रकटन किया जाना चाहिए तथा गोपनीय सूचना को *** के रूप में चिन्हित किया जा सकता है। निर्यातकों के साथ किए गए पत्राचार और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तरों का प्रकटन किया जाना चाहिए।
- (ग) एलजी केम और कुमहो में बुटाडीन की खपत का आधार। अनेक व्यापारिक जर्नलों द्वारा बुटाडीन की कीमतों की घोषणा आवधिक आधार पर की जाती है और इसलिए ये सभी उत्पादकों और सभी उपभोक्ताओं को अच्छी तरह से ज्ञात होती हैं। वस्तुतः व्यापारिक जर्नलों में घोषित कीमतों पर अत्यधिक कारोबार होता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संबद्ध देश में उत्पादक केवल इन अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर बुटाडीन अधिप्राप्त कर रहे हैं।
- (घ) प्राधिकारी द्वारा एसबीआर मामले में एलजी केम बुटाडीन की कीमतों को खारिज कर दिया गया था। प्रकटन विवरण से यह स्पष्ट नहीं है कि प्राधिकारी ने वर्तमान जांच में एलजी बुटाडीन के लिए कौन सी विधि लागू की है।
- (ङ) याचिकादाता द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन की पूर्णतया अनदेखी की गई है। प्रकटन विवरण में प्राधिकारी ने बुटाडीन की लागत के बारे में जांच की कार्रवाई के दौरान याचिकादाता द्वारा उठाए गए किसी भी मुद्दे का उल्लेख नहीं किया है।
- (च) प्रकटन विवरण से यह स्पष्ट नहीं होता है कि प्राधिकारी ने ग्रेड-वार क्षति रहित कीमत और सीएनवी अथवा एकल भारित औसत क्षति रहित कीमत और सीएनवी का निर्धारण किया है।
- (छ) कुमहो पेट्रोकेमिकल्स ने एक ऐसे निर्यातिक के लिए वस्तुओं के बीजक बनाए हैं जिसने बाद में उन्हें भारतीय बाजार में बेचा है। ऐसी निर्यातिक कंपनियों द्वारा किए गए व्यय के संबंध में समायोजन किए जाने की आवश्यकता है और

लाभ को घटाने की आवश्यकता है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि ऐसे निर्यातकों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विक्री व्यय, एसजीए, ब्याज और लाभ को निर्धारित निर्यात कीमत में से नहीं घटाया गया है। इसलिए निर्धारित निर्यात कीमतको निर्यातकों के व्यय और लाभ से बढ़-चढ़ा कर बताया गया है। इससे पाटन मार्जिन घटा है।

- (ज) एलजी केम लिमिटेड ने यह प्रकटन नहीं किया है कि भारत में उनकी एक सहायक कंपनी है। एलजी केम लिमिटेड भारत में विचाराधीन उत्पाद का विपणन कर रही है। इस तथ्य को उसने स्वतः छिपाया है, जिसके कारण उसके उत्तर को सीधे खारिज किया जा सकता है।

ठ.2 निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

- (क) एनडीबीआर ग्रेड को बाहर रखा जाना चाहिए क्योंकि यह याचिकादाता के कुल उत्पादन का केवल 2% भाग बनता है। इसके अतिरिक्त 2% भाग यह दर्शाता है कि केवल जांच बैच का उत्पादन किया गया है और न कि समस्त वाणिज्यिक बैच का उत्पादन किया गया है। एनडीबीआर तकनीकी दृष्टि से निकल और पीबीआर के कोबेल्ट केटेलिस्ट ग्रेड से विशिष्ट है। जब एनडीबीआर को प्रयुक्त किया जाता है, तो यह बेहतर रोलिंग प्रतिरोधी क्षमता प्रदान करता है और इसलिए यह अधित पर्यावरण अनुकूल है। यह टायर विनिर्माताओं को उसका विकास करने की छवि के साथ मानकों को पूरा करने देता है। इस उत्पाद की मांग उत्पादन से अधिक है। याचिकादाता अपने एक यूनिट में एनडीबीआर का उत्पादन करने में सक्षम है। यहां तक कि यदि याचिकादाता के उत्पाद को ग्राहकों द्वारा अनुमादित कर दिया जाता है, तो वह अधिक उत्पादन लागत पर उसका उत्पादन करने में सक्षम होगा क्योंकि याचिकादाता की उत्पादकता तब प्रभावित होती है, जब उक्त विशिष्ट यूनिट में स्विंग लाईन को प्रयुक्त किया जाता है। इसलिए मांग को पूरा करने के लिए संबद्ध वस्तुओं का ऐसा आयात करने के परिणामस्वरूप घरेलू मांग और देशीय आपूर्ति की बीच अंतर और अधिक होगा।
- (ख) याचिकादाता का एनबीडीआर का उत्पादन, उसके उत्पादन के 2% भाग तक सीमित है। इसलिए ऐसा कोई उचित दावा नहीं किया जा सकता है कि संबद्ध देश से एनडीबीआर के आयातों के कारण याचिकादाता को आर्थिक क्षति हुई है। जांच के दायरे में एनडीबीआर को शामिल करना, आयातों और प्रयोक्ताओं पर अनुचित भार होगा क्योंकि ऐसा पता चलता है कि याचिकादाता किसी भी उचित तरीके से बाजार में एनडीबीआर की आपूर्ति करने में असमर्थ होगा।
- (ग) अन्य देशों के साथ कोरिया से आयातों का संचयन, कानूनी रूप से इसलिए तर्कसंगत नहीं है क्योंकि संचयन की शर्तें वर्तमान जांच में पूरी नहीं होती हैं। कोरिया की मुख्यतया दो कंपनियों से उत्पाद का आयात किया जा रहा है। इसलिए यदि कोरिया की औसत निर्यात कीमत के संबंध में पाटन मार्जिन परिकलित किया जाता है, तो पाटन मार्जिन 2% से कम होगा। कोरिया जनवादी गणराज्य से आयातों के कारण क्षति का निर्धारण, विशिष्टतः पृथक रूप से किया जाना चाहिए।
- (घ) आरोपित पाटित आयात, कुल आयातों का 41.24% भाग बनते हैं, जब कि गैर-पाटित स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं के आयात 58.76% भाग बनते हैं। कारणात्मक संबंध मलिन हो गए हैं और टूट गए हैं क्योंकि यह पूर्णतया अनुचित है कि अकेले 40% आयातों को क्षति का कारण माना जाए, जब कि आयातों के लगभग 60% भाग की किसी भी क्षति के लिए पूर्णतया अनदेखी कर दी जाए। पाटित आयातों से कीमत, गैर-पाटित स्रोतों की कीमतों से अधिक है।
- (ङ) सभी वर्षों के लिए पाटित और गैर-पाटित आयातों को पृथक करने के बाद क्षति का निर्धारण किया जाना चाहिए तथा घरेलू उद्योग के निष्पादन पर पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाना चाहिए। तथापि, प्राधिकारी का कीमत ह्रास/कीमत न्यूनीकरण का सरल निर्धारण पूर्णतया निराधार है। याचिकादाता को हुए घाटों और समग्र रूप से आयातों अथवा प्रासंगिक रूपों में आयातों की मात्रा के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।
- (च) प्राधिकारी को यह नोट करना चाहिए कि कीमत कटौती के नकारात्मक मार्जिन को ध्यान में रखते हुए संबद्ध देशों से पाटित आयातों के मूल्य भी याचिकादाता की लाभप्रदता और संबंधित प्राचलों को प्रभावित नहीं कर सकते हैं।
- (छ) मांग में बाजार के हिस्से के संबंध में प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के बजाए संबद्ध देशों से सभी आयातों पर विचार किया है।

- (ज) माल-सूचियों में वृद्धि, याचिकादाता की विक्रियों और उत्पादन में वृद्धि से सह-संबंधित होनी चाहिए। प्राधिकारी ने केवल वास्तविक आंकड़ों की प्रवृत्ति प्रदान की है, जिससे प्रतिशत के रूप में विश्लेषण करना संभव नहीं है।
- (झ) भारत में आयातों का प्रमुख अनुपात, पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रहा है और इसलिए याचिकादाता द्वारा लगाया गए क्षति के कोई भी आरोप, केवल पाटित आयातों की मात्रा पर आरोपित नहीं किया जा सकता है।
- (ञ) प्रकटन विवरण के अनुबंध-4 अर्थात् क्षति रहित कीमत के प्रयोजनार्थ याचिकादाता की कच्चे माल की लागत के लिए प्रकटन विवरण के विभिन्न बिन्दुओं पर विभिन्न विधियां नोट की गई हैं।
- (ट) प्राधिकारी ने केईपीसी के संबंध पाटन मार्जिन का परिकलन, अमरीकी डालर 25/मी.टन किया है, जो कि प्राधिकारी के अनुसार 2.1% बनता है। तथापि, असावधानी पूर्वक प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का परिकलन, कारखाना-गत निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में किया है। वैश्विक पद्धति और सही कानूनी स्थिति यह है कि पाटन मार्जिन का परिकलन, सीआईएफ निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में किया जाए। यदि पाटन मार्जिन, उपयुक्त रूप से लगभग अमरीकी डालर 25/मी.टन परिकलित किया जाता है, तो वह सीआईएफ निर्यात कीमत राशि का मात्र 1.8% बनता है और इसलिए यह 2.1% से कम है और न्यूनतम है।
- (ठ) प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का परिकलन करते समय क्रेडिट व्यय के लिए कटौती करने की अनुमति नहीं दी थी। 20 और 21 जुलाई, 2017 को कोरिया में केकेपीसी की जांच करते समय प्राधिकारी को क्रेडिट व्यय के संबंध में साध्य पहले से प्रस्तुत कर दिया गया है। क्रेडिट व्यय के संबंध में बैक-अप दस्तावेज भी जांच के दौरान प्रस्तुत कर दिए गए थे। केकेपीसी ने प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों के आधार पर घरेलू विक्रियों के कारोबार के लिए 3.23% की दर से और निर्यात विक्रियों के कारोबार के लिए 1.43% की दर से क्रेडिट व्यय की कटौती करने का दावा किया है। हमारी ऐसी सोच का एक मात्र संभावित कारण यह है कि क्रेडिट व्यय को अस्वीकृत करने का प्राधिकारी का निर्णय ऐसा हो सकता है कि प्राधिकारी केकेपीसी द्वारा दावा की गई ब्याज की दो पृथक दरों {घरेलू विक्रियों के लिए 3.23% और निर्यात विक्रियों के लिए 1.43%} से संतुष्ट नहीं हैं। यदि ऐसा मामला होता, तो प्राधिकारी को घरेलू और निर्यात विक्रियों के कारोबार दोनों के लिए ब्याज की एक दर अपनानी चाहिए थी और तदनुसार पाटन मार्जिन का परिकलन करना चाहिए था। ऐसा कोई कारण नहीं था कि प्राधिकारी क्रेडिट व्यय की पूर्णतया अनदेखी करें, जो कि वास्तव में केकेपीसी द्वारा खर्च की गई है, जैसा कि केकेपीसी द्वारा बना कर रखे गए रिकार्ड से प्रतिविंवित होता है और जिसके लिए प्राधिकारी के रिकार्ड में समस्त सत्यापित सूचना निहित है।
- (ड) हाल ही में यूरोपीय यूनियन, कोरिया जनवादी गणराज्य और थाईलैंड मूल की अथवा वहां से निर्यातित 1500 श्रृंखलाओं और 1700 श्रृंखलाओं के स्टार्टरीन बुटाडीन रबड (एसबीआर) के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी जांच में लिए गए निर्णय में प्राधिकारी ने केकेपीसी को क्रेडिट लागत की कटौती करने की स्वीकृति दी थी। विगत में केकेपीसी ने डीजीएडी द्वारा की गई विभिन्न पाटन-रोधी जांच में नियमित रूप से भाग लिया है और विगत में ऐसी सभी जांच में जिनमें केकेपीसी ने भाग लिया था, अन्य के साथ-साथ स्टार्टरीन बुटाडीन रबड, एक्रीलोनाईट्रोट बुटाडीन रबड, 6पीपीडी आदि से संबंधित जांच शामिल हैं। इसलिए प्राधिकारी के लिए ऐसा कोई कारण नहीं है कि वे इस मामले में कटौती को अस्वीकार करें, जिसकी केकेपीसी को विगत जांच में स्वीकृति दी गई है।
- (इ) उनको दिया गया परिकलन, सामान्य मूल्य के परिकलन के आधार को विनिश्चित नहीं करता है। डीएम और आईएम के परिकलन में ऑफ स्पेक को बाहर रखा जाना चाहिए अथवा समायोजित किया जाना चाहिए। निर्यात कीमत सिवुर इंटरनेशनल के आधार पर होनी चाहिए। डीजीएडी द्वारा कीमतों को परिवर्तित करने के लिए जांच अवधि के लिए औसत परिवर्तन दर प्रयुक्त की गई है और इसके परिणामस्वरूप कार्य कीमतें बहुत अधिक हैं। डीजीएडी को बिक्री व्यय का समायोजन करने के लिए आशोधन करना चाहिए क्योंकि सामान्य मूल्य संरचित करने के लिए कोप + लाभ को प्रयुक्त किया गया है। कोप में कोप शामिल है। इसके अतिरिक्त बिक्री व्यय को घटा कर कारखाना-गत कीमतें तय की गई हैं।
- (ण) केप्टिवली स्रोत से बुटाडीन प्राप्त करके याचिकादाता वास्तव में स्वयं को क्षति पहुंचा रहा। बुटाडीन की उच्च लागत को याचिकादाता की लेखा बहियों में दर्ज किया जा रहा है।
- (त) निर्यात कीमतें, घरेलू कीमतों से कम हैं। इससे यह पता चलता है कि याचिकादाता की कीमत निर्धारण संबंधी नीति, संबद्ध देशों से आयातों से संबंधित नहीं है।

- (थ) मांग और पूर्ति के बीच अंतर व्याप्त है और पाटन-रोधी शुल्क लगाने से उपभोक्ताओं पर अत्यधिक भार पड़ेगा। क्षति का समाधान करने के लिए याचिकादाता को अत्यधिक संरक्षण प्रदान किया जाएगा, जिसका कारण केप्टिवली स्रोत से बुटाडीन प्राप्त करना है।
- (द) याचिकादाता केप्टिव स्रोत से मुक्त बाजार की ओर प्रवृत्त होगा। यह पीबीआर के ग्राहकों के लिए अनुचित होगा कि वे बुटाडीन और घरेलू उत्पादक की लागत अक्षम आपूर्ति शृंखला के लिए भुगतान करें।
- (ध) प्रयोक्ता उद्योग अर्थात् रबड़ उद्योग पहले से ही अत्यधिक आयात और अन्य के साथ प्राकृतिक रबड़, नाइट्रिट रबड़, कार्बन ब्लैक और रबड़ रसायनों जैसे कच्चे माल पर लागू पाटन-रोधी शुल्क के बोझ से दबा हुआ है। ऐसे समस्त कच्चे माल पर शुल्क लागू होने के बावजूद भी वर्तमान जांच में पीबीआर पर पाटन-रोधी शुल्क लागू करके अतिरिक्त संरक्षण प्राप्त करने के लिए घरेलू उद्योग ने अब निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध किया है।
- (न) भारत में तैयार रबड़ वस्तुओं के आयातों की निशुल्क अनुमति दी जाती है। प्रयोक्ता उद्योग के लिए महत्वपूर्ण ऐसे समस्त कच्चे माल को पाटन-रोधी शुल्क का संरक्षण प्रदान किया गया है। वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद पर पाटन-रोधी शुल्क लगाना, विशेषकर जब कि घरेलू उद्योग, भारतीय मांग के समनुरूप प्रयोक्ता उद्योग का अनुमोदित विचाराधीन उत्पाद की वाणिज्यिक आपूर्ति करने की स्थिति में नहीं है, प्रयोक्ता उद्योग को संभवतः बहुत कठिन स्थिति में डाल देगा।
- (फ) रबड़ उत्पादों पर और शुल्क लगाने के फलस्वरूप भारतीय उद्योग अक्षम बन जाएगा, जहां आयात अनुचित रूप से अधिक स्तर पर होंगे और एकल उत्पादक का पूरा एकाधिकार हो जाएगा।

ठ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

94. यह नोट किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत की गई प्रकटन पश्चात टिप्पणियों को मुख्यतया दोहराया गया है और ये प्रकटन विवरण के परिप्रेक्ष्य में उनके पहले निवेदनों का प्रतिरूप है। अन्य बातों के साथ-साथ सभी प्रासंगिक निवेदनों का समाधान इस अंतिम जांच परिणाम में उपयुक्त भागों में कर दिया गया है, जो कि संबद्ध तथ्यों और साथ ही संबद्ध नियमों और प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले न्यायशास्त्र के अनुसार किए गए मूल्यांकन के आधार पर स्वतः स्पष्ट हैं। इसके बावजूद पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण पर प्रस्तुत की गई कुछ विशिष्ट टिप्पणियों का समाधान निम्नानुसार है:-

95. याचिकादाता द्वारा वांछित विभिन्न सूचना, दस्तावेज और आंकड़ों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा अपनाई जा रही पद्धति के अनुसार प्रकटन किए जाने वाले विचाराधीन समस्त अत्यावश्यक तथ्यों को इस मामले में प्रकट कर दिया गया है। याचिकादाता को गोपनीय सूचना के बारे में सूचित कर दिया गया था और संबंधित निर्यातकों के पाटन निर्धारण से संबंधित वास्तविक संख्या का प्रकटन केवल संबंधित निर्यातकों को किया जाता है, ताकि उसकी गोपनीयता को बनाए रखा जा सके और इसी पद्धति का अनुसरण किया जा रहा है। तथापि, 28 नवंबर, 2017 को जारी किए गए प्रकटन विवरण द्वारा अगोपनीय ब्यौरों का प्रकटन पहले से ही कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट किया गया था कि सामान्य मूल्य का निर्धारण करने से संबंधित विधि का भी प्रकटन कर दिया गया है और जिसका प्रकटन विवरण के उपयुक्त भागों में विस्तार से उल्लेख किया गया है।

96. घरेलू उद्योग को क्षति रिहत कीमत (एनआईपी) के प्रकटन के संबंध में उल्लेख है कि याचिकादाता को यह प्रदान कर दी गई थी और यह नोट किया जाता है कि पीबीआर के कोबेल्ट और निकल ग्रेड के लिए क्षति रिहत कीमत, संयंत्र-वार (संयंत्र 1, 2 और 3) तय की गई है और तदनुसार विचाराधीन उत्पाद के लिए भारित औसत क्षति रिहत कीमत निर्धारित की गई है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि जांच अवधि के दौरान पीबीआर के 1,11,985 मी.टन के कुल उत्पादन में से एनडीबीआर का उत्पादन लगभग 2059 मी.टन हुआ है, जो कि 2% से कम है, एनडीबीआर ग्रेड के लिए क्षति रिहत कीमत पर विचार नहीं किया गया है।

97. असहयोगी निर्यातकों के लिए सीएनवी के संबंध में उल्लेख है कि उसे जांच अवधि के दौरान अंतर्राष्ट्रीय कीमत, घरेलू उद्योग की भारित औसत परिवर्तन लागत और उचित लाभ के अनुसार संबंधित देश में बुटाडीन की आयात कीमत के आधार पर तय किया गया है।

98. मुख्यतः निर्यात के लिए अन्य आवेदक द्वारा मांगी गई गोपनीय सूचना के संबंध में यह नोट किया जाता है कि प्रकृति से ये सूचना/दस्तावेज गोपनीय हैं और पद्धति के अनुसार प्राधिकारी द्वारा ऐसी सूचना का प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया जाता है। तथापि, ऐसी गोपनीय सूचना के संक्षिप्त विवरण का प्रकटन, प्रकटन विवरण में कर दिया गया था।

99. एसबीआर जांच में एलजी बुटाडीन की उल्लिखित कीमत के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्येक जांच, विशेषज्ञ जांच के तथ्यों और परिस्थितियों द्वारा अधिशासित होती है और एक विशेष मामले में अपनाई गई कार्य प्रणाली, अन्य मामले में उपयुक्त नहीं हो सकती है। इसलिए एसबीआर मामले में लागू की गई कार्य प्रणाली को, वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर लागू करना उपयुक्त नहीं होगा।

100. निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यातों और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए उनके निरूपण के संबंध में प्राधिकारी ने एलजीकेम और कुमहो पेट्रोकेमिकल्स द्वारा कोरिया अथवा तृतीय देश में निर्यातकों के माध्यम से किए गए निर्यातों के अत्यधिक भाग के तथ्य को उचित रूप से ध्यान में रखा है। यह नोट किया जाता है कि सत्यापित सूचना के आधार पर निर्यात कीमत और पाटन मर्जिन निर्धारित किया गया है।

101. पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए केकेपीसी के निवेदनों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि कारखाना-गत स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के एक कारक के रूप में पाटन मार्जिन तय किया गया है। यह एक सुसंगत पद्धति है, जो कि सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों के लिए व्यापार के स्तर और कारखाना-गत स्तर पर पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए पाटन-रोधी करार और पाटन-रोधी नियमावली दोनों के समनुरूप है और यह निवल निर्यात कीमत का प्रतिशत है। तदनुसार अपनाई जा रही सुसंगत पद्धति को ध्यान में रखते हुए इस मामले में पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है।

102. क्रेडिट व्यय की अनुमति नहीं दिए जाने की केकेपीसी की चिंता के संबंध में यह नोट किया जाता है कि प्रकटन विवरण में यह बताया गया है कि घरेलू बिक्रियों और निर्यात बिक्रियों के कारोबार के संबंध में विभिन्न बैंक ब्याज दरों का दावा किया गया था और वे उसे यथोचित सिद्धनहीं कर सके थे, जिसके कारण इस पर विचार नहीं किया गया था। तथापि, प्राधिकारी ने उनके अनुरोध की जांच के आधार पर क्रेडिट व्यय तय करने के लिए दोनों किस्मों के कारोबार के लिए निम्न बैंक ब्याज दर पर विचार करने के लिए सत्यापित दस्तावेजों के आधार पर क्रेडिट व्यय का निर्धारण करने के लिए निम्न ब्याज दर पर विचार किया है। तदनुसार, पाटन मार्जिन तय किया गया है और यह न्यूनतम निर्धारित है। न्यूनतम पाटन मार्जिन को ध्यान में रखते हुए उनके खिलाफ पाटन-रोधी जांच को समाप्त कर दिया गया है और यह पाया गया है कि कोरिया से समग्र आयात, गैर-पाटित थे, इसलिए कोरिया जनवादी गणराज्य के खिलाफ पाटन-रोधी जांच को भी समाप्त कर दिया गया है।

103. एनडीबीआर के बहिष्करण के संबंध में यह नोट किया जाता है कि याचिकादाता ने जांच अवधि के दौरान एनडीबीआर का उत्पादन 2059 मी.टन किया था और उसे बेचा था। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग द्वारा पेश की गई समान वस्तु के संबंध में विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर विचारकिए जाने की आवश्यकता है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह प्रदर्शित नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग ने आयातित उत्पाद के समान वस्तु की पेशकश की है। इस मामले में विचाराधीन उत्पाद पीबीआर है और एनडीबीआर पीबीआर का एक ग्रेड है और समान वस्तु की धारा के अंतर्गत प्राधिकारी ने इस मुद्दे की उपयुक्त रूप से जांच की है।

104. इस तर्क के संबंध में कि प्रकटन विवरण में क्षति निर्धारण करने का निष्कर्ष शामिल नहीं है, यह नोट किया जाता है कि प्रकटन विवरण का दायरा, अत्यावश्यक तथ्यों का प्रकटन करने तक सीमित होता है।

105. इस तर्क के संबंध में कि कम कीमत पर बिक्री, संबद्ध क्षति मानदंड नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि की कम कीमत पर बिक्री भी क्षति का एक महत्वपूर्ण प्राचल है। विधि के अंतर्गत क्षति प्राचलों की सूची गैर-व्यापक है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी विभिन्न जांच में क्षति प्राचल के रूप में कम कीमत पर बिक्री का निरंतर निर्धारण कर रहे हैं।

106. कीमत ह्रास/कमी न्यूनीकरण का निर्धारण करने के लिए कार्य-प्रणाली के संबंध में उल्लेखनीय है कि घरेलू उद्योग पर कीमतों के कीमत ह्रास/कीमत न्यूनीकरण के प्रभाव का निर्धारण करने के लिए लागत और कीमतों की प्रवृत्तियों की तुलना करना प्राधिकारी की एक सुसंगत पद्धति है। वर्तमान मामले में भी प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर कीमतों के कीमत ह्रास/कीमत न्यूनीकरण के प्रभाव का निर्धारण करने के लिए लागत और कीमतों की प्रवृत्तियों पर विचार किया है।

107. घाटों और आयातों की मात्रा के बीच संबंध होने के बारे में प्राधिकारी ने कारणात्मक संबंध के भाग में इस मुद्दे की उपयुक्त रूप से जांच की है।

108. बुटाडीन को केप्टिव स्रोत से प्राप्त करने के कारण आरोपित स्वतः पहुंचाई गई क्षति के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकादाता द्वारा बना कर रखी गई लेखा बहियों के अनुसार बुटाडीन की कीमतों पर विचार किया गया है।

109. अत्यधिक आयात शुल्कों और प्रयोक्ता उद्योग पर उनके बोझ के तर्कों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन-रोधी शुल्क का प्रयोजन, सभी पक्षकारों को समानान्तर कार्य-क्षेत्र प्रदान करना है। यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी, आयातों के क्षति प्रभावों का समाधान करने के लिए निम्नतर पाटन अथवा क्षति मार्जिन के नियम का अनुपालन करते हैं।

110. निचले स्तर तक के उद्योग पर पाटन-रोधी शुल्क के प्रभाव के बारे में उठाए गए मुद्दों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि जब कि एसोसिएशन ने यह तर्क दिया है कि अनेक किस्मों के कच्चे माल पर पाटन-रोधी शुल्क लग रहा है, फिर भी उसने ऐसा कोई मात्रात्मक आंकड़ा प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे यह पता चले कि विचाराधीन उत्पाद पर पाटन-रोधी शुल्क का प्रयोक्ता उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन-रोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतया पाटन की अनुचित व्यावहारिक पद्धतियों द्वारा घेरलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है, ताकि भारतीय बाजार में ऐसे खुले और उचित प्रतस्पद्धा का वातावरण बहाल किया जा सके, जो कि देश के सामान्य हित में हो। पाटन-रोधी उपाय करने से किसी भी तरह से संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए इनसे उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ड. निष्कर्ष और सिफारिशें

111. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और उस पर उठाए गए मुद्दों की जांच करने के पश्चात् और रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करते हुए, प्राधिकारी ने निष्कर्ष निकाला कि:

- (1) विचाराधीन उत्पाद को रूस, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से उनके सामान्यमूल्य से कम पर भारत को निर्यात किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है।
- (2) घेरलू उद्योग को संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण आर्थिक क्षति नहीं हुई है।
- (3) संबद्ध देशों से आयातों घेरलू उद्योग की क्षति के बीच कारणात्मक संबंध निर्णायक रूप से सिद्ध नहीं हुए हैं।
- (4) उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना उपयुक्त नहीं समझते हैं और एतद्वारा पाटन-रोधी नियमावली के नियम 11 (2) के साथ पठित नियम 14 (ख), (ग) और नियम 17 (1) (3) के अनुसार वर्तमान जांच को समाप्त करते हैं।

ढ. आगे की प्रक्रिया

112. इस जांच परिणाम से उत्पन्न मुद्दों के लिये केंद्र सरकार के आदेश के विरुद्ध एक अपील सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायधिकरण के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th December, 2017

Final Finding

Subject: Anti-dumping investigation concerning imports of Polybutadiene Rubber originating in or exported from Korea PR, Russia, South Africa, Singapore & Iran.

F. No. 14/40/2016 DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD rules).

2. Whereas Reliance Industries Ltd. (hereinafter also referred to as the petitioner or the applicant or domestic industry) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) in accordance with the Act and the Rules, for initiation of Anti-dumping investigation concerning imports of “Polybutadiene Rubber” (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from Korea RP Russia, South Africa, Singapore and Iran (hereinafter also referred to as the Subject Countries), alleging dumping and consequent injury and requested for levy of anti-dumping duty on the imports of the subject goods from the Subject Countries.

3. And whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence, submitted by the applicant issued a public notice vide Notification No. 14/40/2016-DGAD dated 16th September, 2016, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating the subject investigation in accordance with the sub Rule 5 of the Rules, to determine the existence, degree and effect of the alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. PROCEDURE

4. The procedure followed in the present investigation is as described below:-
- a. The Designated Authority (hereinafter referred to as the “Authority”), under the above Rules, received a written application from Reliance Industries Ltd. (‘Reliance Industries’), (hereinafter referred to as the “Petitioner”) as domestic industry of the subject goods, alleging dumping of Polybutadiene Rubber (hereinafter also referred to as the “subject goods” or “PBR”) originating in or exported from Korea PR, Russia, South Africa, Singapore and Iran (hereinafter referred to as the “subject countries”) and resulting in injury to Domestic Industry.
 - b. Preliminary scrutiny of the application filed revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the Petitioner. The Petitioner updated the petition, which was considered by the Authority for initiation of investigations. The application was, therefore, considered as duly documented.
 - c. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the Petitioner to justify the initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject countries.
 - d. The Authority notified the Embassies of Korea PR, Russia, South Africa, Singapore & Iran in India about the receipt of the application before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule 5(5) of the AD rules.
 - e. The Authority issued a public notice dated September 16th, 2016 published in the Gazette of India, Extraordinary, and initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods from the subject countries.
 - f. The Authority forwarded a copy of the public notice to all known exporters (whose details were made available by the Petitioner) and industry association and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
 - g. The Authority also forwarded a copy of the public notice to all known importers of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the letter.
 - h. The Authority provided a copy of the non-confidential version of application to the known exporters and the Embassies of Korea PR, Russia, South Africa, Singapore and Iran in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.
 - i. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in the subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
 - i. Michelin
 - ii. Lanxess AG
 - iii. Versalis
 - iv. Synthos Kralupy
 - v. Trinseo/Styron

- vi. Lanxess Elastomeres
 - vii. Kumho Petrochemicals
 - viii. LG Chem
 - ix. Nizhnekamskneftekhim
 - x. Sibur
 - xi. Efremov Synthetic Rubber
 - xii. Firestone Polymers
 - xiii. American Synthetic Rubber Co.
 - xiv. Lanxess Corporation
 - xv. Goodyear Tyre & Rubber Co.
 - xvi. Dynasol Elastomers
 - xvii. Karbochem
 - xviii. Arak Petrochemicals Company
 - xix. Lanxess Pte Ltd
- j. In response to the initiation notification, the following exporters/producers have responded:
- a. PJSC "SIBUR Holding" Russia
 - b. SIBUR International GmbH, Austria
 - c. LG Chem Ltd. Korea RP
 - d. Wonchem Ltd. Korea RP
 - e. Hansuk Chemicals Co. Ltd. Korea RP
 - f. Kumho Petrochemical Co. Ltd. Korea RP
 - g. POSCO Daewoo Singapore.
 - h. POSCO Daewoo Korea RP.
- k. Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
- a. J K Tyres industries Ltd.
 - b. Apollo Tyres Ltd.
 - c. MRF Ltd
 - d. CEAT Limited
 - e. Birla Tyres
 - f. Balkrishna Industries Ltd.
 - g. Goodyear India Limited
 - h. Continental India Ltd.
 - i. Yokohama
 - j. Metro Tires
 - k. Ralson Tires
 - l. Treadsdirect Limited
 - m. Indag Limited.

1. In response to the initiation notification, the following importers/users have responded:
 - a. CEAT limited
 - b. JK Tyre & Industries Limited
 - c. MRF Limited
 - d. Apollo tyres Limited
- m. Copy of initiation was also sent to following known associations of the consumers of the product under consideration in India:
 - a. Automotive Tyre Manufacturers' Association
 - b. All India Rubber Industries Association
- n. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties. Submissions made by all interested parties have been taken into account in present disclosure.
- o. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- p. Further information was sought from the Petitioner and other interested parties to the extent deemed necessary.
- q. Verification of domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of the present investigations.
- r. The Non-injurious Price (hereinafter referred to as 'NIP') based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- s. Spot verification was carried out at the premises of the following exporters:
- t. PJSC "SIBUR Holding" Russia
- u. SIBUR International GmbH, Austria
- v. LG Chem Ltd., Korea RP
- w. Wonchem Ltd., Korea RP
- x. Hansuk Chemicals Co. Ltd., Korea RP
- y. Kumho Petrochemical Co. Ltd., Korea RP
- z. POSCO Daewoo Korea RP.
- aa. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2015 to 31st March 2016 (12 months) (hereinafter referred to as the 'period of investigation' or the 'POI'). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from 2012-13, 2013-14, 2014-15 and the POI.
- bb. In accordance with Rule 6(6) of the Anti-Dumping Rules, the Authority provided opportunity to the interested parties to present their views orally in an oral hearing held on 13th June 2017 and on 17th October 2017. Subsequently all the parties who had attended the oral hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and were advised to offer their rebuttals. A number of interested parties attended the hearing.
- cc. Request was made to the Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to provide the details of imports of subject goods for the past three years, including period of investigation, which was received by the Authority. The Authority has referenced the DGCI&S imports data for computation of the volume and value of imports and injury analysis.

- dd. Since the evidences with regard to the transshipment of subject goods from UAE submitted by petitioners could not establish that the goods coming from UAE are being produced in Iran. Therefore, the Authority has excluded the volume of imports from UAE while calculating the share of Iran in total imports. The share of Iran excluding UAE transshipment are below 3%, therefore, the Authority terminates the investigation against Iran. In view of this, the volume of imports from Iran and UAE has not been taken for the purpose of dumping and injury analysis.
- ee. In accordance with Rule 16 of the Rules Supra, the essential facts were disclosed by the Authority on 28th November 2017 to the concerned interested parties. Comments were requested by 6th December 2017. Comments received on the disclosure statement to the extent considered relevant by the Authority are considered in this final finding.
- ff. Based on the examination of comments on disclosure statement by Kumho, Korean exporters, it was found that its dumping margin is less than 2%. In view of the de-minimus dumping margin, AD investigation against them has been terminated and it was also found the entire imports from Korea is undumped, thereby the investigation has also been terminated against Korea RP. Therefore, the subject countries in this investigation constitute only South Africa, Russia and Singapore.
- gg. Exchange rate for conversion of US\$ to RS is considered for the POI as Rs 65.91 as per customs data.
- hh. *** In this disclosure represents information furnished by the interested parties on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

5. The product under consideration in the present investigation is Polybutadiene Rubber originating from or exported from Korea RP, Russia, South Africa, Singapore and Iran.

Views of the Domestic Industry:-

6. The domestic industry has made the following submissions with regard to the issue of the product under consideration and like article:
- a. The product under consideration in the present petition filed is defined as "Polybutadiene Rubber", "PBR" or "Butadiene Rubber". Polybutadiene rubber is a synthetic rubber that is a polymer formed from the polymerization of the monomer 1, 3-butadiene. Polybutadiene has a high resistance to wear and tear and it is used in the manufacture of tyres, which consumes about 70%-80% of the PBR produced in India. About 20% is used as an additive to improve the mechanical strength of plastics such as polystyrene and acrylonitrile butadiene styrene (ABS). It is used to manufacture golf balls, various elastic objects and to coat or encapsulate electronic assemblies, offering high electrical resistivity.
- b. "BR" or "PBR" can be classified in terms of grades and quality. There are five types of grades. Grades of PBR are based on the type of catalyst used during the polymerization process. Based on the catalyst used in the process, the polymerization will result in the stereo-regularity of the chain (measured by the Cis-content) or linearity of the chain. Generally grades of PBR are differentiated based on the Cis-content. In this sense titanium grade of PBR is obsolete due to inferior properties, whereas Lithium grade of PBR is used in plastic modification. Petitioner neither produce Titanium and Lithium grades, nor does the data adopted in the petition include these grades. All other grades of PBR [Cobalt, Nickel and Neodymium] are technically and commercially substitutable. The imports of the product under consideration includes all these three grades.
- c. 1, 3-Butadiene is an organic compound that is a simple conjugated diene hydrocarbon (dienes have two carbon-carbon double bonds). Polybutadiene forms by linking many 1,3-butadiene monomers to make a much longer polymer chain molecule. In terms of the connectivity of the polymer chain, butadiene can polymerize in three different ways, called cis, Trans and vinyl. The cis and trans forms arise by connecting the butadiene molecules end-to-end, so-called 1,4-polymerisation.
- d. Polybutadiene is largely used in various parts of automobile tires; the manufacture of tires consumes about 70% of the world production of polybutadiene with a majority of it being high cis. Other uses of Polybutadiene rubber are in tread rubber, conveyor belts, footwear, sports goods, automotive components, rollers, mechanical goods & dock, and fenders.

- e. Subject goods are classified under Chapter 40 of Customs Tariff Act, 1975 under the subheading 40022000. The customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the proposed investigations.
- f. The Authority has never excluded off specs materials from scope of duty on the ground that the domestic industry is not producing and selling the same.
- g. It has been established that the three grades of PBR forming part of the PUC, i.e., Cobalt grade, nickel grade and neodymium grade are all technically and commercially substitutable. Therefore they form like articles. Therefore none of the three grades can be subject to exclusion. Such exclusion will give producers of such excluded goods to freely dump goods in India which will be utilized by all the consumers who are using other grades of PBR as well and this will further aggravate the injury suffered by the Petitioner. The Petitioner has produced and sold significant quantities of neodymium grade PBR.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties:-

7. The views of the exporters, importers, consumers and other interested parties are as follows:
 - a. The majority of sales from Russia were of off spec quality of Nd PBR and comparison of such grades must be made with the same grades manufactured by the Petitioner. If the domestic industry does not manufacture such grades, then these off spec grades should be excluded or the export price of SIBUR should not be taken for the determination of dumping margin or injury margin of SIBUR.
 - b. The claim made by the Petitioner that Neodymium grade of Butadiene Rubber is produced by the Petitioner under the trade name “Reflex Cisamer PBR 51” and “Reflex Cisamer PBR 700” is not true as per available market information. Neodymium grade of Butadiene Rubber has only been produced as a testing batch and never commercially produced by the domestic Industry and therefore must be excluded from the scope of the product under consideration in the present investigation.
 - c. If grade wise analysis of PUC is to be conducted, Petitioner must segregate demand, production, capacities, capacity utilization, selling price, profitability, etc. on a grade wise basis. Thereafter the Petitioner must also establish that each grade that it manufactures is of acceptable quality to the consumers in the Indian market to ensure marketability of the grades produced by the Petitioner.
 - d. As per market information, RIL’s plan is to produce an equivalent of BUNA CB24, using the catalyst Neodymium but even this product would have a different molecular distribution as compared to NdBR being purchased by the Respondents.

Examination by the Authority:-

8. The product under consideration in the present investigation is Polybutadiene Rubber, also known as “Butadiene Rubber” (referred to as “subject goods” or “product under consideration” or “BR” or “PBR”). Polybutadiene Rubber is a synthetic rubber that is a polymer formed from the polymerization of the monomer 1, 3-butadiene. The petitioner has claimed that there is no known difference between the products manufactured by them and the subject goods imported from the subject countries. The petitioner also claimed that the technology and production process employed by them and the foreign producers are also comparable.
9. With regard to the claim that NdBr should be excluded from this investigation, the Authority finds no merit in such claims of interested parties since the domestic industry has produced and sold NdBr during the POI. It is further noted that it is one of the grades of product under consideration and it has been treated as like article of the goods imported to the goods produced by the domestic industry. However, it is noted that the produced volume of NdBr is less than 2% of the total production, the authority found appropriate to compute weighted average NIP for the PUC based on the verified information of the other grades of the product under consideration.
10. As regards off spec grades imported from Russia, the Authority notes that off spec PBR and normal grade PBR do not constitute different products. Off spec and normal grade PBR bear the same general technical & commercial properties. Since, off spec grade product is used in substitution to the goods produced by the domestic industry, therefore, Authority did not find appropriate to exclude off specs grade PBR.

11. Interested parties have raised concerns about production and sale of NdBr by the domestic industry. It has also been contended by interested parties that NdBr produced and supplied by RIL is not in effect the product NdBr. The Authority notes that the production record of the company shows that there are both production and sales during POI.
12. On examination of the PBR produced by the domestic industry and imported PBR, the Authority did not find any material difference between the subject goods produced by the Domestic Industry and imported from the subject countries. It is also noted that the interested parties could not establish any material difference between the subject goods produced by the Domestic Industry and imported from the subject countries. In view of the similarity in manufacturing process and substitutability, the Authority holds that the subject goods produced by the Domestic Industry are like article to the goods imported from the subject countries.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

13. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

14. The application was filed by Reliance Industries Limited (RIL) who is the sole producer of the subject goods in the Country.

Views of the Domestic Industry:-

15. The domestic industry has made the following submissions with regard to the issue of standing:

- The petition has been filed by Reliance Industries Limited as a domestic producer of the product under consideration.
- The petitioner is the sole producer of the subject goods in the country. The Petitioner is not related to any importer or exporter of the product under consideration from the subject countries.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties:-

16. Interested parties have not raised any issues pertaining to issue concerning the domestic industry and its scope.

Examination by the Authority

17. The application has been filed by Reliance Industries Limited as the sole domestic producer of the product under consideration. None of the interested parties have disputed the claim of petitioner and the standing of the domestic industry.
18. In view of the above and after due examination of information on record, the Authority holds that the Petitioner satisfies the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules. Petitioner satisfies the requirement of standing under the Rules. Further, Petitioner constitutes domestic industry within the meaning of Rule 2(b).

D. OTHER/Misc. ISSUES

Views of the Domestic Industry:-

19. The domestic industry has made the following submissions on misc. issues:-

- The existence of a demand supply gap does not entitle exporters to resort to dumping. Imports can continue to enter the Indian market consequent to imposition of anti-dumping duty in order to take care of the demand supply gap.
- The protection granted by imposition of anti-dumping duty will be in the long term interests of the producers, consumers, public at large and the Country. In any case, the impact of proposed duty on to the consumers cannot be termed as an unbearable burden.

- c. There is no case of over protection. The domestic industry has suffered financial losses in the investigation period and the quantum of anti-dumping duty shall be lower of margin of dumping and margin of injury.
- d. All the non-confidential data has been disclosed by the Petitioner and disclosure of only the confidential data has been withheld by the Petitioner owing to the sensitive nature of such information. This is in line with established law and practice pertaining to confidentiality. The Opposite parties themselves have barely divulged any information during the course of their exporter questionnaire responses.
- e. The Petitioner has not abused its position despite being the sole producer of the subject goods. Consumers are free to procure the subject goods from the petitioner or from the exporters. Exporters on the other hand have misused their right to sell in the Indian market by resorting to unfair trade practices which have impacted the Petitioner adversely.
- f. The imposition of anti-dumping duty will not have any impact on the trade balance and, on the contrary, it will aid in restricting the unwanted outgo of foreign exchange.
- g. Captively produced raw material has been considered at market price in the books of accounts which truly reflects the trend present in international prices, which were volatile during the Period of investigation.
- h. The petitioner expanded the capacity of the plant keeping in view the demand and supply gap in the subject goods. While it may be true that the fixed cost of new plant may be higher in the initial period, the losses suffered by the Petitioner was much more than the increased fixed cost on account of expansion. The Petitioner has worked out the profitability statement based on the fixed cost of the old plant for the new plant also and submitted the same to the Authority. The statement clearly showed that the Petitioner had suffered losses during 2014-15 and 2015-16.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

20. The interested parties have contended as follows:-

- a. The petitioner itself recognizes that fact that the Indian demand for the product under consideration is more than what the petitioner can produce and supply.
- b. The imposition of anti-dumping duties implies that an additional tariff burden would be placed on Indian users for almost half of their needs.
- c. The imposition of anti-dumping duties would lead to over protection of Petitioner which would benefit from a closure of the markets to the only suppliers who can effectively satisfy the demand-supply gap for the product under consideration.
- d. The filed petition covers 2 more countries (EU & USA) compared to the initiation notice. Analysis is therefore misleading and should have been updated before circulation as it prejudices Respondent's interests.
- e. A Prima facie examination and initiation of investigation by the Authority fails the set standards in Article 5.3 of ADA read with Rule 5(3) of AD Rules.
- f. Initiation notification issued by the Authority makes it clear that initiation took place without any scrutiny and application of mind.
- g. No attempts have been made by the Petitioner in order to adduce evidence of prices of exporting countries, normal value projections and export price deductions.
- h. Excessive confidentiality has been claimed by the Petitioner in terms of Proforma IV A, Costing information, international prices of butadiene, IBIS transaction-wise raw import data, annual report, balance sheet and financial statement of Petitioner, non-injurious price and constructed normal value.
- i. Petitioner is attempting to create a monopolistic, anti-competitive market. The exporters find it hard to believe that injury is being suffered despite Petitioner controlling the entire value chain.
- j. The Imposition of duties on the product under consideration will upset delicate trade balance and spur the growth of the Indian economy.

- k. The Rubber industry in India is already burdened with heavy import duties and anti-dumping duty on crucial raw material already and imposition of anti-dumping duty in the instant case would deteriorate the situation even further for the industry.
- l. Decline in prices during POI was due to a depressed market.
- m. The prices by ARLANXEO to India were higher or in line with export prices to neighboring countries, the ASEAN region.
- n. Sales in India during POI is due to superior quality of ARLANXEO Nd-PBR.
- o. DI cannot meet fast growing local demand for performance products like Nd-PBR.
- p. ADD on Nd-PBR would deprive domestic consumers of superior next generation product for improved performance.
- q. Raw Materials, loan servicing and investment in new capacities caused injury. Volume and price effects have not caused injury
- r. Present investigation is not one for estimation of subsidies being granted and it is not possible to determinatively make any findings regarding the same in this investigation.
- s. LG Petrochemical India Pvt Ltd is not involved in the sale of the product concerned and therefore there is no need to mention it as a subsidiary involved with the product under consideration.
- t. Domestic industry has claimed excessive confidentiality in Section VI relating to costing information where all the information has been claimed as confidential. It is unrealistic to expect exporters to disclose more information when the domestic industry itself has not disclosed any such information.
- u. Import data provided by the Petitioner is misleading as it covers certain low priced import entries as PUC and higher priced ones are treated as NPUC.

Examination by the Authority:-

- 21. The various submissions made by the interested parties with regard to miscellaneous issues and considered relevant by the Authority have been examined and addressed below:-
- a. With regard to the issue of the existence of demand supply gap in India, it is noted that existence of such gap does not justify dumping practices. The supply gap chain can be filled up at the price which is not injurious. With regard to the issue of over-burdening the consumer and over protection to the Petitioner, it is noted that anti-dumping duties are imposed in order to address the injury suffered by the domestic industry due to dumped imports.
- b. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis was directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of public file.
- c. The submissions made by Arlanxeo have not been accepted in this investigation as they have failed to submit an exporter's questionnaire response and consequently made their first submissions subsequent to the oral hearing. Accordingly, they are treated as being non-cooperative for the purpose of this investigation. However, issues raised by them have been dealt at relevant places.
- d. With regard to the valuation of captively produced raw material, Butadiene, it is noted that the Authority has considered the verified information of butadiene as per the books of account maintained by the domestic industry.
- e. With regard to the issue raised by the opposing interested parties that the setting up of a new plant was the reason behind the losses suffered by the domestic industry, it is noted that the capacity utilization of the new plant is operating at 115% which is reasonably good and therefore the losses suffered by the domestic industry are not due to the setting up of the new plant by the domestic industry.

- f. With regard to the allegation that there are inconsistencies in the import data, the Authority notes that DGCI&S import data has been relied upon for the purpose of this AD investigation and which has been duly disclosed.

E. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

E.1 Views of the Domestic Industry:-

22. The domestic industry has made the following submissions on other issues:
- a. There are no evidence of actual transaction prices concerning sales of the product. Efforts were made to get information/evidence of price of subject goods in the domestic market of exporting countries as well as the price lists or quotations of producers of subject goods in subject countries. There are very limited number of producers and consumers of the subject goods in the subject counties. Therefore business happens directly between the producers and exporters.
 - b. The raw material utilized in the manufacture of the product under consideration accounts for 65 – 75% of the total cost of production and the prices of butadiene are well established internationally. In fact, Butadiene prices are declared on a periodic basis by a number of trade journals and therefore are fairly known to all producers and consumers and consequently significant business happens at the prices declared in the trade journals. Thus it can be concluded that the producers in the subject countries in the present investigation are procuring Butadiene at these international prices.
 - c. As regards other conversion cost, which forms about 25-35% of full cost of production, petitioner has considered its own conversion costs and submits that the conversion cost of the exporter would at least be comparable or higher than this conversion cost.
 - d. The dumping margin, price undercutting and injury margin in the present investigation must be determined by considering the prices of both the parties at the time when parties have signed the contract and that data should be considered as the date of sale.
 - e. The price undercutting and injury margin in the present investigation should be determined after making appropriate adjustment for long term credit being offered by the foreign exporters which is making imports significantly cheaper in price.
 - f. Foreign producers have been giving post invoicing discounts for the subject goods by invoicing at higher prices and subsequently giving discounts.
 - g. In order to establish and allocate a reasonable return to the domestic industry, net present value of old investments should be considered for this purpose.
 - h. The cost of production for off specs grades of the product under consideration cannot be materially different than those of the other grades of the product under consideration. Determination of NIP maybe separately considered for Nd-PBR and comparison of the same can be done with the landed price of import.
 - i. Information pertaining to the product under consideration has been provided without segregating the same in terms of different specs. A separate cost of production may be determined depending upon the catalyst used in the manufacture of the product under consideration.
 - j. Relevant evidence has been provided to show that UAE has no capacities of its own to manufacture the product under consideration which leads to the conclusion that the subject goods shipped from UAE are nothing but the subject goods being transshipped from another country to India through the UAE.
 - k. The information which formed the basis of the long term credit and post invoicing discount claims made by the Petitioner came to the knowledge of the Petitioner through information obtained from sources in the market.
 - l. Petitioner has adhered to its requirements completely and constructed normal value.
 - m. Captively produced raw material has been considered by the Petitioner at market price available in the books of accounts truly reflecting the trend in international prices, which were volatile in the POI.
 - n. The cost of production of PBR has decreased by 16% over the course of the injury period while the landed price of imports has declined by 49% during the corresponding period thereby showing that there

is no direct correlation. The domestic industry had benchmarked its selling price with the import prices and accordingly the selling prices had declined by 51%

E.2 Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

23. Other interested parties have raised following major contentions :-
- a. The injury margin for SIBUR should be calculated by comparison of the like products and grades and this should be applied for the calculation of injury margin for off spec grades.
 - b. The Normal Value of off-spec grade should be adjusted. Cost of production of PBR solely for prime grade B should be recorded and no separate costs for off spec grades A, C, and D have been recorded, which were assigned prior to export. To ensure fair comparability, CNV for grades A, C and D should be adjusted downwards by 5-15% which constitutes a difference between the home market sales of prime grade B and off spec grades.
 - c. No attempt was made to provide data regarding prices in subject countries nor made any effort to gather such information.
 - d. Petitioner cannot devise its own methodology for determination of normal value. All the subject countries are market economy countries for whom normal value must be based solely on Explanation (c) to Section 9A(1) of the Customs Tariff Act, 1975.
 - e. The Petitioner cannot refrain from providing any evidence at all with regard to data utilized by it in the calculation of normal value.
 - f. Certain data concerning butadiene prices have been given by the Petitioner but prices used for the construction of normal value and prices for the previous years which reflect global trends have not been provided by the Petitioner.
 - g. The global chemical industry is being faced by challenges which has resulted in the trend of depreciation of chemical products and their raw materials. The universality of this effect is backed by the fact that all of the exporters of PBR reduced their prices, and not only those subject to the anti-dumping proceeding.
 - h. Presuming acceptability of Petitioner's methodology, butadiene prices, other raw material prices, conversion costs and justification for consideration of profits, at 5% across the board has not been given.
 - i. With regard to date of sale claims made by the Petitioner, there is no evidence that prices have changed considerably during POI with non-attributability to market situations. The purpose of an invoice is as a document that confirms sales made and not just an agreement to sell. It is an incorrect presumption being made that prices agreed at time of contract is not a projection of price at future date.
 - j. With regard to the claims of the Petitioner concerning the impact of long term credit, the landed value does not include cost of credit and addition of 22% return on NIP, and if such adjustment is made to the landed value also, it is case of double jeopardy being faced by the Exporters.
 - k. There is no evidence provided to back up the claims of post invoicing discount made by the domestic industry.
 - l. The Korean Government strongly urges the Authority to make a determination on dumping and injury margin based on correct data submitted by the exporters from Korea RP.
 - m. Dumping Margin calculated to the tune of 10% for Russia is not of a representative nature, the Authority should utilize the data provided by cooperating Russian producers for the purposes of such calculation.
 - n. Dumping margin methodology fails to meet Indian legal standards and is not in keeping with Annexure I of Rule 7 of the Anti-dumping Rules. Construction of normal value without resorting to other methods prescribed by law violates requirements of Article. 2.2 of Anti-dumping agreement.
 - o. The Petitioner has utilized erroneous factors to calculate dumping margin. The prices of butadiene imported from Korea along with other factors adopted from the Indian market have been utilized. The Export price has been subject to adjustment without considering differences in factors such as marine insurance, commission, bank charge, port expenses and freight fee.

- p. The Authority should consider the actual cost of Butadiene and not market price as the actual costs have been reported in the records and verified by the Authority and cannot be rejected on the basis of reasonableness. This is consistent with the WTO panel and Appellate Body reports in *EU – Biodiesel*.
- q. PAO Sibur Holding provided detailed data on the monthly cost of production of Butadiene as well as the relevant details of on related companies involved in the production and sales of PBR, which has been verified by the Authority.
- r. Injury margin for SIBUR must be solely calculated by reference to Petitioner's sales of Nd PBR. If Petitioner do not have sales of off spec grades of Nd PBR, Sibur's sales of prime PBR grade SKD-ND B(LP) mk must be solely considered and sales of all other grades that were of off spec quality should be discarded.
- s. Authority cannot disregard available, actual costs of raw materials in lieu of international prices of raw material.
- t. Petitioner's estimate regarding Kumho's butadiene requirement is highly exaggerated because the Petitioner appears to assume 100% capacity utilization for Kumho's plants producing various products.
- u. Petitioner assumes that Kumho sources Butadiene either locally or through imports at USD 1028/MT, based on weighted average import prices calculated by Korean Customs Authority – KITA's data which is incorrect because a perusal of the data shows significant variation in prices ranging from 791/MT to USD 1831/MT. The weighted average price has been determined on a weighted average of prices for various months and do not adequately represent the price variation within a month or on a month to month basis.
- v. For a cooperating exporter, there is no basis for construction of normal value.
- w. Petitioner's concerns that exporters have withheld information pertaining to costing of raw material are widely misplaced. If the Authority was to issue a deficiency letter against any EQR, interested parties would provide the information duly sought.
- x. No grounds for rejection of export price provided by cooperating exporter. Adjustments to the export price proposed by the Petitioner are meritless and should be rejected. NCV Petition dos not contain any evidence with regard to these adjustments. Inland freight and port handling charges have no relationship to the price of the product. Marine insurance and bank charges have been overstated.
- y. Absolute reliance on import statistics to calculate export price is not acceptable as import statistics suffer from various flaws such as aggregation of transactions, recording of different units of measurement, failure to perfectly identify the producer by name, brand use etc. Relying on exporter's own data ensures that such errors do not enter into export price calculation.
- z. Purchase price of raw material cannot be called unreliable owing to the fact that the same is lower than others. The difference in prices is due to a locational advantage. In case adjustment is made on account of transportation cost, prices of butadiene from Lotte Chemical will be almost similar to other companies in Korea RP.
- aa. The Authority should consider the actual cost of Butadiene and not market price as the actual costs have been reported in the records and verified by the Authority and cannot be rejected on the basis of reasonableness. Reasonableness does not require examination when actual costs in the records of the producer are found to be accurate and faithful. This is consistent with the WTO panel and Appellate Body reports in *EU – Biodiesel*.
- bb. LG Chem and its traders deny that they provide any kind of out-of-ordinary discounts to any of its clients. The prices are competitive and decided on the basis of negotiations between the client and LG Chem/Traders.
- cc. While computing normal value, interest is allowed as an item of cost of sales and after deducting interest, the balance amount of return to be allowed as pre-tax profit to arrive at the non-injurious price. Reasonableness of interest cost maybe examined to ensure that no abnormal expenditure on account of interest has been incurred. Adoption of 22% Return on Capital employed is hypothetical and not reasonable.

- dd. Butadiene prices move in tandem with crude oil prices which dropped from 86.13 US\$ in Oct, 2014 to 46.29 US\$ in Sept, 2015. The reduction is around 50% whereas during the same period, landed price of imports declined by 24% and domestic selling price declined by 18%.
- ee. Date of sale argument is merely an unsubstantiated request without any evidence or basis. Petitioner has raised such an argument in other investigations and they have been duly rejected, most recently in the SBR investigation. Article 2.4 of the Anti-Dumping Agreement talks about ‘sales made’ and not agreement to sell.
- ff. Petitioners have not given any evidence to substantiate the claim of long-term credit being offered by foreign exporters. Landed value is calculated by adding customs duty and education cess to the assessable value. Petitioner’s proposal for determining landed value by adjusting credit cost does not have any legal basis.

E.3 Examination by the Authority

1. Normal Value

24. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:-

- (i) *The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when destined for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
 - (a) *Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub- section (6); or*
 - (b) *The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

Determination of Normal Value

- 25. The Authority sent questionnaires to the known exporters/producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. The following parties have filed exporter questionnaire responses:
 - I. PJSC “SIBUR Holding” Russia
 - II. SIBUR International GmbH, Austria
 - III. LG Chem Ltd., Korea RP
 - IV. Wonchem Ltd., Korea RP
 - V. Hansuk Chemicals Co. Ltd., Korea RP
 - VI. Kumho Petrochemical Co. Ltd., Korea RP
 - VII. POSCO Daewoo Korea RP
 - VIII. POSCO Daewoo Singapore
- 26. None of the producers of subject goods in South Africa and Singapore have cooperated and filed exporter’s questionnaire responses.

Normal value for M/s Kumho Petrochemical Co. Ltd., Korea

27. Kumho Petrochemical, during the POI, has sold **54467.04 MT** of the subject goods having invoice value *** **KRW** in the domestic market. All sales in the domestic market were made to non-affiliated parties during the POI. To determine the normal value, the authority conducted the ordinary course of trade test to determine profit making domestic sales transactions with reference to cost of production of subject goods. If profit making transactions are more than **80%**, then the authority has considered all the transactions in the domestic market for the determination of the normal value and in cases, where profitable transactions are less than **80%**, only profitable domestic sales have been taken into consideration for the determination of the normal value.
28. As regards consumption price of Butadiene adopted by Kumho Petrochemicals, the authority has considered verified figures and has adopted consumption value of PBR as recorded by Kumho Petrochemicals in its books of accounts.
29. KKPC has claimed adjustments on account of inland freight, packing, differential selling expenses and credit expense from the domestic selling price. The authority has allowed the adjustments for inland freight and packing expense. However, the adjustments on account of differential selling expense and credit expense had not been allowed by the authority, since could not justify two different rate of interest in domestic and export sales. On examination on comments of disclosure statement regarding their claim on credit expenses, the authority has considered the lower rate of interest for both and domestic and export sales, instead of different rates claimed for domestic and export sales, and allowed the credit expenses adjustment in both normal value and export price. Accordingly, weighted average normal value for Kumho Petrochemical Co. Ltd has been determined as *** **US\$/MT**.

Normal Value for M/s LG Chem Ltd., Korea

30. M/s. LG Chem, during the POI, has sold **26,160.42 MT** of the subject goods having invoice value *** **KRW** in the domestic market. Sales in the domestic market were made to non-affiliated parties during the POI. To determine the normal value, the authority conducted the ordinary course of trade test to determine profit making domestic sales transactions with reference to cost of production of subject goods. If profit making transactions are more than **80%** then the authority has considered all the transactions in the domestic market for the determination of the normal value and in cases, where profitable transactions are less than **80%**, only profitable domestic sales are taken into consideration for the determination of normal value. In this case based on the ordinary course of trade test, only profitable sales have been taken for determination of normal value.
31. LG Chem has claimed adjustments on account of packing expenses, credit expense and inland freight which has been duly verified and considered by the Authority. Accordingly, weighted average normal value for LG Chem Ltd. has been determined as *** **US\$/MT**.

Normal Value for non-cooperating producers and exporters from Korea RP

32. The Authority notes that no other producer/exporter from Korea RP has responded to the Authority in the present investigation. For all the non-cooperative producers/exporters in Korea RP, the Authority has determined normal value as *** **US\$/MT** as determined for the cooperative exporter.

Normal value for PJSC ‘SIBUR Holding’, Russia

33. PJSC ‘SIBUR Holding’ during the POI, has sold **2226.96 MT** of the subject goods having invoice value *** **RUB** in the domestic market. All sales in the domestic market during the POI were made to unaffiliated parties. In order to determine the normal value, the domestic sales of the exporters was not considered since the domestic sales of off spec were not available, therefore, normal value was determined as per cost of production and the reasonable profit of the producer. Accordingly, normal value for PJSC ‘SIBUR Holding’ has been determined as *** **US\$/MT**

Normal Value for non-cooperating producers and exporters from Russia

34. The Authority notes that no other producer/exporter from Russia has responded to the Authority in the present investigation. For all the non-cooperative producers/exporters in Russia, the Authority has determined normal value as *** **US\$/MT** as determined for the cooperative exporter.

Normal Value for producers and exporters in South Africa

35. The Authority notes that no producers/exporters from South Africa have responded to the Authority in the present investigation. For all the producers/exporters in South Africa, the Authority has determined normal value as *** US\$/MT based on international price of raw material, conversion cost of domestic industry and reasonable profit.

Normal Value for producers and exporters in Singapore

36. The Authority notes that no producers/exporters from Singapore have responded to the Authority in the present investigation. For all the producers/exporters in Singapore, the Authority has determined normal value as *** US\$/MT based on international price of raw material, conversion cost of domestic industry and reasonable profit.

2. EXPORT PRICE

Export Price for M/s. Kumho Petrochemicals along with M/s. POSCO Daewoo Singapore and M/s. POSCO Daewoo Korea RP

37. M/s. Kumho Petrochemicals has filed questionnaire response along with its unrelated trading companies, namely, M/s. POSCO Daewoo Singapore and M/s. POSCO Daewoo Korea RP. Kumho has made direct exports of **8398 MT** of subject goods to unrelated parties in India and also exported 1375 MT of subject goods to India through Posco Daewoo International Corporation, Korea and M/s. Posco Daewoo International, Singapore. M/s. Kumho Petrochemicals has claimed adjustments on account of Inland freight, overseas freight, overseas insurance, bank charges, packing expenses, port expenses and sales commission and the same have been allowed, after due verification, however, credit expenses were not allowed. On examination on comments of disclosure statement regarding their claim on credit expenses, the authority has considered the lower rate of interest for both and domestic and export sales, instead of different rates claimed for domestic and export sales, and allowed the credit expenses adjustment in both normal value and export price. In order to arrive at ex-factory export price, expenses of Posco Daewoo has also been considered. Accordingly, the weighted average export price has been determined for M/s. Kumho Petrochemicals – Posco Daewoo as *** US\$/MT

Export Price for M/s. LG Chem Ltd along with M/s. Wonchem Ltd. and, M/s. Hansuk Chemicals Co. Ltd..

38. M/s. LG Chem Ltd has filed the questionnaire response along with its unrelated trading companies, namely, M/s. Wonchem Ltd, and M/s. Hansuk Chemicals Co. Ltd. These companies exported the subject goods which were manufactured by M/s. LG Chem during the POI. M/s. LG Chem has directly exported **13,650.84 MT** of PUC and exported **133.30 MT** through M/s. Wonchem Ltd., & **133.30 MT** through M/s. Hansuk Chemicals Co. Since, trader of M/s. Hansuk, based in China, PR did not file the EQR, thereby, Authority did not find appropriate to determine the net export price and the dumping margin in respect of sales made through Hansuk.

39. M/s. LG Chem has claimed adjustment on account of inland freight, ocean freight, credit expense, bank charge, overseas insurance, custom agent fee, and packing expenses and the same have been allowed, after due verification and making necessary modifications wherever necessary. Further, the Authority has made appropriate adjustment on account of services rendered by LG Chemical India Pvt. Ltd. In order to arrive at ex-factory export price, expenses of Wonchem has also been considered. Accordingly, the weighted average export price has been determined for LG Chem- Wonchem as *** US\$/MT.

Export Price for non-cooperating producers and exporters from Korea,RP

40. The Authority notes that no other producer/exporter from Korea has responded to the Authority in the present investigation. For all the non-cooperative producers/exporters in Korea, the Authority has determined weighted average export price as *** US\$/MT based on the response of the cooperative exporter.

Export Price for M/s. PJSC ‘SIBUR Holding’ along with M/s. SIBUR International GmbH

41. M/s. PJSC ‘SIBUR Holding’, a producer of the subject goods in Russia, has filed the questionnaire response along with its related trading company, namely, M/s. SIBUR International GmbH. M/s. Sibur International has exported during the POI, has sold **184.68 MT** of the subject goods (off spec material)

having invoice value *** RUR during the POI in India. They have claimed adjustment on account of inland and overseas freight, ocean insurance, and the same have been allowed. Accordingly, the weighted average export price has been determined as *** US\$/MT

Export Price for non-cooperating producers and exporters from Russia

42. The Authority notes that no other producer/exporter from Russia has responded to the Authority in the present investigation. For all the non-cooperative producers/exporters in Russia, the Authority has determined weighted average export price as *** US\$/MT based on the response of the cooperative exporter.

Export Price for producers and exporters in South Africa

43. None of the producer/exporter from South Africa has responded to the Authority in the present investigation. For all the producers/exporters in South Africa, the Authority has determined the weighted average export price as *** US\$/MT on the basis of DGCIS input data and the other expenses claimed by the petitioner.

Export Price for producers and exporters in Singapore

44. None of the producer/exporter from Singapore has responded to the Authority in the present investigation. For all the producers/exporters in Singapore, the Authority has determined the weighted average export price as *** US\$/MT on the basis of DGCIS data and the other expenses claimed by the petitioner.

3. DUMPING MARGIN

45. The export price to India has been compared with the normal value to determine the dumping margin. The dumping margin during the POI for all the exporters/producers from the subject countries has been determined as shown in the Dumping margin table below:-

Sl. No.	Country	Producer	Exporter	Normal Value (US \$/MT)	Net Export Price (US \$/MT)	Dumping Margin (US \$/MT)	Dumping Margin %	Range
1	Korea RP	Kumho Petrochemical Co. Ltd.	Kumho Petrochemical Co. Ltd.	***	***	***	***	0-5
			M/s. POSCO Daewoo Korea RP					
			M/s. POSCO Daewoo Singapore					
2	Korea RP	LG Chem Ltd	LG Chem Ltd	***	***	***	***	(0-5)
			Wonchem Ltd.					
3	Korea RP	other Producers/exporters	Other Producers/Exporters	***	***	***	***	15-20
4	Russia	PJSC “SIBUR Holding”	SIBUR International GmbH	***	***	***	***	30-35
5	Russia	other Producers/exporters	Other Producers/Exporters	***	***	***	***	45-50
6	South Africa	All	All	***	***	***	***	0-10
7	Singapore	All	All	***	***	***	***	30-40

F. Injury Determination

Views of Domestic Industry

46. The domestic industry has submitted that:-

- The volume of imports from the subject countries increased in 2013-14, declined in 2014-15 and then increased in the POI. The decrease in 2014-15 is only due to the commencement of production in a new plant by the petitioner which resulted in the decline of import volumes during that time period.

- b. The petitioner has been forced to realign its prices to the prices of the imports and these imports are severely suppressing the prices of the domestic industry.
- c. The performance of the domestic industry has deteriorated significantly in terms of profits, return on investments and cash flow.
- d. Domestic industry is able to sell whatever volumes Petitioner wishes to sell in the market for the reasons that (a) the demand for the product under consideration in the Country is higher than what can be produced and sold by the Petitioner, (b) the pricing policy being followed by the domestic industry is to link its own prices to the import prices. The domestic industry sells the product at a price comparable to the import prices. Since the Petitioner is benchmarking its prices to the imported product prices, the consumers are buying from the domestic industry. There is therefore no adverse volume effect of the imports on the domestic industry. However, the injury to domestic industry is in the price at which it is forced to sell the product in the Country.
- e. The pattern of imports from an individual country is entirely immaterial where cumulative assessment of injury to the domestic industry has been established. With regard to the market share of the subject countries, while there was a decline in view of fresh capacities commercialized by the domestic industry, profitability, return on investment and cash flow of the domestic industry declined very steeply and the domestic industry suffered financial losses and negative return on investment.
- f. While claims have never been made by the domestic industry that it is able to meet the entire requirement of the domestic market, in a situation where it can meet 58.36% of Indian requirement, there was no need to reduce the prices by 63% over the injury period. While raw material prices have declined, there is no compulsion for a supplier to reduce prices beyond this decline.
- g. Imports of the product have increased till 2013-14 and declined thereafter once domestic industry commenced commercial production at the new plant. Thereafter, imports have increased again in the POI.
- h. The Petitioner has computed the Non-injurious price in accordance with the principles laid down in Annexure III to the antidumping rules and in view of the fact that the prices of Butadiene were volatile, month-wise non-injurious price has been computed for the purposes of this investigation.
- i. The landed value of imports has been worked out on the assessable value reported in the customs data as per the established practice followed by the Authority.
- j. The calculations done by the Petitioner shows the existence of a significantly positive injury margin.
- k. The demand for the subject goods in India had increased in POI as compared to world market. Therefore, the loss suffered by the Petitioner was on account of dumped imports only and cannot be attributed to any other factors.
- l. The domestic industry has filed a separate application for the investigation and imposition of anti-dumping duties in respect of imports of the subject goods from EU and USA.
- m. The production of the domestic industry was highest in the period of investigation and therefore any allegation of shut down of plant and consequent short supply of the subject goods by the domestic industry is devoid of any merit.
- n. The decline in the prices of domestic industry is more than the decline in cost and the decline in prices are not following the trend of decline in BD prices thereby resulting in price depression.
- o. The capital employed with the Petitioner has increased over 700% in order to increase the capacity by 40,000 MT. The Petitioner has three plants and has claimed that the return on investment should be given on net present value of the investment in the two older plants

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

47. Submissions made by the interested parties are summarized below:
- a. The volume of imports of the subject goods from Russia have remained stable following a decrease between 2013-14 and 2014-15, whereas total imports from subject countries were actually decreasing.
 - b. The volume of imports from Russia when taken in comparison to domestic production and consumption of PBR in India are incapable of having negative effect on the domestic industry.

- c. The evolution of volume of imports of the product under consideration is linked to the inability of the petitioner to cater to the demand of the whole domestic market.
- d. The Petitioner has expanded its capacities while its production and domestic sales have also increased and the Petitioner is still making an injury claim.
- e. The subject countries in the present investigation have at no point put any volume pressure on the Petitioner. Market share of the Petitioner has steadily increased starting from 2013-14.
- f. There has been no significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.
- g. The import price of the subject goods have roughly been cut in half progressively over the period of investigation. PBR prices are driven mainly by the prices of its main raw material, butadiene.
- h. Butadiene prices in South East Asia region decreased significantly more than Indian import prices.
- i. The evolution of prices of the subject goods from the subject countries does not reflect injurious dumping practices but simply reflects the evolution of raw material costs. This is in line with market prices prevalent worldwide.
- j. The petitioner claims that the price undercutting of domestic prices by imports as being very substantial but the calculations annexed to the Petition show that undercutting for all subject countries as being between the range of 0-10%.
- k. For the purpose of comparison, target price of Petitioner was recalculated on the basis of methodology used by the Petitioner to establish constructed normal value. Petitioner's non injurious price should amount to 1315-1380 USD per tonne.
- l. The landed price of Russian imports was calculated based on Russian PBR prices procured from EXIM data Bank with Russia's Ministry of Commerce and Industry with adjustments for customs duties, education fees and post importation costs. This would amount to 1,358 USD per tonne. On this basis, the underselling margin would not only be de minimis but would show that Russian import prices would not undercut prices of the Petitioner.
- m. The cost of production of the petitioner is excessively high and the captive sourcing of butadiene at non-market prices does not allow it to compete with world market prices for PBR which are prevalent. Comparison of petitioner's cost of production with international butadiene costs show that while the latter fell considerably during the period considered, the former remained relatively stable and also at a high level.
- n. The petitioner has lowered its prices much more than Russia or the other subject countries but such price decrease is still less than decrease in butadiene market prices. This proves that in reality the Petitioner has priced PBR in line with butadiene market prices.
- o. Allegation that the Petitioner has a pricing policy which is to link its prices to import prices does not stand under scrutiny as an analysis of PBR export statistics available through EXIM data bank of the Indian Ministry of Commerce and Industry reveals that prices offered by the Petitioner on the export market are much lower than prices offered on the domestic market.
- p. Petitioner's profitability started to collapse following further investments in capacity.
- q. The profitability of the Petitioner started to collapse following further investments made by them to enhance capacities.
- r. Petitioner should have been aware that high cost structures linked to inefficient captive sourcing of raw materials would have had a detrimental impact on its ability to align its prices with those of the market butadiene prices to compete with the same.
- s. The capacity utilization of the Petitioner as given in petition for 2013-14 is 104% whereas Petitioner's annual report states that such capacity utilization was at 72%.
- t. The material injury claim is solely based on price underselling, which has neither been established nor have any details been provided pertaining to the same.

- u. The decrease in landed value of goods from Korea RP and Singapore is completely reflective of Free Trade Agreement concessions and not reflective of dumping.
- v. When the data is based on transfer pricing of captive inputs adopted in the period of investigation, cost of production declined steeply, selling price declined accordingly and losses grew by 273 index points, where they should have been more stable and; when data is based on financial records, cost of production decreased marginally, selling price declined steeply and losses grow by a 138 index points. This phenomenon must be explained as it is false and misleading.
- w. Injury is due to imports from other countries including EU and USA as imports from EU and USA are entering India at similar prices. Per unit price of the product from Singapore and South Africa is much higher than the prices from these allegedly non-dumping sources.
- x. The injury suffered by the domestic industry is due to the shutdown of Petitioner's plant and short supply of the subject goods by the Petitioner, which has happened 8 times based on communications with the Petitioner from time to time.
- y. The high supply of butadiene available in the market is leading to suppressed profit margins, which is the case with the domestic industry.
- z. The new capacity enhancement by the Petitioner and Global economic slowdown being experienced, especially in China, is the cause for the poor performance by the Petitioner as stated in Annual Report 2015-16 of the Petitioner.
- aa. Weak demand from the automobile industry for the product under consideration is another reason for the poor performance of the Petitioner as stated in Annual Report 2015-16 of the Petitioner,
- bb. Reduced prices of imports that are prevailing are due to a trend of depreciation of chemical products evidenced by prices of all exporters of PBR and not limited to the producers and exporters from the subject countries who are a part of the investigation.
- cc. Landed price of imports has remained somewhat higher than the selling price of the DI. Therefore the argument of Petitioner of linking of prices to imports falls flat.
- dd. Price Undercutting is negative.
- ee. Imports from subject countries in relation to Indian consumption increased by 0% over the injury period.
- ff. Unclear how average of prices would lead to negative undercutting whereas grade wise comparison would lead to overall positive undercutting. When Petitioner's dominant claim is import parity pricing then it is unclear how even grade wise, the import prices could possibly undercut Petitioner's prices.
- gg. Petitioner's claim that such massive investment for expanding capacities came at zero cost is hard to accept.
- hh. Petitioner's claim that capacity utilization has declined must be contextualized as it has remained well above par at 95% and a comparative trend indicates production increased despite increase in capacity year on year.
- ii. Production and domestic sales moved in tandem with each other. Production remained commensurate with increase in capacities.
- jj. When imports started declining in 2014-15, Petitioner began incurring losses and thereafter, despite further decline, losses of the Petitioner grew. There is no causation between the two.
- kk. Petitioner's profit/loss figures have shown substantial changes even though such changes are not reflected by any other parameters claimed by the Petitioner and the entire data of the Petitioners appears highly suspect.
- ll. Petitioner cannot accuse imports of causing injury when they control a meager 30% of demand whereas DI itself controls 60%.
- mm. ROI has decreased from -399% to -5% and same trend in noticeable in recovered losses which shed clarity that the new plant commissioned by the Petitioner in 2014-15 has improved its economic and growth parameters.

- nn. Petitioner's conclusion that majority of imports are from subject countries is irrelevant for injury analysis and is legally untenable.
- oo. Petitioner's conclusion regarding price underselling is misguided as it has relied upon NIP once again to state that landed price of imports remained sub-par. However, injury margin is not a factor for assessing injury.
- pp. Any injury attributable to EU and USA needs to be excluded from the injury determined in the current investigation.
- qq. RIL is a backward-integrated unit and produces many petrochemical products and it is involved in these products right from the stage of crude. It is relevant to see if all intermediate products are profitable or not. Possible that RIL represents high profits in intermediate sectors and projects corresponding losses in downstream units. Transfer pricing of Butadiene feedstock sold by RIL to its manufacturing units forms a factor under this head and merits evaluation.
- rr. Import volumes grew only in 2013-14 and declined in the injury period. Growth is due to inability of producer to cater to domestic demand, which was nearly double the Petitioner's production that year despite performing at 104% capacity utilization and selling more than 90% of production. Thereafter Petitioner expanded capacity, imports declined and demand-supply gap reduced. However demand remained much higher than Petitioner's capacity even in the POI.
- ss. No price suppression as RIL's cost of production only declined by 16% while the cost of raw material declined by 50-60% and the Petitioner's selling price reflects change in cost of raw material.
- tt. Price depression must be analyzed along with global factors such as raw material prices. This shows that selling price if DI declined due to declining raw material costs and global reduction of prices. Therefore imports are not causing price depression.
- uu. Imports from Korea have gone down from 31080 MT during the base year to 25424 MT during the POI.
- vv. Capital employed with the Petitioner has increased by over 700% which is irrational and does not correlate with the injury to the domestic industry and must be examined.

Examination by the Authority:-

- 48. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties. The Authority has examined the material injury to the domestic industry in accordance with the Anti-dumping Rules and considering the submissions made by the interested parties.
- 49. The AD Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both
 - (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
- 50. As regards injury from imports from EU and USA, at the stage of initiation, the Designated Authority came to a conclusion that the dumping margin in case of imports from EU and USA was negative. Therefore, both EU and USA were taken off from the list of subject countries in this AD investigation. However, the domestic industry has filed a separate petition in respect of imports from EU and USA for a different period of investigation which is under examination. Based on the examination of comments on disclosure statement by Kumho, Korean exporters, it was found that its dumping margin is less than 2%. In view of the de-minimus dumping margin, AD investigation against them has been terminated and it was also found the entire imports from Korea is undumped, thereby the investigation has also been terminated against Korea RP. Therefore, the subject countries in this investigation constitute only South Africa, Russia and Singapore

G. Cumulative Assessment:-

51. Annexure II (iii) of the Anti-Dumping Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that :-
- The margin of dumping established in relation to the imports from each country/ territory is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
 - Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.
52. In the present case, the margin of dumping from each of the subject countries have been found to be more than the de minimis limit prescribed; the volume of dumped imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed; and the exports from the subject countries directly compete inter se and with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market. Cumulative assessment of the effects of the imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported products and the conditions of competition between the imported products and the like domestic product. The Authority has therefore cumulatively assessed the effect of dumped imports.

Examination of Injury and Causal Links

53. Annexure II to the Anti-Dumping Rules in its relevant part provides that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.
54. In accordance with the Rules all economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above have been examined as under:-

H. Volume Effect of Dumped Imports and Impact on Domestic Industry

Assessment of Demand/Apparent Consumption

55. Demand or apparent consumption of the product in India is the sum of domestic sales and imports from all sources. Exports made by the Indian Producer have been excluded from the computation in order to ascertain apparent consumption.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Sales of Domestic Industry	MT	77,354	77,403	1,00,901	1,09,646
Subject Countries Imports	MT	6,324	12,224	7,874	15,996
Other Countries Imports	MT	54,387	65,080	53,192	47,580
Total Demand/consumption	MT	1,38,065	1,54,736	1,61,966	1,73,224

56. It is seen that there has been consistent increase in demand over the injury period.

Import Volumes from subject countries

57. Table below shows imports from various countries

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Imports volume from Subject Countries					
RUSSIA	MT	6,017	12,152	6,069	9,105
SOUTH AFRICA	MT	307	101	1,536	3,472
SINGAPORE	MT	-	-	269	3,420
Total Subject Countries	MT	6,324	12,225	7,874	15,998

58. The Authority notes that dumped imports are not in significant quantities and are significantly lower than the volume of undumped imports. The share in imports from Russia, Singapore and South Africa constitutes 25.16% of total imports. Thus, dumped imports could not be the reason for injury to the domestic industry.

Imports in relation to total imports

59. The Authority notes that dumped imports are significantly lower than the volume of undumped imports. The share in imports from Russia, Singapore and South Africa constitutes only 25.16% of total imports. Since, the share of dumped imports constitute only 9.24% in demand and 14.29% in the production, therefore, such minor volume may not be the cause of injury to the domestic industry.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Import from Subject countries	MT				
Russia	MT	6,017	12,152	6,069	9,105
South Africa	MT	307	101	1,536	3,472
Singapore	MT	-	-	269	3,420
Total imports	MT	6,324	12,225	7,874	15,998
Share of subject countries imports in total imports	%	10.42%	15.85%	12.89%	25.16%
Import from other countries	MT	54,387	65,080	53,192	47,580
Total Imports	MT	60,711	77,333	61,066	63,578

Imports in relation to production & consumption in India

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Imports from subject countries in relation to:					
Indian Production	MT	77,070	80,756	1,01,399	1,11,985
Indian Consumption	MT	1,38,065	1,54,736	1,61,966	1,73,224
Imports from Subject Countries	MT	6,324	12,225	7,874	15,998
Total Imports	MT	60,711	77,333	61,066	63,578
Share of Imports in Consumption	%	4.58%	7.92%	4.86%	9.24%
Share of Imports in Production	%	8.21%	15.17%	7.76%	14.29%

60. Share of imports in relation to production and consumption increased in 2013-14 and declined thereafter with the commencement of production in the new plant by the petitioner and again increased during the POI, however, it is insignificant in order to influence pricing in the domestic market.

I. Price Effect of dumped imports and impact on domestic industry

61. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact on the prices of the domestic industry on account of imports of the subject goods from the subject countries have been examined with reference to price undercutting, price underselling, price suppression and price depression.

Price undercutting effects of dumped imports

62. For the purpose of price undercutting analysis the net sales realization (NSR) of the domestic industry has been compared with the landed value of imports from the subject countries. While computing the net sales realization of the domestic industry all taxes, rebates, discounts and commissions have been deducted and sales realization at ex works level is determined for comparison with the landed value of the dumped imports. Further, in view of significant difference in the costs and prices of different grades of PBR, the price undercutting has been determined by considering the comparable grade of PBR. Accordingly the undercutting effects of the dumped imports from the subject countries works out as follows:

63. It is seen that the price undercutting is negative in case of South Africa and Russia.

Particulars	Unit	Cobalt	NdBr	Nickle	Average
Net Sales Realisation	Rs/MT	***	***	***	***
Subject Countries as a whole					
Landed Price	Rs/MT	84,307	87,722		87,712
Price undercutting	Rs/MT	***	***	***	***
Price undercutting (Range)	%	0-10	0-10	(0-10)	(0-10)
RUSSIA					
Landed Price	Rs/MT	-	86,104	-	86,104
Price undercutting	Rs/MT		***		***
Price undercutting %	%		(0-10)		(0-10)
SOUTH AFRICA					
Landed Price	Rs/MT	-	96,363	-	96,363
Price undercutting	Rs/MT		***		***
Price undercutting %	%		(0-10)		(0-10)
SINGAPORE					
Landed Price	Rs/MT	84,307	83,196		83,211
Price undercutting	Rs/MT	***	***		***
Price undercutting %	%	0-10	5-15		0-10

Price Underselling

64. The Authority notes that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price (NIP) has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The NIP of the product under consideration has been determined by adopting the verified information/data relating to the cost of production for the period of investigation as per the laid procedure in Annexure III to the AD Rules. Weighted average NIP has been worked out based on the verified information of the domestic industry and it has been considered for comparing the landed price from each of the subject countries for calculating injury margin. The analysis shows that during the POI the landed value of subject imports were below the non-injurious price of the domestic industry, as can be seen from the table below, demonstrating positive price underselling effect.

Sl. No.	Producer /Exporter	NIP	Landed	Injury	Injury	Injury
			US\$/MT	Price	Margin	Margin
Korea RP						
1	Kumho Petrochemical Co. Ltd.	Kumho.Petrochemicals	***	***	***	***
		M/s. Posco Daewoo, Korea RP				
		M/s. Posco Daewoo, Singapore				
2	LG Chem Ltd.	M/s. LG Chem . Ltd.	***	***	***	***
		M/s. Wonchem Ltd.				
3	All Producers	All Exporters	***	***	***	***
Russia						
4	PJSC “SIBUR Holding”	SIBUR International GmbH	***	***	***	***
5.	All Producers	All Exporters	***	***	***	***
South Africa						
6	All Producers	All Exporters	***	***	***	***
Singapore						
7	All producers	All Exporters	***	***	***	***

Price Depression/Suppression

65. Price suppression/depression effects of the dumped imports have also been examined by considering the trend in net sales realization and cost of production of the domestic industry and comparing the same with the landed price of the dumped imports.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	96	99	84
Selling price	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	76	61	49
Landed Price	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	80	72	49

66. It is seen that the landed price of imports has moved in tandem with the selling price of the domestic industry and in view of the minor share of dumped import in demand, it may not be possible that dumped import will determine the selling price in the domestic market. In view of this the landed value may not be in a position to depress domestic selling price of the industry.

J. Economic Parameters Relating to Domestic Industry

67. Annexure II to the Rules requires that the Authority, in determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of the subject goods. Relevant portion of Annexure II (iv) of the Rules has been produced below:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

i) Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

68. Capacity, production, capacity utilization and sales of the domestic industry over the injury period is given in the following table:-

Particular	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Capacity	MT	78,000	78,000	1,08,000	1,18,000
Production	MT	77,070	80,756	1,01,399	1,11,985
Capacity Utilization	%	99%	104%	94%	95%
Domestic Sales	MT	77,354	77,403	1,00,901	1,09,646
Export Sales	MT	89	159	1,555	6,024

69. It is seen that :-

- a.) The domestic industry has enhanced capacity for the product under consideration. The demand for the product has increased and the capacities with the domestic industry were below the existing demand.
- b.) Production of the domestic industry has increased over the injury period.
- c.) Domestic industry was operating at 95% during the POI.
- d.) Performance of domestic industry both in production and sales have improved.

ii) Profitability, return on investment and cash profits

70. Profitability, return on investment and cash profits of the domestic industry over the injury period is given in the table below:-

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	96	99	84
Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	76	61	49
Profitability	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	27	(33)	(38)
PBT on Domestic Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	27	(43)	(54)

PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	27	(43)	(53)
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	29	(26)	(34)
ROI	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	400-500	50-60	(25-35)	(30-40)

71. It is seen that:

- a.) Profitability of the domestic industry with respect to domestic sales deteriorated over the injury period.
- b.) Return on investment and cash profits have followed a trend almost the same as that of profits. Return on investment and cash profits deteriorated over the injury period.

iii) Market Share in Demand

72. Market share of the domestic industry in demand for the product under consideration is given in the table below:-

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Sales of Domestic Industry	MT	77,354	77,403	1,00,901	1,09,646
Import from Subject Countries	MT	6,324	12,224	7,874	15,996
Import from other Countries	MT	54,387	65,080	53,192	47,580
Total Demand/consumption	MT	1,38,065	1,54,736	1,61,966	1,73,224
Share in Demand					
Domestic Industry	%	56.03%	50.02%	62.30%	63.30%
Subject Countries	%	4.58%	7.92%	4.86%	9.24%
Other Countries	%	39.39%	42.06%	32.84%	27.47%
Total	%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

73. It is seen that the market share of the domestic industry in demand has improved and commanding 63.30% of share which is sufficient enough to control the market. However the share of dumped import constitute only 9.24% which may not be a reason for causing injury to the domestic industry.

Employment, productivity and wages

74. Employment, productivity and wages over the injury period is given in the table below:-

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Number of employees	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	97	97	97
Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	92	107	114
Productivity					
Per Day	MT/Day	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	105	132	145
Per Employee	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	108	135	150

iv) Inventories

75. Inventory position with the domestic industry over the injury period is given in the table below:-

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Average Inventory	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	190	375	340

76. It is seen that the inventories with the domestic industry increased during the injury period. The level of inventories is higher since volume of production has gone up during the same period.

v) Growth

77. The growth of the domestic industry was positive in respect of volume parameters. However growth in respect of price parameters mainly profitability and return on investment have been adverse.

vi) Ability to raise capital investments

78. The Authority notes that given the rising demand of the product in the country, the domestic industry has added capacity. Accordingly, both production and sales volumes have gone up, however, profitability and return on investment have deteriorated.

vii) Factors affecting domestic prices

79. Consideration of the import prices from the subject countries and other countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the factors affecting the domestic prices are the prices of basic raw material, i.e., butadiene and landed price of imports from subject countries. Imports were not causing price undercutting due to the dumped imports in the Indian market. Landed Value from subject countries is lower than the non-injurious price of the domestic industry. Demand for the product has shown significant jump during the injury period. There does not seem to be volume injury since both production and sales have improved with the capacity utilization is around 95%

viii) Level of dumping & dumping margin

80. It is seen that the dumping margins are more than de minimus.

Causal Link

81. The Authority examined whether other factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the domestic industry. The examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry has been done as follows:

a.) Volume and value of imports not sold at dumped prices:

82. As regards to imports from subject countries, imports beyond de-minimus limits have been reported from EU and USA. The domestic industry has filed a separate petition in respect of these imports before the Authority which is under examination. Imports from all other sources are either below de-minimus limits or at undumped price. Since the evidences with regard to the transshipment of subject goods from UAE submitted by petitioners could not establish that the goods coming from UAE are being produced in Iran. Therefore, the Authority has excluded the volume of imports from UAE while calculating the share of Iran in total imports. The share of Iran excluding UAE transshipment are below 3%, therefore, the Authority terminates the investigation against Iran. The share of UAE in total imports is more than 3% and are at dumped prices, however, the Authority cannot carry out the investigation against UAE since, the investigation was never initiated against UAE.

83. Based on the examination of comments on disclosure statement by Kumho, Korean exporters, it was found that its dumping margin is less than 2%. In view of the de-minimus dumping margin, AD investigation against them has been terminated and it was also found the entire imports from Korea is undumped, thereby the investigation has also been terminated against Korea RP. Therefore, the subject countries in this investigation constitute only South Africa, Russia and Singapore.

84. The Authority notes that dumped imports are not in significant quantities and are significantly lower than undumped imports only. The share in imports from Russia, Singapore and South Africa constitutes 25.16% of total imports may not be a cause of injury. The price undercutting from these countries are negative which shows that these countries are not the reason for price suppression claimed by the petitioner. On examination of comments to disclosure statement given by the interested parties, the Authority note that there is injury to the domestic industry, however, Authority concludes that these dumped imports are not the reason to cause injury to the domestic industry. The Authority concludes that the causal link is missing in the present investigation as dumped imports are substantially lower than undumped imports.

b.) Contraction in demand

85. Demand for the product under consideration has shown consistent increase over the injury period. Therefore, possible contraction in demand cannot be a factor causing injury to the domestic industry.

c.) Changes in the patterns of consumption

86. There is no allegation of changes in the pattern of consumption. The pattern of consumption with regard to the product has not undergone any change. Possible changes in the pattern of consumption could not have contributed to the injury to the domestic industry.

d.) Trade restrictive practices and completion between the foreign and domestic producers

87. There is no allegation of trade restrictive practices. It is seen that there is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

e.) Developments in technology

88. There is no evidence of material changes in the technology for production of the product. Possible developments in technology is, therefore, not a factor of injury.

f.) Export performance

89. It is seen that the petitioner has exported the product under consideration during the injury period. The export volumes have however increased over the injury period. Further, the claimed injury to the domestic industry has been segregated for domestic operations. The claimed injury to domestic sales cannot be attributed to exports.

g.) Performance of other products being produced and sold by the domestic industry

90. It is seen that the injury claimed by the Petitioner is on account of the product under consideration. It is not attributable to any other products produced by the domestic industry. Performance of the domestic industry has been examined only for the product under consideration, which has been dealt in relevant para.

Factors establishing causal link

91. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has deteriorated on some parameters but the same is not due to dumped imports from the subject countries. Causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is not established on the following grounds-

- The prices from the subject countries are higher than the domestic selling prices and not undercutting the prices of domestic industry.
- Deterioration in profits, return on capital employed and cash profits cannot be attributed to dumped imports.
- The factors for the domestic industry to fix its prices are the butadiene prices and not the import prices. Had the petitioner fixed the prices on the basis of imports prices, the prices of the petitioner would be much higher than actuals. The minority share in dumped imports cannot determine the pricing policy of the domestic industry.
- The price suppression suffered by the domestic industry are not due to dumping from subject countries and are not the reason for deterioration in profitability of the domestic industry over the injury period.

K. Magnitude of Injury And Injury Margin

92. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry determined has been compared with the landed value of the exports from the subject country for determination of injury margin during POI. The injury margin determined are as under:-

Sl. No.	Producer /Exporter	NIP	Landed Price	Injury Margin	Injury Margin	Injury Margin
		US\$/MT	US\$/MT	US\$/MT	%	% Range
Korea RP						
1	Kumho Petrochemical Co. Ltd.	Kumho.Petrochemicals	***	***	***	15-25
		M/s. Posco Daewoo, Korea RP				
		M/s. Posco Daewoo, Singapore				
2	LG Chem Ltd.	M/s. LG Chem . Ltd.	***	***	***	20-30
		M/s. Wonchem Ltd.				
3	All Producers	All Exporters	***	***	***	***
Russia						
4	PJSC “SIBUR Holding”	SIBUR International GmBH	***	***	***	***
5.	All Producers	All Exporters	***	***	***	***
South Africa						
6	All Producers	All Exporters	***	***	***	***
Singapore						
7	All producers	All Exporters	***	***	***	***
25-35						

L. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES

93. The Authority has made appropriate examination of post disclosure comment at relevant paragraph in this findings which have not been repeated in subsequent examination. The other issues raised by the interested parties have been addressed below.

L.1 Submissions by Domestic Industry

- Petitioner has requested to disclose normal value, export price, actual dumping margin, and verification reports issued to exporters and NIP which have not been disclosed in the disclosure statement. Amount of actual dumping margin should be disclosed as the duty is on dumping margin. The basis adopted by Authority relating to determination of normal value and export price is not mentioned.
- Verification report of the exporters are the documents generated by the Authority and similar to the disclosure statement. Therefore, should be disclosed and confidential information can be marked as ***. Communications with the exporters and replies filed by them should be disclosed.
- Basis of Butadiene consumption price in LG Chem and Kumho. Butadiene prices are declared on periodic basis by a number of trade journals and therefore are fairly known to all producers and all consumers. In fact, significant business happens at the prices declared in the trade journals. Thus, it can be concluded that the producers in the subject countries are procuring Butadiene at these international prices only.
- LG Chem Butadiene prices had been rejected by the Authority in SBR case. It is not clear from the disclosure statement what the method Authority has applied for LG Butadiene cost in the present investigation.
- Dumping margin determined by the petitioner completely ignored. None of the issues raised by the petitioner during the course of investigation relating to the cost of Butadiene have been dealt by the Authority in the disclosure statement.
- It is not clear from disclosure statement that Authority has determined grade-wise NIP and CNV or single weighted average NIP and CNV.
- Kumho Petrochemicals has invoiced the goods to an exporter who has in turn sold the same in Indian market, the export price is required to be adjusted in respect of expenses incurred by such exporting companies and the profit is required to be reduced. It is however noted direct & indirect

selling expenses, SGA, interest and profits of such exporters have not been reduced from the export price determined. The export price determined is therefore overstated to the extent of the expenses and profits of the exporters. This has reduced dumping margin.

- h. LG Chem Ltd has not disclosed that they have a subsidiary company in India, LG Petrochemical India Pvt. Ltd, which is involved in the marketing of the PUC in India. This concealment of fact by itself renders the response liable to outright rejection.

L.2 Submissions by exporters and other interested parties

- a. NdBr grade should be excluded because it constitutes only 2% of the total production of petitioner. Further, 2% shows that only the testing batch has been produced and not the commercial batch has been produced. NdBR is technically distinct from the Nickel and the Cobalt catalyst grades of PBR. NdBR provides better rolling resistance when used and therefore, is more environment friendly. It allows tyre manufacturers to meet standards, with an outlook towards development of the same. The demand for the product is more than the capacity. The petitioner is able to produce NdBr grade in one of its units. Even if the petitioner product is approved by customers it would be able to produce on high production cost as the Petitioner's productivity suffers when using the swing line in that specific unit. Hence, the gap between domestic demand and indigenous supply would only further widen as a result of this importation of the subject goods to meet the demand.
- b. The Petitioner's production of NdBR is limited to 2% of its production, there can be no reasonable claim that the imports of NdBR from the subject country have caused any material injury to the Petitioner. Inclusion of NdBR within the scope of investigation would unduly burden importers and users, as it is evident that the Petitioner would be unable to supply the market with NdBR in any reasonable manner.
- c. Cumulation of imports from Korea with other subject countries is legally untenable on as the conditions of cumulations are not satisfied in the present investigation. The product is being imported from majorly two companies in Korea and majority of the imports are undumped. Therefore, if the dumping margin is calculated with respect to the average export price of Korea, the dumping margin would be less than 2%. The assessment of injury caused by the imports from Korea RP must be individually assessed.
- d. The allegedly dumped imports account for 41.24% of the total imports while subject goods imported from the undumped sources account for 58.76%. The causal link has been tarnished and broken as it is absolutely inappropriate to attribute injury solely to 40% of imports while completely ignoring any injurious effect of about 60% of the imports. The price from dumped sources are higher than the prices from undumped sources.
- e. The injury should be assessed only after segregating the dumped and undumped imports for all the years and analyze the effect of the dumped imports on the domestic industry's performance. No conclusions in the injury assessment have been given by the Authority.
- f. For the purposes of analyzing injury price underselling is not a relevant criterion. The Authority has assessed the trends of costs of production of the domestic industry in reference to its selling price. However, the Authority's simplistic assessment of price suppression / depression is completely unfounded. No causal link between the losses incurred by the Petitioner and the volume of imports in absolute or relative terms.
- g. The Authority must note that in view of the negative margins of undercutting, the values of the dumped imports from the subject countries also could not have impacted the Petitioner's profitability and related parameters.
- h. With respect market share in demand, the Authority has considered all imports from subject countries rather than just the dumped imports from the subject countries.
- i. The increase in inventories should be in correlation to the increase in sales and production of the Petitioner. The Authority has only provided trend of the actual figures, it is not possible to analyse the same in percentage terms.

- j. The major proportion of the imports are entering India at undumped prices and therefore, any allegation of injury raised by the Petitioner's cannot be simply attributed to the volume of dumped imports.
- k. Raw Material Cost of the Petitioner for the purposes of Annexure 4 of the Disclosure Statement, i.e., Non-Injurious Price, different methods have been noted at different points of the Disclosure Statement.
- l. The Authority has calculated the Dumping Margin with respect to KKPC as USD 25/MT which as per the Authority, amounts to 2.1%. However, inadvertently, the Authority has calculated Dumping Margin as a percentage of ex-factory export price. The global practice and the correct legal position is to calculate Dumping Margin as a percentage of the CIF Export Price. If the dumping margin of USD 25/MT is appropriately calculated, then the same as a percentage of CIF export price amounts to merely **1.8%** and therefore, is less than 2% and is *de minimis*.
- m. The authority has disallowed the deduction on account of credit expense while calculating the normal value and the net export price. The evidence with respect to credit expense have already been submitted to the authority during the on-site verification conducted by the authority on 20th and 21st July 2017 at the premises of KKPC in Korea. The backup documents with respect to credit expense were also submitted during the verification. KKPC has claimed deduction for credit expense @3.23% for domestic sales transactions and @1.43% for export sales transaction based on the documents filed by them. The only possible reason that we could think of for authority's decision of disallowing the credit expense could be that the authority is not convinced with the argument of two separate rates of interest claimed by KKPC [@3.23% for domestic sales and 1.43% for export sales]. If that is the case, the authority should adopt a single rate of interest for both domestic as well as export sale transactions and should calculate the dumping margin accordingly. There is no reason for authority to completely ignore the credit expense which is actually incurred by KKPC as reflected from records kept by KKPC and for which the authority has all the verified information on record.
- n. In the recently concluded, anti-dumping investigation concerning imports of Styrene Butadiene Rubber (SBR) of 1500 series and 1700 series, originating in or exported from European Union, Korea RP and Thailand, the authority has granted credit cost deduction to KKPC. In the past, KKPC has been regularly participating in various anti-dumping investigations conducted by DGAD and in all the investigations KKPC has been allowed deduction for credit cost. The investigations in which KKPC has participated in the past, *inter alia*, includes Styrene Butadiene Rubber, Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR), 6PPD etc. Therefore, there is no reason for authority to disallow a deduction in this case which has always been allowed to KKPC in the previous investigations.
- o. Calculations given to them does not specify the basis of calculating normal value. Off spec should be excluded or adjusted in DM and IM calculations. Export price should be based on SIBUR International. The average conversion rate for POI has been used by DGAD to convert the prices and as a result ex work prices are significantly higher. DGAD needs to rectify the selling expenses adjustments as the COP+ profits have been used to construct the normal value. COP includes COP. Further ex-factory prices have been arrived after deducting selling expenses.
- p. By captively sourcing butadiene, the petitioner is actually self-inflicting injury. The high cost of butadiene are being recorded in petitioner's books of accounts.
- q. Export prices are lower than domestic prices. This shows as evidence that pricing policy of the petitioner is not linked with import from subject countries.
- r. There is demand and supply gap and by imposing the antidumping duty, the consumers will be overburdened. The petitioner will be given over protection in order to address the injury which is because of captive sourcing of Butadiene.
- s. The petitioner can switch from captive sourcing to sourcing from the free market. It would be undue to make PBR customers pay for the burdensome and cost inefficient supply chain of the domestic producer.

- t. The user industry i.e. the rubber industry is already burdened with heavy import and ADD on raw materials such as natural rubber, nitrite rubber, carbon black and rubber chemicals among others. Despite the imposition of duty on all such raw materials, the DI has now approached the DA for granting them additional protection by imposing ADD even on PBR in the present investigation.
- u. The imports of finished rubber goods are allowed into India at NIL duty. All the raw materials that are critical for the user industry have already been granted the protection of the ADD, the imposition of ADD on the PUC in the present investigation especially when the domestic industry is not even in a position to commercially supply the approved PUC to the user industry commensurate to the Indian demand, is likely to land the user industry in a very difficult situation.
- v. Imposition of further duties on rubber products will lead to an incompetent Indian industry, where imports are unduly priced at high levels and the sole producer has complete monopoly.

L.3 Examination by the Authority

94. It is noted that the comments on Disclosure statement filed by the interested parties are primarily reiterations and reproductions of their earlier submissions in the context of Disclosure statement. All relevant submissions are inter alia addressed under the appropriate sections in this final finding which are self-explanatory based on evaluation of the relevant facts and also in view of the relevant rules and jurisprudences to be followed by the Authority. Nevertheless, certain specific comments on the Disclosure statement raised by the parties are addressed as follows;
95. As regards disclosure of various information, documents and figures desired by petitioner, it is noted that all essential facts under consideration, as are being disclosed by authority as a matter of practice, have been disclosed in this case. The petitioner was informed that the confidential information and the actual numbers pertaining to the dumping determination of the concerned exporters is disclosed only to the concerned exporter, in order to keep its confidentiality and this is the practice being followed. However, the non-confidential details have already been disclosed vide the disclosure statement issued on 28th November, 2017. It was also clarified that the procedure related with determination of normal value has also been disclosed and which has been elaborated at appropriate places in the disclosure statement.
96. As regard to the disclosure of non-injurious price (NIP) to the domestic industry, which was provided to petitioner and it is noted that NIP for the Cobalt and Nickle grade of PBR have been worked out plant wise (plant 1,2 & 3) and accordingly weighted average NIP has been determined for the PUC. NIP for NdBR grade has not been considered in view of the fact that production of NdBR grade was about 2059 MT out of total PBR production of 1,11,985 MT during POI which is less than 2%.
97. As regards CNV for non-cooperative exporters, the same has been worked out based on Butadiene import price in the respective country as per International price and weighted average conversion cost of the domestic industry and the reasonable profit during POI.
98. As regards the confidential information sought for other applicant mainly export, it is noted that these information / documents are confidential in nature and such information are not being disclosed by authority to the other interested parties as a matter of practice. However, summarization of such confidential information were disclosed in the disclosure statement.
99. As regards reference to the treatment LG Butadiene price in SBR investigation, the authority notes that every investigation is governed by the facts and circumstances of that particular investigation and the methodology adopted in one particular case may not be appropriate for other case. It would not be appropriate to apply methodology of SBR case to the facts and circumstances of the present case.
100. As regards exports made by exporters and their treatment for determination of dumping margin, the authority has adequately taken care of the fact that significant portion of exports have been made by LG Chem and Kumho Petrochemicals through exporters in Korea or third country. It is noted that export price and dumping margin has been determined based on verified information.
101. With regard to the submissions by KKPC for determination of dumping margin, it is noted that the dumping margin is arrived as a factor of normal value and net export price at an ex-factory level. It is a consistent practice which is in tune with both AD Agreement and Anti-Dumping Rules to determine the dumping margin at the same level of trade and i.e. ex-factory for both normal value and export price and it is a percentage of net export price. In view of the consistent practice being followed, dumping margin has also been determined accordingly in this case.

102. As regards, the concern of KKPC for disallowing credit expense, it is noted that in the disclosure statement as stated that it was not considered due to different bank interest rates were claimed with regard to domestic sales and export sales transactions and they could not provide the justification. However, the authority based on the examination of their request to consider the lower bank interest rate for both the transactions in order to arrive at the credit expense, considered the lower interest rate for determination of credit expense based on the verified documents. Accordingly, dumping margin has been arrived and which is determined as de-minimus. In view of the de-minimus dumping margin, AD investigation against them has been terminated and it was also found the entire imports from Korea is undumped, thereby the investigation has also been terminated against Korea RP.
103. As regard exclusion of NdBr, the authority notes that the petitioner has produced 2059 MT of NdBr and sold during the POI. Further, the scope of PUC is required to be considered having regard to the like article offered by domestic industry. It has not been demonstrated by the interested parties that the domestic industry has not offered like article to the imported product. In this case, the product under consideration is PBR and NdBr is one of the grades of PBR and under section of like article, the authority has appropriately examined this issue.
104. As regard the contention that the disclosure statement does not contain conclusion on injury assessment, it is noted that the scope of disclosure statement is limited to disclosure of essential facts.
105. As regards the contention that price underselling is not a relevant injury criteria, the authority notes that the price underselling is also an important parameter of injury. The list of injury parameters under the law is non-exhaustive. Further, the authority has been repeatedly determining price underselling in various investigations as a parameter of injury.
106. As regards contention about methodology for assessment of price suppression / depression, it is the practice of the authority to compare the trends in cost and prices in order to determine suppressing/depressing effects of prices on the domestic industry. In the present case as well, the authority has considered trends in costs and prices to determine suppressing / depressing effects on the domestic industry.
107. As regards the linkage between losses and volume of imports, the authority has appropriately examined this issue under causal link section.
108. As regards alleged self-implicated injury due to captive sourcing of butadiene, the authority notes that the Butadiene prices has been considered as per the books maintained by the petitioner.
109. As regards the contentions of heavy import duties and its burden on the user industry, the authority notes that the purpose of anti-dumping duty is to provide level playing field to all parties. It is noted that the authority do follow the lesser duty Rule, of lower of either dumping or injury margin, in order to address the injurious effect of imports.
110. As regards the issues concerning impact of ADD on downstream industry, it is noted that even when the association has contended that a number of raw materials are attracting anti-dumping duty, the association has not provided any quantified data to show that the impact of ADD on the PUC is already adversely impacting the user industry. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic industry by the unfair trade practices of dumping, so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

M. Conclusions and Recommendations

111. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority concludes that:
 - I. The product under consideration has been exported to India from Russia, South Africa and Singapore, below its normal value, resulting in dumping.
 - II. The domestic industry has suffered material injury not due to dumping of the product under consideration from the subject countries.
 - III. Causal link between imports from subject countries and injury to the domestic industry is not conclusively established.
 - IV. The Authority in view of the above does not consider it appropriate to recommend levy of an Antidumping Duty on the subject goods from subject countries and hereby terminates the present investigation in accordance with Rule 14(b), (e) and Rule 17 (1) (iii) read with 11(ii) of AD Rules.

N. Further procedure

112. An appeal against the order of the Central Government arising out of this finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Designated Authority

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.